

# પ્રથુદ્ધ જૈન.

સમાજ, ધર્મ અને શાન્દીય સેવા ભળવતું નૂતનયુગનું જૈન સામાજિક.

તચી: રત્નલાલ બીમનલાલ ડેઝાર્ટ.	શ્રી સુધારક લેલ સુવક બંધું સુધારક.	વર્ષ ૨ વાર, અંક ૨૭ મે.
સંપત્તિ: કેશવલાલ મંગળાંદ શાહ	વાર્ષિક લયાનમ રૂ. ૨-૮-૦	શાન્દીય, તાંત્ર ૬-૫-૩૩.

## સુધારો અને કાન્તિ

સુધારકો ઘણ્ય થઇ ગયા પરંતુ 'સુધારા' ના નામને દીપાવનાર તો કેદારકો વીરલાલ થયા છે, અને ગણ્ય ગાંધીય સુધારકો જમાનાના જમાના વીત્યા તોથી 'અંધકાર'નો નાચ કરી શક્યા નથી. હવે તો કાન્તિના મસાલ સંગ્રહનાનીજ જરૂર છે. સુધારક થબાનું હું પસંદ કરતો નથી. સુધારો એ મોદામાં મોડું "હંગમ" છે. મહાલીર સુધારક થઇ ગયા, લુથર સુધારક થઇ ગયા. પરંતુ આજે એના અનુયાયીઓમાં દંબ પ્રવર્તે છે. આ બધું દીવા કેવું બતાવે છે કે આજનો સુધારો એ 'હંગમ' છે. નથીં દંબ છે. જેમે તેથ્યા સુધારા કરો તોથ એ દંબ, એ માનસ કાયમ રહેવાનુંજ. તેથીજ સમાજની ઉનાં રચના કરવાની આવશ્યકતા છે. સાંખ્યત સમાજ બંધારણનો નાચ કરવો ને નૂતન બંધારણ ઘડણું એજ કાન્તિ-કારોના સુધા છે. કાન્તિનો અર્થ 'સુધારો' સુધી થશે નહિં. કેંદ્ર સુધારકો કાન્તિના નામે સુધારાને આપનાવવાનું સુધારક પરોની કટારોમાં લાભે છે. તેમના વિચાર ને રહેણીકરણી કશેણ. તોજ એમને પૂરેપૂરા પીણાણી શકેણો. એ આદર્શો અમલમાં મુક્તયાનો અસંગ પ્રાપ્ત થતાં જણે ઉલ્લો પુછીએ ભાગતા ન હોય! એ આદર્શો સુધારાપથીઓ-એવા સુધારકો કાન્તિના નામે જનતાને ફરજ એ બધું હવે બહુવાર ચલાવી નહિં કેવું જોઈએ.

"સુધારો તો ચાલુ વ્યવસ્થામાં છુટછાટ સુકવાની ચાટો કરે છે, કાન્તિ એ ઉદામ કાર્યક્રમ છે, જ્યારે સુધારો એ માયાવી છે; કાન્તિના આલ્ફુંએ આલ્ફુંએ સમાજહિત સમાજું છે, જ્યારે સુધારાની રોજ રોજ વ્યક્તિગત સ્વાર્થ ભરેં છે." એ એનો જેણ કદિયે નહિંજ મળવાનો. કાન્તિના આનંદોદાન પચતાં સુધારાઙ્પી પ્રતારણી નાશુદ્ધ થશે.

સમાજ બંધકારમાંથી બહાર આવે અને તેમાં 'પ્રકાર' પડે એવું દરેક હૃદય દીઢ્યે. સુધારકો અને દિશતિયૂસ્ટો Die-beards હું જુનવાણી માનસ તો હવે જરૂરુંજ જોઈએ.

બંધારામાં હતો ત્યાં કણી હું પણ માનતો કે 'કાન્તિ એટલે સુધારો.' સુધારાના આનંદોદાનને વિશ્વવિશ્વતું નામ આપનારાઓમાંનો હું એક હતો. પરંતુ આજે મારી એ અમણ્ણ હુર થઇ છે.

पुरिसा ! सच्चमेव समिजाणाहि ।  
सच्चवस्स आणाए हे उबडिए मेहावी मार तरह ॥  
(आचारंग सूत.)

## प्रभुक जैन.

सनीवार, ता० ६-५-३३.

### आपाही परिषदो.

आराये आयोद्धीमा कमळू कमळू परिषदो, समेकनो; अधिवेशनो वेदेनो मेठा दीड प्रभावामां आपाही जनी रसो छे. दीड गतिजो, पैदा गतिजो अनी आन्तो पोतपोतातु संग्रहन साधवा प्रयत्नो. की रक्खा छे. आपाही पक्ष अनेक परिषदो थार गार, लेडू-प्रेत्याक समेकन, सदा लैन डोन-रन्स, स्था. साहु समेकन, नवदुषक परिषद, शिक्षण परिषद गहिला परिषद, आ. अवी परिषेतु अवलोकन इत्यां गोठु तो जरुर जागूच छे के तेतो डेवा संग्रहन सामी उजतिना राह तरु आणाय वसवानो होय छे. परंतु अलार मुखीनो अे भागतने. अमारी अमास साक सुधावे छे के जे अपेक्षा आया. समेकनो वेजाव छे ते धेणेने समेकनी पूर्णहिति पक्षी अभ्याधीन यदाना हेवामा आवे छे. आर्योद डोड पक्ष जातु जे धेणेने अतुसरीने कांड करवामां आवतु नथी. तेमां हरावानी लारगाणो. गुरुदेवे तेवा गंगानाम रेवा हेवा उपरोक्त नवाये आपाही बहुत आपाता नथी. आ. भीना आपाही आटे भोडू डरनारी छे, लेट्युच नहि परंतु समाज, धर्म अने आपाही. पैदानो पक्ष नाश तेवानारी छे. तेमा अवाये शक नथी. अधी अने ओम झेवा नथी भागता के आशी समेकनो निरर्थक छे. परंतु जे समेकनेनो अर्थ हरावानी लारगाणा घटी पास करवामां न समाजतो गेठु कार्य आपाही की शक्ती, आपारी शक्ती तेवा. प्रकारना कार्य अमुक द्याव घटी भार्या नक्की करवामां आवे अने तहुतार रस्यानामेड कार्यक्रम अमलामां आवे तेवा अर्थ समजेवा नेतृत्वे. तेवा आपाही हितिना राह उपर आगण वधी शकीय.

प्रेत्याक समेकन-के रसानामां आ समेकन करनामां आवतु छतु तेवी आसास पैदावानो हालाये वर छे. भेद अहुर आगान अने कुप्रथायोगामा हालाये छे. कृपापितृ अने निरर्थक कुप्रथायोगामा पैदावतु शक्ति वलीत करे छे. आवा लोडाने कैड व्यवहारिक शिक्षण भगी, तेतु. अतुरुपत्व अधीवे ते भाटे समेकने कैड रस्यानामेड कार्यक्रम अमलामां शावानानी असतपता की. प्रमुख अधिकृत द्याव वारवां ओहे पक्ष पैदावाना वक्तव्यामां आ आगतने सीकारी छे. समेकने तेवा प्रकारना द्यावे पक्ष वारवा छे. परंतु जेवा अनेक रस्या आप छे तेवा द्यावे भाज भागामां रहे, अने नव दिन-सना शंखु नेणानो आनंद लध बेडा पैदावानारे धेद वेसे छे. आवतु न अने ते भाटे तेवा उत्तावी प्रमुख शक्ति शक्ती वार-

चं होइ अने भीना कार्यक्रमाने विनामी छीजे. परिषदमां जे हरावे थावे छे, जे हरावानी पाणी जगतानु पीड भगु उम्हु करी ले अमलामां भुज्यागां आवे तो आ. परिषदमां संज्ञानां लाये शक्ताने रस्यान न रहे. भाज हरावे पास करेवामां समेकनी संज्ञानां मनाती देप तो पक्षी तेवा कांडु कहेवातु रहेतु नथी. तेवी आवे थेवा गहिला परिषद पक्ष कैड अद्य उपरोगी नीवही की. प्रेत्याक गहिलायोगां प्रयार कार्य भाटे गहिला समाजना प्रमुख आ. तो. इन्हींपु बहेने जेड ले जेहोगो. साथ साथी जते रस्याने इन्हानी जहू-छे.

साहु समेकन-आ ओहे रसा. डोम भाटे अन्य वरी हती, के साराये आरेतां विचरता तेवाना देवे साहुओहु समेकन अजमेशमा भल्हु कहु. आवा समेकनो अद्य भेदभनीय छे. कार्यक्रम समाजानी उत्तिअनी अने अजनतिनी आवी आव बोहा खासे छे. तेजा चोते ल्यां शक्ते देपाय तेवे हर अदी संगठित अनी अप अने समाजेजति भाटे कैड अदु ग्रेवन करे तो समाजानी उत्तिअनी अनी अप छे. आव परिषदितिनो विचार इरिनेज आ समेकन वेजायु छतु. जे के आ समेकने कैड नक्कर कार्य कांडु के के नहिं, तेवी बांग्यामां न उत्तरां भाज जेट्यो आब लो. अद्य देपाय छे के जाहुनो ले जेड भीना संज्ञानामां आपता न होता, जेड संप्रदायना साहु भीना संप्रदाय जेड होइ पक्ष जातनो सहकार आपता न होता ते वस्तु आवा समेकनी अवश्य थवा आवी छे. आपा पक्ष घेऊज डेवा थवा उपरात भाग्यामारीना संज्ञेवा पक्ष उपरित थवा होता. अदां कार्यक्रमां जेवी अे प्रसाग निविनी पसार थवो होते. भीना प्राताना साहुओ. करता युक्तात अने भंजाना साहुओ. पूज उद्यार जागूच छे. विश्वेम आहर्वच भाटे आवी उद्यारता अहरी छे. आव एक रीते आपाहु आ परिषदी आहंगता स्थानावाच नेतृत्वे. आ समेकन हर अग्रीभार वरसे भागवातु होइ आ वापतनी नेक्कमां नहिं ते आपती नेक्कमां समाजानी उत्तिभानी भाटे अद्य विचार करो; अे आवा राखली अस्थाने तो नथी. आपाहु साहुओ आवतु अतुरुपत्व करे तो जे लाल रसा. डोमने जावो छे, तेवा हस्ती आपकुने अनेक जेवा. सारै लाल भारा राखी; कारवु के आपाहु साहुओ. सुधिक्षित छे, उद्यार छे, जे के द्यावाह, गमत्व अने शिविता अद्य छे, परंतु तेवु निवारण आवाय नथी.

स्था. डोन्हरन्स-अनेक लवाड अने कंदाणामेने अगो आ डोन्हरन्सतु नवमु अधिवेशन अराहु नेहु, ते आ साहु समेकनो आब लां गंधु. तेवी एक नहुज द्यावाना संहित थध, परंतु बाहुराती केट्यो ते विचार द्यावपां नव्याप हती, तेवीना अस्थाये जेवी की. डोन्हरन्से कैड अपाहवानी लाल थाय तेवु हुन् सुधी जेड पक्षहु बाहु नथी. आवे वेपार, धोंवा अने उघोजानी पावभाली थध रसी छे. शेवीनो प्रक गहिला अन्यो छे, तेवी परिषदितिमां डोन्हरन्से कैड अंहु पक्षहु अराहु नेहुतु हुन् के जेक्तीनो. कैड निवेष्य आवे अने लेडीनो राहत भगी, जे रसा. डोन्हरन्स अने तेवा वरपीला प्रमुख आरे तो आ आपत मुद्देवानी नथी. ते शिवाय वारसंघानी वेजाना अहज संदर छे. आ वेजानानो अमल नेहुले जही आप तेवो समाजने खुल द्यावाहारक

ले, आवा वीसंखना नेतृत्वमां नवरत्न शीमान दुर्लिखउ लेवेरी गेवा सेवानी क्षेत्री पहेरी समाजेभतिना शार्मां आत्मसमर्पण करनानी पहेल करे, ये रथा, ड्राम्हर् सद्वाचाय हे, अगे उच्छिये थीये के आवा सेवाओं सेवानों नेतृत्वमें संघ शीघ्र लक्षितवर्त्तमा आवे, ते विद्याम शिक्षण अंस्थाओं घो नास्तिक माटे पहुँ छिक्कि विद्यार करनामां आगो छे, अपेक्ष दीक्षानों प्रक्ष के आपल्यामां पुण वर्णां रहेहो छे, तेना भजनधामां प्रभुभाईजों एक लुटेज भार्ग जतायो छे, वाजता विज्ञानामें आ जागत विद्याद्वा लेवी हे, अपेक्ष जे जास्तिने आर्क्ष याम के डॉन्हरन्स लेवी संस्कारोंने स पूर्व अनुबन्ध द्वावा छां पहुँ दीक्षानी हारगायानो नोक फिरानो नहीं, अगे डेक्काङ लेवा द्वावो करनामां आवे हे डॉनी साथे जनताने जनतामें निरन्तर होती नहीं, अगे अगे वापत जाल्यामी जगा छिये के संभाषण छावोंनो नोक नहीं जनतां केट्या आपेक्ष आवायश्यामां लावी शक्तामें, जनताने डेवा पीड्याण उल्लूँ छी रक्षनामक कार्यक्रम अभियामां भुक्ती शक्तीने तेवा इत्यावज जगा लेहेहो भावी ते एक घेज हाँ न होय। भावी अपेक्षा आधिक्यो आवी संस्थाओंमां पहेलां याह छी ले विज्ञानीना द्वावो भुक्तवो शिक्षतो पही लेवो छे, ते अव्यवहाराद के, भंगामरस्यमां दिव्यार्थी लेख तो भावी आगण भीजुँ शूँ कार्य वाचार्य रहुँ हुँ ? अगे आवा आपाई छिये के अभावी आ भूम्याना उपर डेन्हरन्सना अधिक्षियामें आवा आपेक्ष, आगे डेन्हरन्सनुँ नवमुँ अधिवेशन अनेक विद्योनों सामनो छी जावारे तो पार उल्लूँ हे, अगे उच्छिये छिये के डेन्हरन्स द्वावा कडक रक्षनामक कार्यक्रम अभियामां आवे अगे संग्राम अगे धर्मनी उन्नति आपु-

शिक्षण पर्वीधु—मुनिशी उन्नतिवर्त्तना प्रभुभाषण निये आ विद्याय विद्येह शिक्षणों प्रेम भुज्ज आरी रीते उपेहो छे, आपाया समाजमां अगोक सामाजिक संस्कारों छे, आगो उपेक्षा आपेक्ष ते संस्कारोंनी पाल्य व्यष्ट करीजे छीजे जां तेहमया आपेक्ष लेहेहो तेवुँ विद्याम लावी जगता, नहीं, आपाई संस्कारों लेक्क विद्याय तेपार यहाने निक्को डॉ तरतान लेने पोतानी विद्यानामो आवाय आवो छे, लेने अपेक्षानो आहुँ द्वावो छे, लांगुल्याई लेक्क विद्याय द्वे छुधी तो ते आवायाही रही छे, परंतु ज्ञारे तेपार आवे हे त्यो तेवा विद्याय भेत्ता अनेक लेवो छे, अपेक्ष विद्याय लेवो छे, अगे डेन्हरन्स द्वावा कडक रक्षनामक कार्यक्रम अभियामां आवे अगे संग्राम अगे धर्मनी उन्नति आपु-

निये आ विद्याय विद्येह शिक्षणों प्रेम भुज्ज आरी रीते उपेहो छे, आपाया समाजमां अगोक सामाजिक संस्कारों छे, आगो उपेक्षा आपेक्ष ते संस्कारोंनी पाल्य व्यष्ट करीजे छीजे जां तेहमया आपेक्ष लेहेहो तेवुँ विद्याम लावी जगता, नहीं, आपाई संस्कारों लेक्क विद्याय तेपार यहाने निक्को डॉ तरतान लेने पोतानी विद्यानामो आवाय आवो छे, लेने अपेक्षानो आहुँ द्वावो छे, लेने लांगुल्याई लेक्क विद्याय द्वे छुधी तो ते आवायाही रही छे, परंतु ज्ञारे तेपार आवे हे त्यो तेवा विद्याय भेत्ता अनेक लेवो छे, अपेक्ष विद्याय लेवो छे, अगे डेन्हरन्स द्वावा कडक रक्षनामक कार्यक्रम अभियामां आवे अगे संग्राम अगे धर्मनी उन्नति आपु-

नवमुख विद्यु-स्था ड्राम्हरा आं परिषद् प्राथमिक हे, तेवा प्रभुभ आमु अव्यवसित्त अने रक्षान प्रभुभ शिक्षण सुगमर्द्दण लुक्ष्यात समाजेती अने उत्साही सहज-हरेहो छे, शीमान गमनगमण डेक्केवा, अने शिक्षुप, आवायाम एम, भेत्ता तेवा भावीजो छे, आ लेहिङ धारे तो रथा, नवमुखाहुँ संग्रहन साथी व्यष्ट करी लड तेम के, लेड अनो विद्या ते डेन्हरन्समां एक लुक्ष वार्टी उल्लूँ रक्षानो छे, समय अव्यतना वालापरल्यामां आगे युवक शक्तित भार्ग छी रही छे, गर्व-कारण्यामां डॉ अधिक्षियाना उत्ताप्यामो खुवडेज तणीया धसी रहां छे, गानव जात तुनेहो उपर पोताना द्वाराई विद्यायो नवी रही छे, नवेतन प्रेयस्य अने उत्साहना गढासारमां कुरेह उपरव समाज धर्म अने राष्ट्रीय उन्नतिनो अधिकर हे, अगे तेथीन नवमुखोने होइ प्रकारनी स्वतंत्र हेत्तिना लालीम आपायामां आवे हे, रथा, ड्राम अने तेवा आगेनामो अव्यरु लुक्तेहो अनेक समाज सेवानी तालीम आवे तो व्यष्ट कर्त शड तेम के, तेमनाथी व्यष्ट कार्य शक्ती शक्ताम छे, रथा, ड्राम्हरा प्रयु उत्साही नवमुखो छे, तेमो विद्यायेली दाल-तमां छे, तेमने एक छी रही रथा, ड्राम नहि, परंतु समस्त जनतानी सेवा इत्यानो विद्याय हेत्त विद्याय लेहेहो, अगे तद्युम्यां भार्ग दर्शनु लेहेहो, अगे आवा छे लुक्ष पोतानी इत्यान अमरवती,

महिला परिषद्-ल्यांसुधी आपेक्ष अीसकितने, नहीं डेवानीज, तेवुँ संगर्हन साथिया अने आलना राष्ट्रमुखना अद्वैती-जेनोना भ्रष्टामां नहीं ऐभीजे त्वां सुधी आपायी जिनति असाकम के, आ वापत समाजना लक्ष्यमां भावी लेहिङ प्रयु आवी के, ज्यां ज्यां ज्यां कड़ी समेवनो डॉ विद्येह भेत्ता के, त्वां त्वां भदिला परिषद्ने प्रयु गौल्य रीते-रथान आपाय हे, परंतु एक्षी भदिलायोमां ज्याति आवे तेवा कर्तां ले तेमनी स्वतंत्र लेहेक अक्षय रीतेज भेत्ता अगे तेमां होइ धर्म अीसकित रहे तो भदिला परिषद्ना उत्तरण आवी भेत्ता व्यष्ट कर्त त्यो न रहे, आम आ परिषद्नु अवलोकन अगे रेखुँ छुँ छे, अभी तो आ विद्येह डेवी उपयोगी हे, लेनो ज्वान तो जनतान आपायी।

### केसरीयाजीके संबंधमें

शिरोही स्टेट के जैनसंघ की प्रतिनिधि समा आचार्य बल्लमसूरि के नेतृत्व में हुई थी। उस समय पर महाराजने जैन तीर्थी की स्वयंवरथा करने का उपदेश दिया था और निष्ठोक लार महाराणा उद्युपुर और अमलद्वारो पर मेजा गया था।

“श्री केसरीयाजी रिखभद्रेकजी के मंदीर की व्यजारी-पण की जिया जैनोके रथापित हक्के विरुद्ध करने का समाचार रुन कर हमें बहुल दुःख होता है, अगर वह सज्जा हो तो हम सब उस के सामने हमारा प्रबल विरोध प्रदर्शित करते हैं, और नमनापूर्वक अर्ज करते हैं कि समस्त जैन जनता की धार्मिक लागणी की कठर कठर व्यजारोपण की क्रिया करने का जैनो का हक्क कायम रहना चाहिए।”

—शिरोही स्टेट जैनसंघ,

ନେତ୍ର

અહેની જડાવ વિષે વધુ.

તાં ૨૨-૪-૧૩ ના બેંકમાં બોલ વડાવની કથની જપાયા પરી અમારી મેળેકુંગ કેમેરીઓ જે બાદને જયાની દેનાના કેલેજ હારાં અનુસાર અમારી તરફથી એ કાઢણો કરીથી આખુરોડ ચાંપ હતા. ત્યાં સતત પરિષ્કરને અંગે તેને જામાનવાળી જાણી, અને આ કાર્યમાં જાણે શરીર ફેલ પણ મળી લતી. હતી પણ હેઠળી બધીને આપણા સમાજના (કૈન ભાઈઓની) લેણો મુખ્યમને કરીને સુધી સંપરી છે પણ પ્રફુલ્લના નિર્ધારી ન હે, તેવાંએણે જોડી 'હો' 'હા' કરી બાદને હવે મર્યાદ હોરી. અને મેળી જલસાની મુક્કી હે હેઠળી બધીને એ બાળના કર્મમાં મલ્લરી અને નિયાયાજ લાગ્યેલી હોણાથી તેને સત્ત માર્ગ ન સહજે અને વેન જાણી.

આ બાળતરોં હજુ પ્રમલો વાહુ હેઠાથી કાલ વિનિતપાર  
કર્તિદાસ ભાડાર પાડવો અગેને બાળમી લાગતો નથી,  
અગેને કરેલા પ્રયાસો, અમેને ફૂલેં અણે મળેલી ફોલ  
અને ચિંસતોખોએ કરેલા ચિંતા એ સંબળું આજાનું ઉપર  
ભાડાર પાડીનું, કાલ એ જાંસના દિત આત્મ પણ રહ્યું વિગતો  
ભાડાર પાડવા અગેને યોગ્ય લાગતી નથી.

‘જૈન જ્યોતિ’ની અમણા—

બહેન કરાવણી કરુનાને અગ્રે આમારો અનરેપનીએ ને  
વિભાગ મેળવી તાં ૨૨-૪-૧૩ ના વર્ષફર્મ બાહ્યર પડી છે,  
તેનો સાર કાદળાંથી “કૈન અનેતિ” “પાંચમોની પાચકલાં”ના  
હેડીશ્વારી પોતાના ગાસીક્રિયા અખે છે, અને તે આપણાં તેમાંથી  
અસુધુ બુઝાણો લાસ્કી તે પણે પોતાના નિયમારો નહોંર કરે  
છે, અને છેરટાન બેંક એ ચેરીઆફાં પ્રષ્ટું કૈનને અગ્રે  
પોતાને બોંઘ લાગતું અંતિમ રૂપ કરે છે.

આપ સંભૂતમાં અમેનો જવાબનું હિંગરીની કાપ છે તુ  
આપણાં 'કોણિતાડ' અમારા સાથે પ્રય વળદાર કર્ણ પણી  
જ્યાન તો અમારા તસ્ખીય સાચા સમાજમાં મેળગલ્યા પછી  
કિંદ કરી હેત તો તે જ્યાંની જ્યાંના અને અમેનો લાગે છે કે  
એટાં હિંગરીનું ઉત્તરી અમેનો એ જાગત દાખલાં બીધી છે,  
તેટાજા હિંગરીનું 'કોણિતાડ' ઉત્તરી હેત તો જરૂર તેમને  
દીન કરશોનો પ્રયત્ન નજ જાગત. જેર! કૃતે આ રૂપે અમો  
નેની ડેલીક અમલાનેના જવાબો અને ખુલાસાનો આપવા  
ઓથ ધારીને કીને કે કેરી સંય વરસ્તુ તેમો તેમજ જનતા  
સારી રીતે જાણી શકે.

પ્રથમ તો એ બાહ્યાં જાળા કુતાંત ઉપરથી જ મુદ્દાઓ સાર ઇથે લાદા છે, તેમાંના ડેટલાક મુદ્દાઓ. અમારી માન્યતા સુધીએ કેશક વિતાવેણ અને વગર વિવાપેણ તારણાં છે, પહેલા મુદ્દામાં તેમો જાણુંને છે. કે 'પામર આભાજો અથે તે રિખિતમાં પણ પામરલાગ જતાને છે' આ વાત કીર્તિ છે, પરતુ એવા આભાજોને પણ ને પોત્ય સંબંધે સુવિષ્ટ વાતાવરણું જાણી પોત્ય ઉપરેં હારા તેના વિચારેણું પરિ-  
વર્તન કરેલામાં આચે તે જરૂર તેને પોતાની પામરલાગું જાન જાણ છે, અને પણતાપ છે કે, બીજા અને ચીન મુદ્દા સાથે અને, પહેલી જાણે સંમત છીએ, ચેષ્ટા મુદ્દામાં લોતિકાર જાણુંને છે કે 'ડેટ જોકલિવિલારી પાપાતમા ને અહી રીતે નૈન સાંકુજ નથી, તેની ઘટનાને સમસ્ત સાંકુ સંશોધને નામે પણાવી એ સલ્ફનો હોલ કરના અયાજણ છે.' આ મુદ્દાઓ એ

આઈ સાહુ સરકારનો બાબતન કરે છે, એ હીં છે, પરંતુ આમારો જાણાય કાદાપિ એવો હોયજ નથિ. આપીએ કાદા-  
નીટું મળ સાહુ સાખી હોયાથીજ અગારે તેઓને ઉદ્ઘાને  
લખતું પડતું છે. સગસ સાહુ સામાજને વૈપિત દિવાનચાની  
એ કશનીમાં જાપા લખું નથી, અંતાં સાથે સાથે એટલું, પણ  
કાદાએ છોણે કે જો આધુનિક ક્રોનિકાર વિશ્વબાદીનાં  
લખું જાણવા કરતાં આવા વિષયોમાં લખતે હિંમા ડિતાં  
હોત, અને કેટલો રેખાચાર જાણે છે, તેની જરૂર સાહુ જગતાં  
ફરી તપાસ લીધી હોત તો તેમને પણ આમારું કશને  
પુછ્યા આપીએ પડત. દેવ ક્રોનિકાર પાંચમા સુદ્ધારી એક  
બીજી લાઈની તપાસને એવી જાહેરો પણ કાઢી ચીની છે,  
આ સ્થળે આપીએ કાણની ઉપરથી જલ્દાન તો છે કે આઈ  
કાદા કાણની અને બેણાં છે. અંતાં પણ એ બીજી લાઈને  
તપાસ કરી છે તેણે સું તપાસ કરી છે? એવી રીતે તપાસ કરી  
છે? જાણવા તો એ સાહુનું વિશેષ અધ્યપત્રન તેણે ક્રાંતિકૃતી  
એ સખતું જીવાસાચાર નાદાર પાઠનાની ક્રોનિકારની  
દરજ છે, કાન્ય તે રખાઈ જીવાસાંને વિના હાલાંહતું જગતા  
મોભાગ ક્રમાન્દેશ્વરાં બીજીકુલ અધ્યા લખતું નથી. હવ્ય સુદ્ધારીએ  
એ લાઈન જાળવે છે કે, જેને જાણવાનો પ્રચલન સંઝીન રૂપમાં  
થયો. હોય એવી જાળતું નથી. મૈનિક આદિજ જાણાં કર્માં  
માર્ગ સાથનનું ન નીકે, તેને માર્ગ સંગમનો બેચેને કર્યી છે,  
કાલજાહિ, આ સુંધરીમાં જામારે જાળતું લેખું હેઠળ એ જાણવાનો  
પ્રચલન થયો છે કે નની? કેટલા ફોન થયો. હેરી મૈનિક  
આંગણ થયો છે કે રચનાત્મક પ્રયાસો થયા છે એ સધળાં  
પ્રિત માત્ર એક અનુગ્રહ હિંદુથી જીતારી કાઢા. કરતાં  
અમારા સાથે પત્ર બનવાદાર મૌન હોત તો તેને પણું જાલા-  
લાલાંહતું મખ્ય હોત. સાતમાં સુદ્ધારીએ કે લાઈન આગેચાનો  
પાસેથી જાણવાની આશા રાણે છે, જેથી અમેને કશતું આપે  
છે. અમારો નાતિ અનુકાન કરે છે કે એ એવી નેડેટા નીન આગે-  
ચાનો ધર્મના બંધાનો નીચે કરે છે કે એવીને માત્ર વલલતી  
દીપ તો કાલે આજ વઠાયે અગારું થર્મિંગ જોવાજોની જરૂર  
નથી! આવી પાછાર ગોદાનાના આગેચાનો પાસેથી  
કાઠાંધી પણકાર શેની આશા રાણે છે તે સમજ રાખતું નથી.

દેવ છેટના પેરીઆંગમાં ‘પ્રભુદ લૈન’ ના પ્રતિનિધિ  
ઉપર આધેપું કરે છે કે ‘તેણે સમયનો બોગ આપેની નથી.’  
આ વાક્ય લાખતી પોદીનાં એ મળે જાણ પૈસાના પોસ્ટકાર્ડથી  
લખું હકીત મંગાવી હોત તો જરૂર આ વાક્ય તેને લાખતી  
ન પડત. એક અનુગ્રહિક વસુને નિશ્ચયાત્મક જનાની હેવી  
એ એક લાંદેર પુસ્તકને લારાયજુ રોકાનું નથી.

આ ભાગનાં અમારા પ્રતિનિધિ કેટલા ઉંમલુમાં  
લંબાં છે, અને એટલી નકર હકીતો મેળાની છે તેણી  
નાયાં બીજાને મેળાની હોતે. અમારું પ્રયત્નો કલ્પ આખુલ છે.  
ઓપર આપેની હૂંડી નોંધ ઉપરથી નાયાંનાર લેધ શકે.

આ વિષયમાં ત્યાર પછી ધાર્યા જનાનો અની જપા છે,  
રંતુ એ જનાનો અભારી તપાસ જાહું છે તે તેથી દાખ  
પિસ્તર, અમો જહાર પાઠી રાક્તા નથી. વસત આપેની  
બણી ધર્તાની જહાર પારીનું. હેલ્પમાં આધુનિક લોયાતને  
અધ્યાત્માનું કે આવી સામાજિક આપોત્માં નંબી અનુગ્રહાન  
દરવા કરતાં પૂર્તી તપાસને પરિજ્ઞાને બેણો જહાર પડે તે  
વારે મફળાની છે.

## समाज सुविधारोनी रग्शीया प्रवृत्तिथी थतुं तुकशान.

लेखकः—लोगोवाल पेथापुरी.

**आजथी** लगभग पचास वर्ष पूर्वी आपश्ची डेमनी दिव्यति सेमाज आजनी दिव्यतिनो गाव विचार करता वह हृष्णने मनुष्य पक्ष आंसु सापी दिव्याप नहि रहे, प्रधमना एक वीजना शुद्ध लक्ष्य, एक वीजन गयेनी अग्रिहित अने परदित करवानी प्रश्ना आजना भनुपेना हृष्णना अहोनिय रटन करती रहेती, आ वर्तुनो ल्यारे ते समये सुखण रहो त्यारे घडगां लक्ष्मीनी देवतगणीह हही, लक्ष्मीनां ग्रनिष्ठ हही, क्षेत्रफल उक्त द्वार्ह करी भावन शक्षण करवानी गढत्याक्षण रहेती रही।

आजे पक्ष जोना गे भनुपेनो के, भाव विचार वर्तनमा तक्षावत खड़ो के, अभ्य इहिने जहारे देव शुद्धिके विकल्प भेजन्नो के; पारकानु दित करवाना विचारो धूर जेमारा उक्तावत के; शान्तिना सामाजिक्यने जहारे दुसरपुर्व भद्रायात्त प्रवर्तन्नु हेवाय के; अने न्यायने बहो आन्याये बह आल्यु के, आयी लक्ष्मी हैनोना धार्य समक्त प्रश्न उपर जारे उत्तरी पड़ोने न होय तेम समाज आजे भुग आर्थिक योक्तव्यमुगां आवी येहो के अने जेने लहो धर्य कर्ह दिये विचार सउपेना करवानु गे जेने सञ्चतुं नथी।

आयी दिव्यतिभावी हैनोने ज्यावती तो आजुने गही परंतु उक्ता नक्कास—अर्ह विनाना रग्डा वकारी डेमारा हृष्णना जेरी वीज रोपी रहोने वहु नाशने, हृष्ण समाज भान्यावारीयो तेमरा उत्तेमावारी भवता भागनारे नेतरी रक्ता के, न्याय नीतितु अर्ह चौंक लीकम द्वारी, समाजमा देवाणी पेटानी हैर क्लेने जेपा करवानी पही गेवी देव हृष्ण हर धर्य नथी, नक्की आजतोने भेदु रवव्य आपी तेही आजगा दीभती आमनी जरणादी तेमरा धर्यना नामे एडो हैरेहे धन संवय पाल्याना रही धर्यता पक्ष उक्ता नथी, आजे अन्यायने वाणीयो समाजनो तित तित करवानी नीति अन्यतार करवानी आपी के, एओ चेतानु धरेहुं कर्ह पर भाक्ता गाप्यायार्थी जब पक्ष उक्ता नथी, तेमरामा—न्यायने रक्तान नथी, नीतिने रक्तान नथी, सायेल तेजो सत्यने जाजुनो भयो येतानी फेल नीति याजु येहो के अने समाजने अया दिव्यतिभावी उक्त दिव्यतिमां लेवानी रहेह पक्ष परवा करता नथी एवें एक दिव्यतिरीभव्युं के,

गत लोहोन्नाली भंवारी आशु सारे रु वणनारु के? वेता अंग उमारी तपासो तो एवें ज्ञाती हैरेह पक्ष समाज भारे अने अवदार भनलां जेपानी लक्ष्मीनात के, अमाजने उपयोगी-जार्थिक, धार्थिक अनो सामाजिक दिव्यतिति उक्त अने तेहु चातावरण देव करवानी जहर के, अने आपाना समाजने एन नवसर्वात चातावरणां ज्ञात प्रोत द्वारी, आहर्व विचारो रहुं करी हैर व्यक्तिना हृष्णना—रक्तान भेषपवानी जहर के,

अत्यारे समाज गहुर छेही दिव्यतिमां जह पक्षो के, नथी न्याय के नीतितु नाम नीतान के नथी शह के इरीचाह हैर चालगनार, सौ पेत येताना भनरनी प्रमाणे ग्यारीचा प्रवृत्ति यक्षाये न्याय के, परंतु ते आजनो भुवक समाज भवावी

हेवा तैवार नथी गे भुवी ज्ञानारु नथी, ज्ञानाने भनुपेनी दिव्यतिनी देवपक्षी फरवाल खड़े, ल्यारे ल्यारे समाज नवसर्वात जने हे त्यारे दिव्यतिना परिचर्तन साथे समाजनी आवी आवती प्रयावीलामां देवपक्षी न हो तो ते नाशने नेतरे हे, अन्यायपत्रमां भत्तेद अने तेक्ता होय पक्ष ते जेवा न होया लोध्यो हे जेवी समस्त डेम तेगां अणो आप यहु ल्यारे अत्यारे आत्मुपाल्यु ज्ञान न आपता तमारी नीति आत्मु राजसी तो याद राजने हे जने हिक्से तमारे हृष्णात ए, अक्षेत्र झुट्टो यहो अने न्याय प्रवाहमां जाला न्याय नीतिने वाणी शुभान्नलिना आर्हामां सहज्य साथ आपी अत्यारे भुवी यक्षानेही तमारी प्रोपक्षायी गारे परतारुं खड़े,

आजे समाजमा अण्या शहियानी लेहुक्मीना परिक्षुपे समस्त प्रज्ञने तेना अंटा उही रक्ता के, परंतु आ देह क्षमांसुधी आपश्चे रक्ताया प्रवृत्तिने हुर करी नथी त्यासुधीज आपश्ची शान्तिनो येवतावत लह अमुक व्यक्तिनो छडेहो अन्यायतु सामाजिक प्रार्थिती जोण प्रज्ञने अधिगतिनी हेही अपायगं धडेही रक्ता के, तेथी प्रज्ञने आपश्चे यक्षायी आजत करी तेही येतानी शहियुं तेने आन रक्तायुं जे आपश्ची देवत के,

भागने राक्त आपा रिवाय येमनी भुताना अमरपदा भावम यावता भांता होय तो ज्ञाती तेजो भुतने आप के, साथी रहो तो तो जे हे जेवा येवाय नाशनीतिने नेतरनारे भनुपेनी प्रेषुरी तपास करी समाजमाथी तेमरु रक्तान भवत्य ग्रामी रहेही समाजने उन्नत पक्षतुं द्वर्हन करवतुं, ए देह कुरुक्षी ओक अनिवार्य देवत के,

हे आ देह आवत लक्ष्मां लह आपश्चे जे विचार पर अवारों के हे जेवे जमानो गे नथी रहो हे “राष्ट्राण्णाम आवी यासी होहे” अत्यारे ज्ञानो गे नथी रहो हे रक्ताया प्रवृत्ति हो हे क्लेने यक्षायी येवाय, आजे तो ज्ञानो गे भागे हे, जेमा न्याय अने नीतितु द्वर्हन देव, लक्ष्यनी सुख आवता होय अने तेने ग्रहण रक्ता समाजनी आधिक तेमरा धारिक्ति दिव्यति उक्त अनी जती होग,

आवा हे के, आ प्रक समाजनी हैर व्यक्ति लहो अने अवतारे भगवां लह समाजमाथी असाति हो हे करी साथी शान्ति भाव होहे,

लम केवा चुक्को नहीं.

**पंडित हीरालाल हंसराज वरकरी प्रसिद्ध यथेलां  
तपाम ग्रंथो दिवाली सुधी  
अर्धी किंमते मळशे.**

ता. क. आचारांग सूत छपाय हे तेही अर्धी किंमत समजवी नहिं.  
ल्योः—पंडित हीरालाल हंसराज.

जामनगर.

બ્રહ્મ-મદ.

લેખક: શાહિરા'ની જથું હોય વેઠા.

પાથાત્પ સર્વકુટીના, પાથાત્પ કાસણના અને પાથાત્પ રિયાનોના 'એ' અનુકૂલભૂતી અલારે સમજની અંહર રેસાનો નથો અડોય હોય એમ જોતાં છે. આ નશામાં મળ આમતો કે જમીનાદરો જ નથી સમજા પણ વિદ્યાનો અને મુનિવરો ફલુ હસાણ છે, ગરીબો અને તવાંથો સૌ ઇસાણ છે. અથવાને પેસો એ વાંશુલી વિદ્યાનો પાક છે, અન્યાન્યપાણીંત દ્રવ્ય-વાંશીક સાખેનો કે જે જાનવાળીની કાગ ક્રી રહેલ છે, તેનો જીતાં જે આજનું નાલું છે એને કહીજે તો જોંચા જરાયે ખોલું નથી. છેલ્લા જોક એ સૈકાળા કેને શાખને વૈશાનિક પ્રોણેશો કોઈવાળાં આવે છે તે હથી રિયાર કરતાં, કુદરત સાગેની આપણી જેણવાળાંની લગાઈ છે-કુદરત દોષ છે.

કુરુત આને પોતાને માર્ગી કરવા મેદિલ છે, અને વાંચણી વિશ્વાસ ગાડિય નાથના નથાને હારવા પ્રયત્ન કરી રહેલ છે. કુરુતના સ્વભાવમાં જ જે હોવ છે તે રેખને ગાંધી કાઢી કુરુતને નિરોગી રંગતું, આપણે બનારે કુરુત વિદ્ધ થાયી, આપણા ખાન-ખાન, બબદાર, રહેણી-દરખ્ષી અને ધ્યાનતોર્પાં આપણી વિષયેખાળે દર્શા કરીએ થીએ લારે કુરુત આપણને દૃપ્તિ હેલા. આવે છે, કીસા કીસા રોગે દારા આપણો નોટીસો હે છે, અને બનારે આપણે કુરુતની નોટીસેને પણ આવમણુંને ધીકે લારે છેને પણ મહાન્યુદાદિ સ્થૂલ સાધનોને બીજી-બીજીને કુરુત લુદા. કરી નાણે છે, તેમ આયારે જમતના અધ્યાત્મના સ્થૂલ બબદારમાં, જે અધ્યાત્મના, અધ્યાત્મણ, શુદ્ધિનો અનિરેક લેવામાં આવે છે તેના સામે તાણનો પ્રાણી ધર્યાનો કુરુતનું તૈવાર થેબેલ છે. તેને ડીબાદ દરેક નવજ્ઞનાને તૈયારી કરવાની છે—કર્માં પડો.

પ્રાણેક બેણા નવજીવનને સમોધિવાગું આવે છે તેનું ચું  
કારણું ? નવજીવનને આગળ કષેત્રમાં વહેલા, લેખક હે સમા-  
જની ચું નેતૃ હોય છે ? આ વરુણનો વિચાર કરતાં જાણું છે કે  
નવજીવન જોઈએ ભાગ જીવું વર્ષનો ગાંઠાંની નાંડિ, પણ જોના  
મન અને શરીર તાત્ત્વિકી કરેલા છે, જેણામાં અનેક મહાવા-  
કંદ્ઘોણો બારી છે કેને પોતાના દેખ્યે, સુગાજ અને ધર્મ  
પ્રાણેં સાચું ભાગ છે, કેને જોતાની જવાંગાંડાંતું ભાગ છે,  
તે નવજીવનને શિરે અયધની પરિચિતિ સુધીસ્વરંતું આ  
આંદ્રીબન છે. જે કુદાન કે કુદતી આ કુરમાં પોતાના પુરે  
ધાર્યને નાંડી ઢાંબે, તેને આવતી કાંબે, પોતાના આ સમયને  
ગારે, આ ઉપોગી સમયના જેન્યાય ગારે શરમાનાંનો વખત  
આવતી જોણા રાંદ નથી.

કુદ્રાંત હે કે સુવાન પરિચયિતથી દાખેલ હે, સુવાન તેના માણિપોથી દાખેલ હે, સુવાન યાસે નાજુની સમેતનાથી, સુવાન જાપર કુદ્રાંત માણિપોથીનું જ્યાંગારી બાબેની હે, સુવાનો ભરવાનોય શરીરનથી—હું કેદું?

मुनिमध्याशन कहे उे के “धूरग करो, जो साधन होये  
सहाय देते” भुक्तिवालों कहे उे के “भुक्तिना परि नाश्वा  
गेतवा, नाश्वा गेतवामा नीति-भीतिनो विचार न करेह;  
नाश्वा देहे तो जगत् तजने आपत्ति आपत्ति” श्रीमतों कहे उे

સ્વીકાર અને સમાલોચના.

ଜ୍ୟୋତିର୍ଲୈଙ୍କ-ଦେଖନ ରା, ମହିଳା, ପ୍ରକାଶନ ଦେଖନ ରାଗଣ  
କୁଞ୍ଚାକର, ମାତ୍ରାଚାନ୍ତ ଦେଖାଯୁଁ କୈନ ସମୀକ୍ଷାକାଳିନମାନାଙ୍କ ମୁଁ ପାଲି-  
ତାଥା (ଫିଲିଆଯାଙ୍କ) ଭୂଷ୍ୟ ସମ୍ବନ୍ଧିତ, ୧-୪-୦.

અને ક્રીબાક, ધર્મિકાસ પ્રેરણો. જગતશૈલોને આ જીવન રાખના મોટ રસાયન તરીકે જોણાને કે શ. સુશીલ પટેલ, કરે છે કે ધર્મિકાસક્રોણે જગતના ગૌરવરૂપ મેળાન હુસ્તો અન્યાન્ય, કર્યો છે, તે અંદરીએ અંતિમિશ્રણ થાયોની. એ કંઈના કરી જગતશૈલોના કૃતન વિપર ભૂમા સર્વચાહુંત મુક્તિ છે.

પંચ પ્રતિક્રમણ સુધી—કોઈ સંશોધન કરીને આપનાં માટે  
પાલિતાબાબુ કાઢી આવાડ, મહિને ખાર આના ૦-૧૨-૭. આમાં  
પંચ પ્રતિક્રમણ વિષિય સહિત આપનાં આવેલ હૈ.

पंच प्रतिक्रमण सूत्र—प्रकाशक लेन सरती वाचन-  
गाणा मु. पालीतात्त्व कार्यालय महं व्याप्त आना ८-८-०  
आमं गोटा अक्षरो हे. अने विधिविधान, परामर्शात्, उत्ते  
व्ये उपरोक्ती संभव हे. ते सिवाय उपरोक्त वाचनगाणा  
लक्ष्यी नियत प्रस्तो खा अनुदेशनार्थी भवता हे.

**श्री शताङ्कर पद्मवीर॥**—पश्चात्मक देहवृत्त अने वापान्तरे बत्तों गारातरे शामक फैगांड हैतांड शेषाद्यवाचा—  
हिमत वसु पैसा ०-०-८, श्री शताङ्करसन्निधि आत्मनिर्भासकित अमानानी स्तुति की छे आ छाप लैन समाजम्।  
चूप प्रिय थाई पद्मवृक्षे, तेनु पश्चात्मक अकान्तरे तथा अर्थ  
आपाताम् आपेक्ष छे, ते शिवाप्रभानन्द उदया सारंक पद्म  
नाना टुक्को मल्लों छे,

ਕੇ “ਅਮਾਰੀ ਬਾਕੀ ਕਰੋ, ਖੁਸ਼ਾਮਲ ਕਰੋ, ਜਗਤਮਾਂ ਫੋਲ  
ਕੁਝਨੂੰ ਛੱਡੋ ਨਹਿਂ.” ਰਾਂਗੂੰਚਾਲੇ। ਫਲੇ ਕੇ “ਤਮਾਂ ਥਨ ਤਮਾਰੀ  
ਦੇਸ਼ਮੀ ਰਾਜਪੁਰਾਨੇ ਪ੍ਰਸ਼ਲਨ ਕਰੋ.” ਜਗਤਮਾਂ ਜ਼ਬੇ ਤੇ ਪਾਣੀ ਅਵਸਾਰੇ  
ਭਾਸ ਕਰੀ ਰੇਖ ਛੋਲ ਪਥੁ ਸੌਥੀ ਮੇਡੂ” ਭਾਸ ਕਰੀ ਰੇਖ ਲੇ ਤੇ  
ਤੇ ਕੁਦਰਤਜ ਛੇ, ਸੁਫ਼ਿਨੇ ਅਤਿਵੇਂ ਬੇਤਲੀ ਬਥੀ ਧੋਏ ਛੇ ਕੇ ਕੇ  
ਸੁਫ਼ਿਨੇ ਹੁਦੂ ਸਾਥੀ ਨੇਗਾਲੁ ਹੇਠੁ ਨੇਂਤੇਜੇ, ਕੇ ਪੁਛਿ ਵਿਚਾਰ,  
ਵਾਲ੍ਹੀ ਅਨੇ ਵੱਖਨਾਂ ਬੇਕਾਮ ਸਾਖਾਰਾਈ ਕੇਤੀ ਨੇਂਤੇਜੇ, ਤੇ ਸੁਫ਼ਿ  
ਆਕੇ ਮਥੂ ਆਗੇ ਵਾੜ੍ਹਵੀ ਜੇਹਾਮਾ ਆਵੇ ਛੇ, ਕੰਨ ਸਮਾਹਮਾਂ  
ਅਨੇਕ ਸੁਕਿਗਾਨ ਸਾਹੁਗੇ। ਪਕਾਵ ਛੇ, ਤੇਜ਼ੇ ਛੇ ਆਸਾਨੇ ਤੱਤਾ-  
ਕਾਵ ਗਏ ਸੁਫ਼ਿਨੇ। ਜਿਪੇਸ਼ਾ ਕੁਲਾ ਲਾਗੇ ਕੇ, ਚੋਟਲੁਝ ਨਹਿਂ  
ਪਥੁ ਜੇਸ ਕਲੀ ਪੋਤਾਨਾ ਅਤਿਵਾਲਾਨੇ ਛੇਤ੍ਰੀ ਰਲਾ ਕੇ, ਚੋਨ  
ਜੇਥ ਜਲੁਝ ਸ਼ਹੀਦੀ ਲੇ ਕੇ “ਲਗਨਾਂ ਭਾਨੀਆਂ, ਅਵੈ! ਮੁਰਾਨੇ  
ਆਹਾਰੇ ਗੋਲ ਮਾਰ੍ਹ ਹਰਿਨ ਮਾਟੇ ਵਲਖਾਂ ਗਈ ਰਲਾਂ ਛੇ.” ਲਾਰੈ  
ਅਨੇ ਨੇ ਸਥਾਏ ਤੇਮਨੀ ਅਕਾਲਸਾ ਕੁਤਿਨੇ। ਪੋਤਾਪ ਭਾਸ ਲੇਵਾਨੇ  
ਅਥਵੇ ਤੇਮਨੇ-ਤੇਮਨੀ ਆਕਾਲਾਨੇ ਕੁਚਲਾਨੇ। ਪ੍ਰਸ਼ਲਨ ਥਾਥ ਛੇ,  
ਥੁਨਾਨੇ। ਅਭਿਣਾਂ ਛੇ ਅਨੇ ਪੋਤੇ ਅਖਤਿਸ਼ਾਓ। ਰੱਤੇ ਛੇ, ਮੇਝਾਥੀ  
ਅਖਤਿਸ਼ਾਮਲੇ ਥਾਥ ਕੇ, ਸੁਫ਼ਾਨੇ। ਨਾਵਿਤਕ ਤੱਤੀਕ ਲਾਡੇ ਥਾਥ ਕੇ  
ਅਨੇ ਚਿਹਾਨ ਵਾਨੀ ਪੋਤਾਨਾ ਕਾਈ ਪਥਰੇ ਨਿਰਧਾ ਸੋਅਕਤਾ

धूमधान्य के अनिष्टामें कुवानोंसे अत्यारनी परिवर्तित हो उड़के करवाने छ. नैतिक जण अने अक्षा विना, शुद्ध मह ते नामुगा नक्खाने सामने की नहि की याद आसुरी संपद सामे कुछ करवामांज कुवानोंली कुवानी शोभाई-कुवानाई यथ-नीति दीपती।

માનુષ કરતું હોય.

દેવતી કાઈ પ્રતિક્રમણ સુનું મૂલ્ય તરું આના આમાં  
સહિત આવાર્ય અને ઈટલાક વધારા આપવામાં આજી છે  
આવકાન પાર પ્રતની દીપ-કિંમત ૦-૧-૦ એક  
આનો, રોડ નક્કાના રૂપીણા પાંચ.

મહુસારી વાંદનખાળા—કિંમત દેહ આનો, રોડ કોપીના  
ખાક રૂપીણા.

મહુસારી સુલસા—કિંમત પોણો આનો, રોડ કોપીના  
નથું રૂપીણા.

મહુસારી ભુગમાટી—કિંમત પોણો આનો, રોડ કોપીના  
નથું રૂપીણા.

મહુસારી રાજેમાતી—કિંમત પોણો આનો, રોડ કોપીના  
નથું રૂપીણા.

મહુસારી સીતા—કિંમત એક આનો, રોડ કોપીના  
પાંચ રૂપીણા.

માંગલીક ગીતો—કિંમત એ આના, રોડ કોપીના દરા  
રૂપીણા.

સમાધિ વિચાર—કિંમત દેહ આનો, રોડ કોપીના ખાક  
રૂપીણા.

સનાત પૂજા—કિંમત અર્ધો આનો, રોડ કોપીના અર્ધો  
રૂપીણા.

સૈયબંદન શુરૂવંદન—નિપિ સહિત કિંમત એક આનો,  
રોડ કોપીના પાંચ રૂપીણા.

શ્રી સ્થાપના ઘને વિશ્વિકૃત સામાધિક સુનું—  
કિંમત લખી નથી.

કિનેંડ રસૂતિ—કિંમત સવા આનો રોડ કોપીના છ  
રૂપીણા.

શરૂંબન્દ લીલાધિબાર રાસ—તથા નવાણું પાનાની વિચિ  
કિંમત એ આના રોડ કોપીના ખાક રૂપીણા.

ઉપરોક્ત દેહ ટ્રોક્ટ જન સરતી વાંદનમાણ મુ  
પાલીતાનું કાઠિયાંડ એ સરનામે મળો રાખ્યે.

આરટીય દર્શનિમાં કૈન દર્શનિનું સ્થાન—પ્રકાશક  
પોષકાલ સાકદરંદ રાખ શી કૈન રિશાળાણા, મુ, આનગર  
મારીયાંદ બેખાર શી હરિસંધ્ય લાલાયાર્ય બેગ, જો, બી, કોલ.

શીરૂત હરિસંધ્ય લાલાયાર્ય દાખીયામાં કૈનેતર વિદ્ધાનની  
અભાસક કારીએ પ્રસ્તુત નિયમો લખ્યો હતો. રા. સુધીને  
તેનો આર્ય શીરૂતાદ ટ્રેન હે. એકદે પછ દર્શનિમાં કૈન  
દર્શન સર્વ કોઈ અતાવામાં આવેલ છે એક ઇફ્ફિં પ્રસ્તુત  
નિયમ વાંદન લાયક હે.

આયન ગોઠી—દેખક ચાદસેન કૈન ગેર પ્રકાશક કૈન  
સુપક સંખ મુ, પાટાન મહિય સર્વેમ ગાયન, શીરીમાં જવાતી  
નવા ચુગોમાં આ આયનો, જનાવામાં આવ્યા હે, એકદે  
ગાયનો કિંડ હું, હિંદી પ્રેમિઓ માટે ઉપયોગી હે.

પ્રમાણ નાય તાત્વાલોક પ્રસ્તાવના—દેખક અનોકાંતી  
મુનિશી દ્વિમાણ દ્વિજયશુ મહારાજ, પ્રમાણ શી વિચિ  
દમનું દાખાળા, દીપાંક જાહીયા. કે. નીમક મારી,  
મુ, ઉલ્લેન (માળા) મુલ ૦-૩-૦ પ્રમાણ નાય તાત્વાલોકની  
સાથે પ્રસ્તાવના માટે જામારી અભિપ્રાય પ્રશ્નિખ થઈ સુઝ્યો હે.

## ....અ....વ....ન....વ....

સાલમને એવાબાદે—

—બોડેના તાલીનું પું જાપુણે તા. ૮૮ મેથી ૨૧  
દિવસના પિન શરીરી અગંડ ઉપવાસ આદરબનો નિર્ધય કરો  
છે, આ ઉપવાસ કલિન વિષેના ધર્મ અર્થ આથે સંબંધ  
ધર્યોછે.

—શીરીના શીકલાયાદી દ્વિદાં આના, તેણો દેશની  
શાન્તિ ને સુલેદ માટે પ્રયત્ન અર્પણી કિંદ રાખે છે, વાઢ્યારોય  
અને મહાત્માજની સુલાકાત લેવા તેમનો ધરાયો છે.

—દોષ જગન્નાથાલ નાદુરસ્ત તથીયને લઈને હીમાલયના  
પ્રેરણમાં આવાગોચ મુખમે ગાનશિક અને શારીરિક આરામ  
માટે ઉપદી થયો છે.

—દુંગધના શાક સોલગર છુદીનાલા જર હુકમબંદ  
સ્વરૂપને “સ્વાધીન ભારત” ના તંત્રીપર અદનાસી કરવાની  
ક્રીયાદી નોંધાવી છે.

સ્થાનિકઃ—યાદારી મંદ્રીને કારણ પોથીની ખંડ પરી  
છ. (૧) હીરાગામાં જુકેલાનનો ધર્મી કરનાર ભારવાડી કૈન  
છગનમસ ગાડ તા. ૨૨-૪-૩૩ ના પોજ ગુમ કથા છે. પોથીસે  
અંગારેમાં ફેલીક યંગાલનારી વિશે ભાડાર પાણી છે;  
તથાસ ચાલુ છે. (૨) અમદાવાદ તરફની જમના નામની એક  
પણુલી છોકીને નસાદા તથા શ. ૨૦૦૪ માં બેની હેવાના  
કાના માટે પોણાનું નાશણ, ચંદુલાલ લાલાયાર્ય અને વિચનાય  
પુંજ્યામ પકડાય છે.

કામનગરઃ—તા. ૨૦ મી ના રેટ જેનેટમાં જગ્યાયું છે કે  
આ ઉપયી લહેર કલામાં આવે છે, કે કાન ગાડે અગર ભણાવ  
માટે તમામ પીલિંગની સુલાકાત ફરોજ સંવાના ક થી ૧૨  
અને અપોરના ૨ થી ૪ સુધીમાં રચિનાર અને લહેર તહેવાર  
સહિત તમામ હિંસે થી દલુર સાહેન આધારુર પોતે  
બીજાનતા હું તારી કોણે.

આમખેદા (મીખલી):—આગમાં પર્મશાળા, આસ્થેરી  
અને પરણ ગુલ્લી સુદ્ધાનો મેળાવો મામલતાદાર મી. રાને  
ના પ્રમાણયા નીચે કિંદાંને હોય. રા. ૨૮. રોડ ગેલિંટ્યુ  
સુલાકાણની છંચા સુલાં રા. રા. મગનલાલ હુર્ભાજ શાહે  
ઉપરોક્ત સંસ્થાના લહેર જનતા માટે જોખાણી છે. ઉપરોક્ત  
લહેર કથા ઉપર આખે જોખાણી તથા પરણના નિષ્ઠાન માટે  
જગીન આપી રાખી ૨૦૦ રેટ કોઈ પોતાની રેટજ આપ કરી છે. રા.  
મગનલાલસાહેદીને મીખલી હાદરુલની બેઠીંને જામીન  
દેવા માટે શ. ૫૦૧) અને આયામણાને શ. ૨૧) બેટ  
આપાતું લહેર કુર્દી હતું.

પાટથણ:—પાટથણી તા. ૩૦-૪-૩૩ ના રોજ પાટથણ કૈન  
સંદું તેપુટેનાન કિરોણી શી. વિચનાલાલસરીયરને  
આગ્રાનું આપણા નાનું હતું. તેણો શી કેટ સુદ ૮ પહેલાં  
પાટથણ પથારવા વકી છે. (૨) શી ડેરાનાલ મંજામાં કાણે  
કૈન સુપક સંખ પાટથણ તરફથી નીચેનો તાર શી વડોદરા રેટ  
કૈન પ્રાણ-કેટીને મોકદો છે. “તમારું” આપણનું આજી  
સાથે આપણાના માટે જામારી અભિપ્રાય પ્રશ્નિખ થઈ સુઝ્યો છે. તારથી  
જગીન આપીંદ્રુદ્રુદ્રુન ચાને સંખાણો માટે દૈપાર છીંદે તેણો  
(આપીંદ્રુદ્રુદ્રુન ચાને સંખાણો) સુદ્ધાં એનોને અખિનકારી છે. તારથી  
જગીન આપેણે.

## हिन्दी विभाग.

### जैनधर्म का ऐतिहाजिक गौरव

—बाबू सुगन्धिदौली लुणावत.

[बाबू सुगन्धिदौली लुणावतने अखिल भारत-वर्षीय स्था. जैन नवयुवक परिषद के प्रथम अधिकारेश्वरके स्वायत्ताव्यक्ति के स्थानसे जो स्थीच दीशी उसका कुछ भाग अपनी समाजको उपयोगी होनेसे उध्यूत किया है। —तंत्री हिन्दी विभाग]

सज्जनों, हमारे जैनधर्म की उत्पत्ति और इसका इतिहास जैन समाज ही के लिए नहीं बरन् मनुष्यजाति के लिए आशीर्वाद रूप है। विश्व-बन्धुत्व और अहिंसा के जिस महान् धर्ये को लेकर इस विश्वव्यापी धर्म की सृष्टि हुई है, वह धर्ये इतना ऊँचा और इतना पवित्र है कि ज्यों-ज्यों संसार आगे बढ़ता जायगा और वैज्ञानिक खोज ज्यों-ज्यों तरकी करती जायगी त्यों-त्यों इस धर्ये की महत्ता का संसार स्वागत करता चला जायगा। संसार के सब से बड़े महापुरुष ने आज जिस मार्ग से सारे संसारको आधर्य चकित कर रखता है, मुझे कहने दीजिये, कि वह मार्ग आज से ढाई हजार वर्ष पूर्व हमारे परमपूज्य तीर्थिकर भगवान् महावीर ने निश्चित किया था। भगवान् महावीर के जीवन और उनके सिद्धान्तों में जैनधर्म की विशालता का बीज छिपा हुआ है, मगर ऐसे विश्वव्यापी और विशाल धर्म की आज क्या स्थिति हो रही है। संसार की आंखों के सामने आज हम ग्यारह लाख जैनियों की क्या स्थिति है यह बात बर्णन करते हुए भी हमारा हृदय द्रवीभूत हो जाता है। आज हमारो जगत् प्रसिद्ध वीर अहिंसा में से कायरता का जन्म होता है और हम लोग कायर जाति के नाम से मशहूर हो रहे हैं। धर्म के विशाल और विश्वव्यापी सिद्धान्तों को एक ओर रख कर हम सोग छोटी २ बातों और छोटे २ मतभेदों के पीछे अज्ञानियों की तरह लड़ते हुए अपने संगठन और शक्तियों को नष्ट कर रहे हैं।

सज्जनों! अगर यही स्थिति रही तो आप स्वयं सोच सकते हैं कि उन्नति की इस छुड़दौड़ में हम कहाँ तक अपने अस्तित्व की रक्षा कर सकेंगे। मेरा स्थायल है कि केवल इतिहास के पृष्ठों पर ही हमारा नाम शोष रह जायगा। अत एव यदि जीवित जातियों में हमें अपनी गणना करवाना है, यदि इतिहास के पृष्ठों पर हमारे पूर्वजों के गौरव के साथ २ हमें अपना नाम अंकित करवाना है, यदि संसार के अन्दर सबै जैनी बनकर रहना है तो सज्जनों, अब उस पुरानी लकीर को पीटने से काम नहीं चल सकता। संसार में होने वाले परिवर्तनों के साथ २ हमें भी हमारी कार्य-पद्धति (Constitution) के प्रबाह को परिवर्तन करना पड़ेगा।

#### नवयुवक शक्ति को जागृत करने वाली आवश्यकता

इन परिवर्तनों में हमें सबसे पहले इस बात की जरूरत है कि हम लोग हमारे समाज की नवयुवक शक्ति को संगठित और जागृत करें। संसार के इतिहास में नवयुवक शक्ति ने जो महान् कार्य सम्पन्न किये हैं वे इतिहास के पृष्ठों पर स्वरूपीकरण में अंकित हैं। मगर आज हमारे देश के नवयुवकों का क्या हाल है? चारित्र-बल और संगठनबल के अभाव की वजह से उनके मुख्य-मण्डल तेजोविहीन हो रहे हैं। उनकी शक्तियों जीर्ण हो रही हैं और जो चाहते हैं उनको बरने में वे अपने आपहो असमर्थ पाते हैं। ऐसी स्थिति में हमारे लिए सब से बड़ी आवश्यकता इस बात की है कि हमारे जैन नवयुवकों का एक मण्डूत संगठन हो जो हमारे नवयुवकों को चारित्र-बल के उच्च आदर्श पर पहुँचाने में सहायक हो। जबतक हमारे नवयुवकों का चारित्र-बल एक उच्च आदर्श पर नहीं पहुँचेगा, उबतक किसी भी प्रकारके सुधार की आज्ञा करना ब्यर्थ है। इसलिए एक अखिल भारत-वर्षीय जैन नवयुवक-संघ की स्थापना होगा आवश्यकीय है। इसके कम से कम ५०००) नवयुवक सदस्य हों ऐसे जो संघ के एक इशारे पर जहाँ चाहे वहाँ पर एकत्रित हो सके। अगर इतना बड़ा संगठन हमारे जैन-नवयुवकों का होजाय तो समाज के अन्दर बहुत शीघ्र सुधार की धारा प्रवाहित हो सकती है।

# મુખ્ય જોન.

સમાજ, ધર્મ અને રાષ્ટ્રીય સેવા બળવતું નૂતનયુગનું કૈન સામાલિક.

તચી: રાજકોણ ચીમનજાલ ડેપાર્ટમેન્ટ.	શ્રી મુખ્ય મંત્રી નેણ યુવક સંગ્રહ સુખયત.	વર્ષ ૨ જુન, અંક ૨૮. મા.
માલાનંબિ: ડેરાવલાલ મગણાંદ શાહ	વાર્ષિક લપાનમ રૂ. ૨-૮-૦	શાનીયાર, તારીખ ૧૩-૫-૩૭.

મહારાજ અને યુઝનો પ્રેરણાની યુગયુગના અંતરો કાપી

સમર્પણ વિવિધના અનિષ્ટ તત્ત્વો સામે જોહાઈ જગાડી રહ્યો છે.

કેદ મહાન જવાણાસુખી ફાટી નીકોને અને ઉકાપાત મચે તેમ આને અમસ્ત નિષ્ઠામાં ઉકાપાત મચી રહ્યો છે. જગતના તમામ ભાડીરોણે એ ઉકાપાતને આગામાનો પ્રયત્ન કર્યો, પરંતુ તેનું પરિણામ નિષ્કળતામાં સાંપદિકું છે. ગીતાળમાં શ્રીકૃષ્ણ કષ્ણ છે કે “ન્યારે જ્યારે ધર્મની પદ્ધતી થાય છે ત્યારે જગતના અનિષ્ટ તત્ત્વોનો નારી કરવા માટે મારો જરૂર થાય છે.” એ સનાતન વાણી આજના વાતાવરણમાં ઉંડા ઉત્તરતાં સત્ત્ય નિવઢતી હોય તેમ જાણ્યાં છે. હિરણ્યનોહારની પવિત્ર પ્રવૃત્તિમાં અનિષ્ટ તત્ત્વોએ સાંઘાત્ક્ય જમાવ્યું ત્યારે જગતની મહાન વિભૂતિ, સાખરમતિના ચાંત અને યરોધના પોળીઓએ તેની સામે આંદ્યાત્મક શરૂઆતે સંજગ કરી રા હિવસના ઉપવાસની ઉદ્દેશ્યથી એક યુશ્ટુમા સુવારે જાહેર કરી જોહાઈ જગાડી ચ. ન કેવીપણ રોકાનાની વિચારી રોકાય એવી એ વ્યૂહ રચના સાંભળી ઘડીભર જગત આસ્કર્ય અને ઉંગળા જીવસાગરમાં ફૂણી લય છે. અનેક માંધાતા સમા મહાપુરુષોએ એ જગત વધને તેના જિરચયથી જીવાયા અરોકા તરફ દોષ મુકે છે. છતાં એ પુરુષોના અખુનમ રહે છે, અને વદે છે કે “હું સુધી એ કરોડો માનવીઓના મનુષ્યત્વની પીછાથું કરવામાં ન આવે ત્યાં સુધી આખરીની ઉજ્જ્વલિ નથી. હિન્દુ ધર્મનો જય નથી. હિન્દુ ધર્માં મારે રહેવું હોય તો તેમાં ખંડી ગયેલા અનિષ્ટ તત્ત્વોના યરોને હુર કરેં જ છૂટો છે. તે માટે રાજકીય સત્તા કે કરોડો હૃપીઓના અસ્પૃશ્યોહાર માટેના ફરોડા જોઈતું કામ નહિ આપે પરંતુ હુદયપદ્યાની જરૂર છે, અને એ પરેટો આંદ્યાત્મક શરૂઆદી રોકાય છે જ્યાંસુધી હુદયમાં મહીનતાબદી હોય ત્યાં સુધી કેદ પણ પ્રવૃત્તિને આચો વેગ મળી રહે નહિ. એ મહિનાને હુર કરવામાં ઉપવાસ રામાણુ જીવાજ છે. હિન્દુ ધર્માં, ઉપવાસનું મહાત્મ્ય કરવે અને પગલે નજરે પડે છે. મારા ઉપવાસથી કોઈ એમ ન સમકે કે કેદ વ્યક્તિને ઉદ્દેશી હું આ માયરિયત કરી રહો છું, કે કોઈને દખાવનાના આમાં દેશ માત્ર પણ આશાય છે. પણ હિન્દુ ધર્માં ઘૂસી ગયેલા અનિષ્ટ તત્ત્વોને હુર કરવા માટેનો આ ઉપવાસની પાછળા આશાય રહેલો છે. મારી સાચે કેદ પણ વ્યક્તિ ઉપવાસ ન કરે, કરણુંકે ઉપવાસ કરવામાં મળ, વચન અને કાયા ઉપર કાશું રાખવાનો ખૂબ અલગાસ કેળવાનો લેધાણો છે. જેણે એ આખ્યાસ કેળાન્યો હોય તે ખરે ઉપવાસ કરે. પરંતુ આખ્યાસ વગરેના મનુષ્યોએ એ રસ્તે લય તેમાં હું સંભાગી માનતો નથી.”

યુદ્ધ અને મહારાજાના લુબનની સ્પર્ધી કરનાર એ પુરુષોત્તમના ઉપવાસનો આને છુટો વિવસ છે. તેમની આપણે જીવોતના કિરણો સમર્પણ આખરીની ખૂબુંમાં પ્રસરી જયાં છે. આસ્પૃશ્યતાના મહાન હેત્યનો એ કિરણોથી નારી થઈ રહો છે.

વાંચક ! હારા શરીરના કોઈ પણ આસ્કર્યમાં આ હેત્ય ન ઘૂસી લય તે માટે તકેદારી રાખનો. હુદયમાં એ હેત્ય હોય તો તેને સત્ત્વર હડસેલી દેને. તેમાં તારી અને જગતની સાખીમતીની છે : “આસ્પૃશ્યતાના હેત્યનો નારી થાય ! મહાત્માણ ઘણું લબા !”

पुरिसा ! सच्चमेव समभिजाणाहि ।  
सच्चस्स आणाए से उवाहिप मेहावी मारं लहड ॥

(માન્યાસ્તિક સૂત્ર.)

ਪ੍ਰਾਣ ਜੈਨ.

સાનીવાર, તાંત્ર ૧૩-૫-૩૩.

યુવક સુંગારુન.

**अमृपत्ति** द्वैत समाजनी आर्थिक, सामाजिक अने प्रार्थित स्थिति नेतां समाजनी स्थिति कोषमाध यसी हो, जिस कण्ठु पर्यंतु पहरी, पृथगीना पटपट सनासो वर्ष पहेलां ने मानव वर्ती छली तेमां सारी वधारी व्यापारी आको ते योइ अलगत ने सीतेर कोपेइनी सोभासा चुप्पी पहेली गढ डे, जोड्ये उक्सां सो-समासो वर्षभां हुनियानी वर्तीगां घोडा भिट्टा वधारी थो. त्वारे आपाथा समाजनी वर्ती अद्यार्थी पञ्च ज्ञाती थहर, जेह प्रमाणाब्यो याहु घटाडा छापग रहे तो सो वर्दं बाह छैन समाज हस्तीभां घहरो हे नहिं यो समय शाखाप तेम कु.

‘तेज्ज्वला कर्पं कृष्णस्याति चिकित्सा कृष्णु तो दद्या विशाना,  
मेषाद्यामा श्रीभगवाना, अस्तर तप्य, आत्मा उत्तमी निर्माणे  
गेत, औज्ञानो नामा इत्यन्ते, निष्ठाव्येत्ती अपरं कृष्णस्याति,  
आप लग्न, डैग्नवधुयो अक्षय, दुर्लीला अपेक्षा, साथ उत्तर-  
वायु ने जगमध्ये पापण धर्मना लाभे, लाग्नो उपमाय,  
धर्मना उड़ेरात्रे तर्हि कृष्णानी सता, च्या रित्यतिमा समाज  
इपी कृतीर, कृतेवर अनीने खसाघर रह्ये छे, त्यां तो छात्या  
बिप्र शमनी चेंडु वारितक नारितकने प्रश्न किंवा धर्मीने,  
तेम अगेंगी हीक्षा पापण पापण अनीने रामविनयो ने  
शामयन्ही असाक्षना नागणा शरीरने इटडा उपरे इटडा  
बाबापी रक्षा छे, जेटखे दौर दौर विवाही होणाऱ्या सामाची,  
अंदूर अंदूर दुम्पना वीज वारी रक्षा छे, अने तेने ओरना  
सीचिन सीची रक्षा छे, तेम रक्षायूत पश्चुतको सागारीनी  
नाढ तपाच्या सिंचाप गेरी रुक्षना कृष्णातु रक्षवृ कृष्णा  
कृष्णातु रुक्ष अनी सामाज इपी रुक्षने कृपी रक्षा मे.

व्या जलेकरे परिवितमध्ये- समाजने अचाचना नेटेसे  
कर समाज परिवर्तन करेता एक मुकान गेमे देटेले प्रभायिक  
अचास करे, तांना पक्ष जग सिवाय ते इत्ती शक्तो नयी-  
समाज परिवर्तन की शक्तो नयी शान्त परिवर्तन-सुखायो  
डे उत्तात त्यारे व्याप कि, व्यापे सारीये समाजाना मुकानो  
ज्ञेना प्रमाणने अंजेठी नाभी उत्ता याहे अप तर्फ मुकुक्षमी  
होय तेने ज्ञात करे न होय तांना नवा स्थापे अने आधी  
दीपी समाज प्रवतिना भास आदारे

સુવાળની પરીક્ષા કંબર હપેર નથી, પણ જેણી નારીઓનાં  
દોડી ટંડી નથી પરી જ્યાં, જેનામાં સાદગીએ ગરેં કરવાની  
તાલોખેલી છે. જેનામાં પ્રગતિકારી કારોં કરી ગઈ રીતનાં  
દમજા છે. જેણે સુવાળના કિંદ આતર ડેપનીં પરંયા નથી

કરતા અને લખો સાફ્ટસન્સ જરૂરમાં શુદ્ધિતીની પેટે મુજબથે છે,  
તેજ આગો કુણાન. તેવા સાચ્ચ શુદ્ધાના કલા હોય ત્યા કુણક  
સંગ્રહન માટે ક્રમન કોણે અને કાંઠે લાગી લાય.

समाज अशतिना आवे शुद्धीनां संग्रहन करता, आपन-  
नरना युवानेवे हैंडा पदेक्षां मोक्ष कुषक परिवर्त लावेली. त्यार  
पटी ते समाज उपर अनेक अशतिनी आहतेना गोणा.  
हेतरपूऱ कुषवाचा कंठक लावति आवी, सध नदाननं हवियार  
कुण्ड जन्या; धर्मना टैक्सरोनी लीकाण्या भुवली या मारी,  
तेमनी सत्ता तुद्याना आवाना तुलीपांची ते बेळाकडा जनी केंग  
आवे तेम वाणी विलास सेवना भांड्या; खांडी कृषी घावाच कुषक  
प्रहृति ते शाकुन रवी. ए हृषी घावाच प्रहृतिने समाजना  
इपभां हेतवानी जवळ के. अने नवापै समकाता इपभां मोठी  
कुषक संग्रहनांयी अशतिनी लावेत अशती, त्यार तेने शुद्धव-  
ानी पेशवा करावाचा समाज शत्रुघ्नेमि पाणी की गवुंपासी  
ज्ञाना समाज सांसी सहादरने द्वांप बंजावये पक्षी.

આ પ્રાણીની જોતને સાચવની કે ? જેનામાં વધુ જોમ  
પૂર્વું કે ? તો આજ પણ મધ્યરક્ષ રૂપે અખીલ ભારતના  
સેતુંના મનીષુંનું હુંકો અને કુનીઓની પરિવહ અરી.  
અને વુદ્ધ પરિવહે શાકે તેવા રેણુનામં કાર્યક્રમ બઢો,  
દરબેની દ્વારામાનો હાપડો જાનાય પરિવહની હોતમાં પછે  
સાચવની લાલખાળાની ન કિસ્તાં, વુદ્ધ રેણુનાને શૈક્ષાસ્પદ  
કરતે કરી સમજુંનું કોણ આતું સુધીની કાયમું લેયો

સુરક્ષ શાળાણ, સુરક્ષ સથે અને મંડળી અસ્તિત્વમાં આવ્યા છે; છતો અગ્રાંત્રે અસ્તુતો ચાપણી પ્રાર્થિતો જોદ્વારી શાલી હેડ્ટી નથી. જાણે સમજનો ધ્વના પ્રેરો અચ્છુકીએ પડ્યા છે, કેને ચાપણે હૃક્ષી શક્વાની રહિત ધરવીએ છીને, પરંતુ સંઘર્ષના અભાવેજ હૃક્ષી હેડ્ટી નથી. તેમ સુખાંકોગો અપતા જેણે કુન્ઠાંકોમાં માણાંકાં ચુણાને સંપૂર્ણ પાણું હળવેંથ્યાંને દીવા જૂલ કરે છે. ચાપણી અચ્છિક વિશ્વાસીનોંના ધર્મના નામે ખરતીની શાલી રહાં છે. તેના જ્યાં નીચે જોળી જગતનામાં મેલાં નાઈ આવનાની દંશીકી વાગે કરીને સ્વાર્થિતો સ્વાર્થ સાથી રહા છે. જોમ કેવી સમજજ્વા આવ્યા છે, છતો તેના મનને લુટી દિવા લરેદ પદ્ધતી જવા તેના ઉદ્ઘાંકો અનેક લર્ખાંકો ઉંની કરે છે અને જેમાં હોળાંશુમારી પણત છે તેંબે અભૂતમાં વર્ણ અદ્દ નેતૃત્વના અભાવેજ દિવા જૂલ કરે તે જનવા નોંધ છે. આથી સાથેને અનુભૂત રહ્યા હોય અને તેના લેણી જરૂર છે.

અમારની વિદેશ પરિવિશ્વતિ જેતા સાચા કુચાનન્દ બેદી ઉગ્ણી આવનું જોઈએ. તેનામાં કુચાની દેખ, સેવાની પગથ હોય, રોગથી પ્રવિશ્વાનનું રહત વેદું હોય તો, તેને કુચા પ્રવૃત્તિ આપાણ, ધ્યાનથી સુનક સંગ્રહાની સિદ્ધ પાછળ હિનાના નનનું લોઈએ, અલે દીના કુશામો હિનાના કણે પણ મે દિવાનીમાં અમારની ઉપાસી સે.

મુશ્કે ખાલીએ—અન્ગાડુ મહાત્માજીને સરકાર તયારી તા. ૮-૫-૩૪ ના રાતના નવ વાગે છોડી મુખ્યમંત્રી આવ્યા છે, મહાત્માજી બેટી દાઢસ્વિને તાં રહ્યા છે, અને સર્વોળાં નાપુકુની પ્રેરણ હેઠળેણ નીચે ૨૧ ઉપયાસ પુરુષ કર્યો તા. ૮-૫-૩૪ ના અષોર પદી આ ઉપયાસ શરૂ થયા છે. અને તે તા. ૨૬-૬-૩૪ સુધી આવ્યો.

17

## ઘરમેળો સમાધાન:-

લ્યારે સંન્યાસ દીક્ષા એક બડોહરાની ધ્યાયસથાની  
ગેરજુપુર શાખાવાળા કલાકો ગંધુંદ રહ્યા હોય, લ્યારે શાસન  
પદ્ધતિ (!) તરફથી જનોક પ્રકારના તરકડો, અપણો જને  
માયારી જાળ ભાયરસા માટેના પ્રદાનો શરૂ રહ્યા હોય. એક  
જાણુંદી. સ્થળ રથળે માલકો મોહલી, એક હે એ મર હોય  
તેવા આમોના સચિના નાગોથી દીક્ષા એકટની વિશુદ્ધ ન્યાગમની  
ઉપર તારે કરવાગાં આવે છે, લ્યારે પીઠ જાણુંદી એમ પદ્ધતિ  
દ્વારાવામાં આવે છે કે અને ઘરમેળે સમાજાન કરવા પદ્ધતિસુધી  
ઈઝી. આમ જાણુંદી કુરોને બેફાને અવદે રહ્યે હોયનાંથો પ્રદાન  
કરવામાં આવે છે અને ધારાસથાના સભો અમાયારીમાં હોડે તેથે  
પડોછાન રદ્દ શાખાવાળ લૈનોરો ડેમ જાણે નિરોધ ન હોય તેમની  
અધ્યાત્મિક આમોના નાગોની હારગાળા વીરદ્યાસનામં પ્રશિદ્ધ  
કરવામાં આવે છે. આ આમોનો આંગે નિરોધ હોડે તેના નામે  
હંણેક શાખાવાળ અધ્યાત્મું હોય, તે તો હંણ માણુસ તથાસ કરે  
તારેન સાથી ખીના જાણુંદું. પદ્ધતિ એ આપત તો નિરીથિ હોડે  
પડોછાન રદ્દેના કોણોને અભિપ્રાય ગાંશચાર્યા આવે તો ઘણો  
મોટો આશ દીક્ષા એકટ તરફ પોતાની સંમતિ આપવો, એ બાબત  
નિર્ધિયાદ હોય.

આમ એક આજુ વિરોધાસું ઉલ્લે કરવાનો આવે છે,  
ત્યારે પીછ આજુ ખાગદાના જગ્યેનું લક્ષ્ય હોય કે એમ  
પણ દ્વારાવાનો આવે છે કે દીક્ષા જે અમારો આનન્દી ગ્રન્થ છે.  
તેને અમે બંનેઓ જીવા માણાન કીયે અમે તે સંગાંધી  
સમાપ્તાન કરવાના પ્રયત્ન કરીએ કીયે. પણ આ અના  
તાણ લગ્ફાઈ અને અવળે રસેને દેશબનારી છે. એમ અમે સાહે  
સંપર્દોમાં લાગતાને વેતરલું અધ્યાત્મે, દીક્ષા, કોઈ  
સંસ્કાર પ્રાણના દિલને આનન્દ ગુણ કોઈ પારાપ્રેથીનાં  
શાશ્વત ભરતી હોય કાને પછી ગુણાંનો કહે કે એમે પ્રેરણ  
નોંઠ ધર્મભેણ સમાપ્તાન કરુણ માર્ગાંને કીયે, એવી આ વાત  
કે, આઈ પણ સંસ્કાર ઝડપાણીની આ યાદબાળાં નહિ લયાવી  
શે. તેમ જેણે સમાજના દીક્ષા, દીક્ષા ને દીક્ષાની મૂલનાં મદત  
અનેલા અમે તે મદરે આજાકોને લલચાની, હૃસસ્વાની, કિંદ્ય  
લઈ અંગોધી રીતે દીક્ષા આપના ઝડપાણી મર્યાદની આઈ કરી  
સમાજના ધર્મપ્રિય વિકાસનો સાથ શૈખી દીક્ષા એકદિ ૨૮  
કરવાની માંગલું કરે એ કોઈ પણ શાલ્યી સંસ્કાર ન સ્વીકારે  
એ દીક્ષા નોંઠ છે. અગને એ ખાતી છે કે, નાગદાન ધીમત  
સંસ્કાર અને ધર્મસાધાના સભ્યો અધ્યક્ષ વહિતનોના વિરોધા-  
ભાસને વશ ન થાય પોતાની પ્રાણ પ્રાણેની દૂરજ જાળવી  
અને ધર્મિક શાશ્વતોથી જાંસોની પ્રાણને સાનિ કર્યાની

से सिवाय पौर्णचारा भहसंभेलना अमुख के ज्ञेयों कुप्रकाशना कार्यकारीज्ञोंगां शेष अवधारण व्यक्ति छे, तेमना मदा संभेलना अमुख लरीहिना बहतन्मयमधी अमुखल आपात अहशु करी समाजने कुषे रस्ते देखवानो अपल छन्दामां आनो छे; अप्यु के ए भदा अमुखना भील आवा चियावेने आकुणे-मृदु तेमणे दीक्षाना तेमना भर्तन्मने रेखु क्षु छे-  
तेनो व्यर्थ पव्य अप्यु अप्यु अप्यु छन्दामां आवेल छे,  
अधीक्षत इर्लीचांडामां कठो छे हे-

"આખ્યા સ્વર્ગમાં અપુરોણની આજે માનસિક પરિદેશિત  
કેવા પ્રકારની અધ્યાત્મ છે. તેવું જિન્હે સગ્રહ કરું જાય છે

મુખ્યલાં દીક્ષા પ્રકરણીની ડેલીલી ગેરસમગ્રના પરિણામે આપણા જરૂરો એ પણમાં વેણ્યાઈ જાય એ અપાર કેમનશીલીની જીવા છે, આવી વાતાવરણ મનવ કે હુદાબદને રાતાનજ ન હોય રહે. જો આપણે જાણતી પ્રસન છે, અને તે વાતાવરણ જાળવો નોટૂંબે. શુદ્ધ હાથથી નિભાલાસ દિશથી અને ચારમાંચિંડ દિશથી એકવ જાણી રોગ નિભાસ લાવાયો છાટ છે, એથી અણતી દીક્ષા જગતની સંમુખ સંપૂર્ણ હિતળા શવદ્વારા પ્રાપ્તાતી રહે.”

ਕਿਪਰੋਕਤ ਸ਼ਹਿਰੋਂ ਆਸਾਨ ਤਰੀ ਦੇ ਲੋਕਾਂ ਕਹੇ ਛੇ ਕਿ ਰਿਆਸਾਨ ਜੋਕਾ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਰਾਜਪੁਨੀ ਦੇਵਲਪਮੈਂਟ ਨ ਪੋਹਰੀ ਜ਼ੋਖੇ, ਪਰਤੁ ਆਪਾਂ ਜਾਗ ਭੁਲ ਕਿਤਰਾਂ ਜ਼ਖ਼ਾਰੀ ਦੇ ਸੇ ਤਵਲ ਮੁਖਥਾਣ ਹੋ; ਕਾਰਨਾਲ ਹੈ, ਆਪਣੇ ਯੋਗ ਮਾਨੀ ਸ਼ਹਿਰੇ ਦੇ ਇਕੱਥਾਨਾ ਪ੍ਰੰਤ ਮਾਡੇ ਸਮਝੂਤੀ ਉਪਰ ਆਵਾ, ਪਰਤੁ ਸਮਝੂਤੀਨੇ। ਅਮਰ ਫਰੋਵਾ ਆਪਣੀ ਪਾਸੇ ਫੋਅ ਚੜਾ ਕੇ ਤੇ ਜੋ ਪਾਣਿਕਿ ਸੁਣਾਯੋ। ਉਪਰ ਆਪਣੇ ਅੰਦੂਹ ਰਾਮੀ ਬੁਝਾਈ ਦੀ ਸੰਘ ਚੜਾ ਕੇ ਨਾਮੀਨ ਬਦਲ ਗਈ ਹੈ, ਅੰਧਾਰਾ ਪੂਰੀ ਪ੍ਰਤੂ ਕੇ, ਜੋ ਹੋਏ ਰਖਾਂਦਾ ਹੈ, ਤੇ ਅੰਧਾਰੇ ਵਿਚ ਰੱਖੀ ਰਹੀ ਰਾਹ ਰੇਮ ਨਥੀ, ਜੇਤੇ ਪਾਨਿਖਿਤਿਗੁ ਸਮਝੂਤੀ ਰਾਖੀ ਹੈ। ਪ੍ਰਮੁੱਖ ਅਤੇ ਵਲੀਅਤਾਵਾਹ ਕਹੇ ਕੇ ਹੈ, ਸੂਫ਼ ਵਿਖੇ, ਨਿਆਕਸ ਲੁਧਥੀ ਅਨੇ ਪਾਰਮਾਈਕ ਇਣਿਆ ਅੰਨ੍ਹ ਅਨੀ ਦੇਗੇ ਨਿਆਕ ਕਾਨ੍ਹੇ। ਧੂੰਹੇ, ਪ੍ਰਮੁੱਖਭੀਨਾ ਅਤੇ ਨਿਆਕਸ ਸ਼ਹਿਰ ਸਾਡੇ ਸਾਡੇ ਜ਼ਖ਼ਾਰੇ ਦੇ ਆਸਾਨੀ ਦੀਆਂ ਪਾਸਾਂ ਸੂਫ਼ ਲੁਹ ਨਥੀ, ਨਿਆਕਸ ਵਿਚ ਨਥੀ, ਤੇਮਹਾਂ ਪਾਰਮਾਈਕ ਵਹਿ ਪਥ ਦੇਖਾਵੀ ਨਥੀ, ਫੇਰਾਂ ਰਖਾਵ ਅਤੇ ਮਮਤ ਸਿਵਾਂ ਕੁਝੁ ਜ਼ਖ਼ਾਤੁ ਨਥੀ, ਸੂਫ਼ ਵਿਲ, ਨਿਆਕਸ ਹੁਤਿ ਅਤੇ ਆਰਮਾਈਕ ਇਣਿਆਂ ਜੇ ਹੋਏ ਪਥ ਕਾਰਪੋਰੇਟਰਾਂ ਆਵਹੁ ਹੋਣ ਤੇ ਸਮਾਂ ਅਤੇ ਸਾਸਨਾਂ ਦੇ ਆਕਾਲ ਵਿਵੇਕਤ ਸ਼ਹੁ ਨਹੀਂ ਕੇ ਤੇ ਨ ਥਥ ਆਸਾਨ, ਰਾਸਾਨ ਅਤੇ ਸਾਗਰਾਲਾਂ ਜਾਂਚੀ ਅਧੀਨਤਿ ਫਲਨਾਵ, ਰਾਵਾਖੀਖ, ਮਮਤੀ, ਫਲਾਅਫ਼ੀਲੀਆ ਅਤੇ ਪਾਂਧੀਓ ਅਤੇ ਪਾਸੇ ਸੂਫ਼ ਵਿਲ, ਨਿਆਕਸ ਹੁਤਿ ਅਤੇ ਪਾਰਮਾਈਕ ਇਣਿਆਂ ਆਸਾਨ ਰੀਵਿੰਗ ਦੀ ਤੇ ਸਮਾਂਕਾਂ ਆਵਹੁ ਨਥੀ, ਆ ਲੋਕਾਂ ਜੇ ਸਾਸਨ ਮਾਡੇ ਅਥਾਂ ਛੇਲ ਤੇ ਸਾਸਨਾਂ ਆਕੇ ਪਿਲ ਅਨੇਕ ਸ਼ਾਸਨਾਂ ਪ੍ਰਗਨੇ ਹੋ, ਤੇ ਗੁਣੀ ਯੋਕ ਇਕੱਥਾਨੋਕ ਪਥ ਤੇਮਹਾਂ ਤੇਮਹਾਂ ਕੇਂਦਰ ਸਾਥਿ ਤੇ ਆਉ ਜਾਣੇ।

સમાજના વીર્ય સ્વાને કુટાઈ રહ્યા છે, સમાજમાં ડેપ-  
વાધી માર્ગિન હોઢી જતના સાકો સાથોનો નથી, બેઠાડી અને  
જગ્યાઓનો તોને ડેરીને આઈ રહ્યા છે, સમાજની હોડે લાખ  
વિધાયકોને કે જેના પાલનિષાયક પ્રગતાનું પ્રગતાનું વધારે છે તે નિકાલ  
માંને છે; હેડજન્સોન મ્યુન એપ્ટોડો ગણે છે, શુદ્ધાંદ્રિયાનું  
પ્રગતાનું વધતું જાતું છે, અનેક ભરિયા જોવા છે કે ન્યૂ  
આર્થિક સ્થિતિના અભિનેત્રાના ફેફ રહી છે, સાધુલોનાં  
તિન માટેને ફેફાઈ રહ્યો છે, ચંદ્રનું જાંધીયાનું સિદ્ધિ અન્યું  
છે, નીતિભાગ અને ઇન્ના વિધાયકોને પ્રતાપે સમાજની સ્થિતિ  
દિન પ્રતીકિન ઘસાલી આશી છે, આશી પરિસ્થિતિમાં ડેઝ  
દીશા પાણીના વધી શકૃતીને અધ્યર્થીનાની તમણી પાણ  
ડોઢ મણી જસ્તા જસ્તાનું રૂપાર્થી રહેલો હોય તેમ માનવોને દરેક  
કાંઈક છે. આમ વધી પરિસ્થિતિનો વિચાર કરતો જગતાનું  
કે ખરેખેણ સમાધાન કરતાની બાબો તદ્દન તર્ફ છે.  
સમાધાન કેની જોડે ? જાપી પ્રગતિકૃત માટેને હોય, ચુશ્ચ  
જુદી હોય, અને સામનોથી કરવાની દરેકને ધ્યાન હોય  
તાંક સમાધાન રહ્યાને, આડી પ્રપદ લણ છે. હોઢ આઈ  
એ લાગ્યાં ન રહ્યે.

વડોદરા સ્ટેટ ધારાસભાના સભાસથો જોગ-

અમની જી

શાચો લાગે-સરમજાપૂરુષ્ઠો લાગ એ, દીક્ષા છે, તેથી દીક્ષા પવિત્ર છે, તરણ્ય તારણ્ય છે, પરંતુ તેમાં કાન્દાચા ને સેમાં બાંધવનો ભેગ થયો, તેથી તેની સુખાદસા જર્ખી સાહુ અસ્થાપા-ગોંગ હરાયો હાર્ટ, શૈંપોક વાંચત તે તરફ લક્ષ આપાયું, પરંતુ યેલા બેંકફોના ભૂખ્યા શુદ્ધલોઙ તેની અભગબુના રીતે જને સરળારીને સંતુદાવાના, એ જ્ઞાનો જેને મંજી નાયાના વૈકાન્દ્ર હોરસા જનાના માર્ક્યુટ, એટલે શી સંપત્તિઓ હરાયો હરણાની શાદ્યાત્મા કરી, ત્થા અંદર અંદર લઘડી ભારી હોલેશના હોળાંગા સંગ્રહાની, તેને પૂરાવે કંઈ જોગણા જર્ખી પડે તેમ નથી પાઠકું ગેલ્જુલ કે, એટલે આ વિષમન ચિયતમાં પ્રનના દિતું આપાર રાજને ક્રાંપદો પદવોજ નોંધુંને, અતી બચાના દિનાને બર્ઝ માનનાર્મા આપતો રહ્યો છત્તાં તેની અદ્યાત્મત કાન્દાથીજ યથ, ન્યારે દીક્ષાની અદ્યાત્મત નથી, પણ એ ક્રાંપદો તૈપાર થયો કે, તે તો સાચા લ્યાગીને હોલેશન આયાનારે છે, બેકા-મુંગો મારે મેડસાદ-કરનારી છે, એટલે ધર્મભાંગ હાથ નાયા-વાની ને દીક્ષાલ હરણાં આવે કે તે તો કંબ લાગ કે,

શૈદી-આમારા જારેઓને એટલે રાખવાથીએ દીક્ષાની લાગીત ગયે કરું નિરમો બાંધા હેઠળ જાં તેની ઉપરનું રહ્યાને તેનાં દિગ્ભાગીઓ સગીશને સંતોડે છે, નમાં છે, જાં સાધારણ, વિધિતિના વાચીઓ સમજાવતાં. ઉત્તે તો આલગીમાં પૈસાથી ઇન્ફે કરી જોડાના ખરદિ છે. જોયો ન માને તેમના આગામીને નાયારી ખૂબ સ્થાને નાંદી નાંદે કે, જાં તેના દિગ્ભાગીઓ કરે છે કે તેણું કરું અનુભૂત નથી. આ ખૂદાખૂના - પૂરુણાં સરેરંગ, બાધુરતા, જાયુદી, અનેઓ અને મહેસુલાંના ક્રિસ્ટસા ડેર્ના ચોપે ચોંકુંદ હે. જાડી આત્મની તો જનેદી કારચારાના વાસુ જન્માં કરે છે, તે તેની નેધિયા આપોણીમાં આભ્યાસ કરે છે. જોટલે તે કૃત્ય મને તેજ્ઝી હૃપાવવામાં આવે જાં ખૂબથી રાકાં તેમ નથી. એ કંઈ વાફને દીક્ષાઓ આપોણાં આવે કે તેનો મોટો કારણ હેચારુ, મેચારુ, કરુંબ નિરીદથી કંઈએલો દાય છે. એટલે તેનો ખાડું અનુભૂત સમજાની મુદી નોંધવામાં આવે છે. આથી આમા ત્યાગીનોનું નહિ, પણ જોઈયાનું ટેણું મોદું ચીનાથી જામારી સમજામાં બાંદરક પરિણામો આવે છે. આપ સમજ કાઢો કે ઇથ વર્ષ હેઠલાં દીક્ષા આપનારાનીની જોટદી સંખ્યા હતી તેના કરતાં દાંબણા ખંચીનું વધારે રહ્યું હતું છે, જોયો દીક્ષા કે છે, નેમાંથી અનેદી દીક્ષા કોઈની પાછ હરે છે. તેણું હારણું આત્માધારાથી કરતાં પેર કરુંબ મારેન દીક્ષા કેનારાયોને મોટો ભાર હે. જોટલે ચોડો વરાત પણોને નાશ ફૂટે છે, આ વર્ષ પણ તેણા દિગ્ભાગીઓ સમજે છે. જાં જોયોને પોતાના ખુશીઓની ખૂબ લાગત ભેનેન, કરણાંની કે, જોયો તેના ઉપર કંઈપેદો કરી બોકોને ધર્મનું નામ આગળ કરી કિંધુ રહ્યે હોય છે.

निरोधिणा ऐसे ही अवश्यक दीक्षाना किमालीयों के प्रभु के लिए है कि “सुवर्णदेव साधु संस्कारे उत्तरी प्राची योगी प्रयास करे छे” यह तेमनु कठेतु तप्त भोक्तु के; मात्र तैयारी की आवश्यकी दीक्षा अनेक साधु संस्कार याते जगते प्रतीपुर्ण मान

के, तेव साचा त्यागीजीने अभाव शीर छोड़ दे, परंतु प्रश्न-  
मकालत उच्चवाच कहा जाए। तेव हृषा भूषा केव आवे-  
तेव स्वप्नहताथी बर्ते छे, तेव के आज्ञा। तेव अग्रीजाने  
भूषी नाभवामि धर्म अभवे छे तेवा, सुखारो लुप्तारो पुण्ये  
छे, जेटले साचा त्यागीजीनी कङ्खना जागे छे, अने कङ्खनी  
हेठी जेवा गदात्मजिनी लज्जट स्त्रीरे छे—अदीना पह  
जेवानी नहि।

વડોદરા નગરપાલી ક્લેન પ્રેસના આડકા મણી વિશેધિષ્ઠે  
એ અણ બીજાંથે છે, તેણે સાચે હોલ આ પ્રમાણે છે.

પડોદા શહેરના જ્યું દળનું આમારું સેક્રીટિસ કાણ  
માનુસની વસ્તી તેમાં તેતાલીસ દળનું કૈનો આદ કરતો  
પાકીના વીસ કાખને સત્તાવન હુલારમાં ડેઢમેંગ વિરોધ નથી  
ફ્યુ મૈન, એટલે નિષેષ લાદ સહાતુભૂતિ સમજાય. હેઠે  
તેતાલીસ દળનું કૈનોમાં ઝોગો અને ડાલો નિરોધ છે. તે  
નોચુંચું

શુદ્ધાનીઓ કરુને તરફાસ કરવા નીતાપેણ કરીએ નાથન,  
અગેયાં દીક્ષાના હિમાપાત્રી પરદેશોળોજ વિરોધ હેઠાથી  
તેજ બીરદીએ ગમડે નગમડે હ્રી લેખિને હ્રી ભલ્યાણી તારે  
અને કાગળો મોકલ્યેખો તે જાલ કરીએ આગણ ખૂબી એ  
ખ્યાલી, જા વખતે વડોદરા રાનાની કૈન પ્રલાનો વિરોધ  
કે તેને દેખાવ કરવા અગેયાં દીક્ષાના હિમાપાત્રી પરદેશોળોજાં  
ઘડું પાછા લેખાં  એપાણે? ને "મહાભાસાની"  
વડોદરા નાનાની કૈન, પ્રલાન નામની એક હેઠાની નીખી, કારસ  
ભાજવનોને દરદ ખેલ્યો, તેનું નાસીલાસ થતું પાશરદર રેઝાં  
યાણો રેઝાં વડોદરા ચાલ્યાના ગમડે નગમડે જોકાણ્યા, પણન  
શરેતે અંધેંબા પોપટાંની પેઢ જણી ઉત્તરે લાંબી તે નામના  
નામનો લાર કે કાગળ ન્યાયમંત્રી ઉપર જોડાયે તે ગિયાયાંનોં  
ને શૈલીન ખખર હોય છે કે આ નામમાં કૈનોનું પર છે કે  
નહિ! કે કાંસેં પાંસદ નામનો, આંકડો રણું કરેવાના નાનોએ  
કે, તેનું ડેંડ નામોની તો કૈનોનું ખરજ નથી, ત્યારે ડેંડ  
નામમાં એક, બે કે પંચ લૈન ધરેની વસ્તી કે, તે ખ્યાલ  
અવળું સમજાવોની, અને ન સગાજે તે તેમના નામના લાર  
આગણ પાંસદીને અચ્છાંસો પાંસદો, આંકડો જલાશવ તે આ  
સિનાં ને રહેશેમાં કૈનોની મેહી વસ્તી કે, "તો કૈનો  
નાનોએ કે જાહેરિની અનુભૂતિ કરું જરૂરી મેન્યુનાંના એ

वरदेव्या के अनुसार ये संभवना नाम ठगारा मासकालापन था।

बड़ोदारा शत्रुघ्नीमां, पठोदारा, पाटखु, नवसंस्तीरि, अमरेशी  
सिंधुभूमि, उलोक्ष चेतशाह, विसनगद वज्रे भेदा शहेत्रागां जग-  
जग अंदर दग्ध लैयेतीवस्ती। तेमां यहु तारे एक आनी  
आग अपेक्ष दीक्षानो हिमाली, बेट्टे तेनो अंदर आनी आग  
तो निय धनी तरहेखुभांग आमदानोमां को से हडो लैयेनी वस्ती-  
वाणा गामी छे ते तरहेखुभांग हेवाधी, वो याकाशाङ्क न आवी,  
जटखेवा लांग जैक्या पांच लैन धरेती वस्ती छे, तेवा गामेना  
नामेनो हुरुषेंग 'करवानो परहेतीजो क्रमभूमि छे, जातां अपवृ-  
जेम भानी लालोंके डुलेजोजे निरेख इयो छे तो रवेदारा  
शत्रुघ्नी ओडवीस लाल भाषुखनी वस्तीमां पैदरुकड़क डेगवा-  
इलो वर्म, गोटवे छालखु द्वीत ग्रामदानोमां लौटी जलापते  
धर्मना नामे जोही दीत लजेत्यरागां आनी द्वेष अवां तेनो  
अंधका मुख्योंते जेही नवु दग्ध गालपाप।



बहुरिंध संघना नामे के रमत रमाइ छे, ते तो सागरकुना कडेहा मुख्य एक आरक, एक आनिक, एक साधु ने एक साधा एटेसे बहुरिंध संघ आवा बहुरिंध संघना नामने आगला करी, सभीने नसाडनामा लेगो। पानरेखा छे, तेहा साधुओंके उपाधनी आर लिए। वसमां तेमना अडेतोनी लाजरीमां साव. करी भेड़कापेका छे, एटेसे ते बहुरिंध संघ डेवडो छे ते समझ शाप छे।

वडोहरा राजनीती क्लैन संस्थाओंना नामे के विशेष देखकामां आये हे, ते लेगो तो समझ रमाई उ तेमानी आर संस्थाओं तो आवृत्तमा केना आगमनी छे, लाजीनी नरेका, लीज, संभवपुर, चंचिर ने आरअंडा केवा आमडांगानी आजी रही, पाठ्य, प्रेलाल, लायी ने झोप्ली संस्थाओं। आ प्रगाढ़ी नीस संस्थाओंमां सभीने असुपती पालायांगो, भागीत गुणांगो, साधुओंमें उभी केवी दोसापटीनी राखांगो। विशेष डेखकु लेनी संघना नथी ते केना हपर वडोहरा राजनीती क्लैन तेमना प्रतिनिधि तरीकिं वसन मही राहाप एटेसे ते पछु आली देखाव पुरुलिं छे।

साधुओंने विशेष समझ साधाप तेहो छे, कारबु के तेजोमां केवा। आयोग दीक्षाना हिमापती छे, तेमाने आ निष्प्र खुचे तेम. के, कारबु केवा, चेताना भेड़ने हुक्के अडेह, शेट्टो तेहो। विशेष उरे तेमां नवाइ नथी, तेहो प्रभनी। रक्षण आतर विशेष उरे छे, तेम ने क्लेहामां आवेके तो तो, नरों हक्के छे, तेमाना आयेवान थी। आमयन-नक्क तो तो सुधी कहे क्लैन डेवडो नरों अभी ते कर्तु पडे तो पछु पाप नथी, उने तेहो अवाज़ अमलमां मुके छे, तेहा दाखला तरीके वडोहरा न्यायमनी साथे वातमीत करता तेजोमो लखावेल ते “महे दीक्षा लीधी त्यारे वाली-गोंगो इन्हो वेला डेवडो आशरो लीधिलो, छतो नारीपास थेलो,” प्रयं लक्षारी आतु लुकु नज, वाला वेले, परंतु तेमना विशेषत अमाढ़ी होइ राये ए अवाज, जेह छे, आकी साची वात, तो एवा छे के छावना गिर्खसरिजे, तेमने भागीरपक्षामां दीक्षा लीधी, तेमो वालीगोंगो डेवडी इन्हो लीधिलो, लीधी सागरल वरस होइ वरस संसाधना सुध मोमारी लीक आर लवेसार, फासे दीक्षा लीधिली, छतो सत्तपे छेही उप डेवडी असात वात वाप छे, आ तो आपारेवं वात छे, लाजी चापिशो मुंगी नामयामां सागरकु प्रभावात छे, एटेसे तेहो आने तेमना आये वालानारा लुम्बारायुन। करे तो तेमना द्वावना धधाने घेड़ा गोइँ।

केवा वडोहरा राजनीती प्रन नथी-पडेशांगो छे, तेमानो विशेष पछु नक्को छे, क्लेहुड वडोहरा याव ले कापहो घडे ते तेनी प्रनने आयु घडानो छे, नहि के अन्य प्रननो, जां डेवड, कड़वा आतर आयोग दीक्षाना हिमायलीजोनी भेड़ली पर नामता मानवीमो भेड़न ननी देवराहिं उरे छे, असे पछी लालिं अद्वाने अराय।

हुवे आ निष्पनी तरेयेनो विशेष डरेहो। तो वडोहरा राजनीती एक्विस लाप अन्यामीथी जाकु-वार छलर भाषुओ सिवाप सारीषे प्रन तेनी तरेयेमां छे, केवो। विशेष उरे छे ते अद्वा गांडवा आयोग दीक्षाना हिमापती क्लैनोउ छे।

( असुपतीमां ४२३७ हिपर लुओ.)

## ‘धर्मप्रिय’ने ५८५२!

‘कैन जगत’ना छेकींग नीचे बोकाने

हुधे रस्ते दोरवन्वानी आए।

हमारूं डेवडो समयथी मुंगाइ समाचारमा धर्मप्रियना तम्भुसयी क्लैन जगत वामनार डोप आइ पड़ामो रही। डेवडी वेरसमन देवावे छे, जे के आनो जवाज देवा बीन लेही छे, छतो पछु जनता क्लेहे आर्ये न होरपाइ अप ते आए केंद्रीक लम्हु आजमणी ममलु छु। लाइ धर्मप्रिये चुपाइ समाचार ता, ४-५-२२ ना आडेमा क्लैन जगतना देही नीचे समाचारों घेवों संभेदोनी तेमली इहिंे समाचारना करी छे, तेमां डेवडी क्लैन असत्य अने अर्थ सत्य बीना रुखु अरी छे है, क्लैन नाम धरावो फ्रांचपक्क शप्स अंतु न अणे, तेमां आजना दुवानो गाए भाइ धर्मप्रिय बोने छे के “आजे सामाज रीते आपाया मुनानो-मार्थी डेवडाहिनी भेड़ोहाना खुलु नियिन प्रकारनी जनी जाइ छे, समेकन रुख आयो ते तेमां तेजो तत्त्व विधवा विवाह, डेवडल भक्त, दीक्षा विशेष, अवा देवावे जेमी लावे छे, अने ते एडे का लील रीते प्रसार क्लावे छे, आवा देवावे असार वाप छे त्यारेक तेमने परिषद आनो साचो सतोप वणे छे।”

आर्थ धर्मप्रियनो आ आद्वाप तहन निर्विक छे, डोप पशु पुक्क परिषद विधवा विवाहनो डेवडल पसार अरों नथी, आनो समाचारमां-विधवानो प्रश्न सञ्चारो अन्हो छे, लगभग अमार लाप क्लैनी वस्तीमा देहेक-लाप विधवा अने तेमां पछु अरों अर्थ आग विधवानु प्रभावु समाचार पासे निकाल भाजे छे, तेमनी आसे आक्षिकिना सापन नथी, साप संचोगो-संबन्धी छलन गणी उडे तेच डेवडल लातना प्रपल करवामां आप्पा नथी, आ समाज गाए क्लैनरीभी अरों जनाद छे, आ विधवाना प्रेमने कुपक परिषो तेमन जेमेको घेहे छे पछु तेमां सहजता मणती नथी, जुहुगांगो पूर्व आवा लेखोडा जे समेकनना अर्थकिंती-ओने आवा आकरावी घुके छे है, समेकन या परिषद्वे आ प्रश्न पडेहो ज भुक्तो पडे छे, विधवाने कुनर्वीन उत्तरानी छु आपायां आपाता डेवडल सुचानो लहर गाने छे, परंतु तेमनु लाण लक्षुर अप्प छे, आग लेवा छतों पछु अंतु ते कुचानो विधवाओंना मुनर्वीन डेवडा भाजे छे, ते कुचानोने अन्याप डेवडल लजावद छे, लाइ धर्मप्रिये समाचारु लेहिंगे के आवो जोटो प्रभाव लुप्त हाजे अभी क्लैन तमाइ डेवडल साप्त लिल नहि करी दीक्षा। लेवदल अक्षयनी आपातमा पशु तेवाज गपाहो दांपत्यामो आवे छे, कुचानो कहि डेवडल अक्षय लेहो भनसुओ छोरी नथी, अत्वार लुधीना तेमना वक्तव्यमां आ आपात क्लाव लुप्त नहि लेहि शकान, लुधी डेवडल गाए जे लहर भाजे छे है ते द्रव्यनो भील जिलगहिरामा विवाहो लेहिंगे, मुंगाइ लेवा चहेरामो एक भविमा लाजो रुपीपा लेहो, शेहो अने अवो लील रीडेटीमां पक्षा हेप छे त्यारे मुंगाइनी लहार भील भाइरो लजावदा आवाने लजावदि वर्डी रद्दा छे। डोपल्यु

जातानी भवस्त्वा नयी, आवा भविना अर्थोऽकार माटे हेवलनी रकम वपराय तेमां सु ऐहुँ छे? औजुँ ज्यां हेवलनो पूर्ण अरावो अच जोगे के, तेवां स्थानमां हेवलनी आगडाना के सावनो छे, तेवां क्लपना सापारायु आतामां लाई जावानी संघ उरे अने तेवां सापारायु आतामां लाई क्लपामां आवे तेवां लाई जातां पर्यन्ति रुपडोने जायतु नथी, अने तेम ते जायतु नेवे के, आवां हेवलना बाक्षणी आगडाक्षां आवी? आग लोडोने असलय असलय आगडानी डोपे छडरिए गढ जातवो के? ते स्थानमां आगतु नयी, नीज आगत आच धर्मप्रिय दीक्षानो निरोध जावो के, आ वात तहन क्लंश के, तुक्को वार्चवार कहे के के, अगे दीक्षाना निरोधी नयी, परंतु आवे नसाडी, अगाडी, संताडी, विहन लाई के नाना आगडोने भुक्तामां आवे के ते सामे जावो निरोध के, अत शोषण ज्ञव संघ अने बालीनी आगतुर्वक दीक्षा देवो हेव तो तेमां तेमो ज्ञवे निरोध नयी, ज्ञां पृथु छेहुँ के तुक्को दीक्षानो निरोध करे के के सर्व सामे पूर्ण उडाक्का ज्ञानार के, आग यमे तेहुँ तुक्को सामे आक्षय प्रेक्षार कार्प क्लपामां आवे तेमां अपेक्षां गुरुजोलु छेहु जायतु नयी, आग सुक्को सामे ऐहुँ प्रेक्षार कार्प क्लप क्लपां आच धर्मप्रिय तेमां जावो गुरुदेवो अपेक्षां दीक्षा अक्षय तुक्को समाजो तो स्थानमां सारी सेवा अग्नामी रुद्रो, पक्ष आवा भाक्षसो नाटे जे आवा राज्यी अस्थानो के, क्लरक्को तेमां आगडाक्षां ज्ञाना उपर होइ के, आगत जातां ते जावे के के—

“ कैन जगहाना हेव फलीना सभेक्को, येदा सभेक्को लगोरे के कोई असाव ते सक्खा सभेक्को लगोरे जावा यावडाने भारी जे आस सम्बन्धा के तेमधु वडेवाना दीक्षादोही ओझेक्को अने जेवान औजुँ प्रेस्त्रिएनो ज्ञव निरोध कर्वो लेहुँजो, ओझेवार जेम भारी लाईको के दीक्षाना संगोष्ठीमां छाइप्रिय भुक्तामां समय आवी भेहोरो के तो पृथु को प्रतिष्ठाप अले कैन जगतु पेतानी देवी झूके, जे अतिनिष्ठानुक्तानी सत्ता राजसंवेदाना ज्ञायगं तो नज ज्ञव हेवी लेहुँनो, ” आना ज्ञानामा जायतु नेवो, के संघसाता लेवी डोह वर्तु अस्तित्वमां नयी संघसाता उपर अपेक्ष दीक्षाना दिमायतीजोजे तराय गारी के, संघतु ज्ञापाराय विशिष्य रुद्र-अमुँ के, सौ स्वतंत्र के, डोह डोहने कही शहे तेम नयी, साकुमो डोहानी सत्ता रुद्राक्षे जेवा सभेक्को नयी, आवी परिविष्टिमां छेहुँ के “ कैन जगतु पेतानी भेव अले जे प्रतिष्ठाप भो? ” जे जनानाने कैतरेवा अरोङ्क, के, आवा भीमा रुद्रोही लोपायवाना ज्ञानाना वही गमा के, कैन जगतु पासे जेवा कह असा के के आवा रुद्राक्षी साकुमो, उपर ते अकुमा अमी शही हु समाजना रुद्राक्षांद भाक्षसोने विनति इहुँ हुँ के जेवा जाना भीमा रुद्रोही जावानी लागामां न इसाय, अपेक्ष दीक्षाना दिमायतीजो होइ प्रपलो, लडेवाना दीक्षा ओझेने रुद्र क्लपवा माटे डोही शुक्कपा के, ज्ञां तेमां ज्ञाना नयी जेवो धर्मेज समाधानानी वातो करे के, आगर्वानी वात तो जो के के आ लोहा ज्ञानानी उगताने नामे डेवण दीक्षा ओझेने रुद्र क्लपवा मधी रुद्र के, शु ए लोहट रुद्र वाय तेमांक ज्ञान सेवा सभेक्को

गेली के? आने डेसरीपालु ग्रहरवु जेवा औजुँ पृथुमे प्रश्नो ज्ञायन सेवा माटे ज्ञां के, ते तरह ज्ञान सैमी (?) तरीके पेतानी जातने ज्ञानानाना डोह भवु भाक्षसो अंग आवा छान कार्प के, आ सु भूखवे के? तेवो ज्ञान सैयनो नामे जनताने डिपा पाया नेवो के, आवा निर्वाच ज्ञान भाट ज्ञानसत्ता कानुन न घटे तो राजन पेतानी हृज भुसे के, जेम डहेवाय, प्रलग्ना डोह पृथु सउवा अंगीनी ज्ञानानारी रुद्रपानी हृज के, आग दोह जानतोनो विचार करी वडेवार राजन दीक्षा ओझेने धारप्रेष्ठीमां दाखव करे के आपसपके के दीक्षा ओझेने अस्तित्वमां आक्षय जहल हु नामादर अीमंत आपक्षावाद सरकार अने तेमाना आगलादर वर्षनि अन्यायाद आमुँ हुँ, अने विनती इहुँ हुँ के डेटलाक धर्मीष लाक्को अने स्वायोध सपुत्रोना यथराटो न यथुक्कारतां आप आपनी हृज भालने ज्ञने,

आगण जाता धर्मप्रिय ज्ञेवाल सभेवानना प्रमुख शायुत लीबाद वीरवाद औद्धारा वडेवानांसी दीक्षा संघवेना तेमना विचारो ठांची जाताने के, पृथु तेमां तेजो ज्ञव आव छे, प्रमुख लीबादसभ छहु के के “ दीक्षा जे आवो आनंगी अर्जन के, तेवो धर्मेजेज ज्ञवो लेहुँगे, शुक्क हृदयी, निभावस हितीयी अने पारमार्थिक दिहिथी जेक्कन ज्ञी तेमा निभाव-जावो घटे के ” प्रमुखना आ जान्हो तहन जान्हो के, परंतु शुक्क हृदय अने निभावस हित अवायो? जे शुक्क हृदय निभावस हित अने पारमार्थिक प्रियोज देक्क ज्ञव ज्ञात तो ज्ञैन समाजानी आने रियत के ते छर्तां कैधक ज्ञुली छोत, आने शुक्क हृदयने अल्लो भेवो लहुप ज्ञां के, निभावस ज्ञिने अहो देहे देह, धुम्पो अने भगतलु ज्ञानान्य नाहरे पडे के, अने पारमार्थिक हुल्हो अहो न्यायाधिका वाचारे ज्ञायु छे, तां आपा अक्षो अस्तित्वानी जानान क्षां रुही? ते सिचाव धर्मप्रिय सभेक्को, परिहो अने डान्हरन्सो तरह नापसंदी लाहो इहे के, सभेक्को परिहो अने डान्हरन्सो भानन होहो लेहुँगे जे जनता रुप विचारहो, लेहो ओट्टु ज्ञायतु जही सुमलु हुँ के आवा असाय संभाषण्योथी जनताने जायतान रहेहुँ—

—शुपतलाल अर्पेलाय डोहारी।

### लाभ लेवा चूकरो नहीं।

पंडित हीरालाल हंसराज तरफथी प्रसिद्ध यथेलां  
तमाम ग्रंथो दिवाकी सुधी

अर्धी किमते मलशे।

ता. क.—आजारांग सूत्र उपाय हो तेवी अवीं किमत समजवी नहि,

लहो:—पंडित हीरालाल हंसराज,

जामनगर,

## अयोग्य दीक्षाना भूपरमां

वेष्ट-२४. भूपरिकाल हुलबूद पाठ्याचाणा.

[मेंड तरट वेष्टामां आणी ता. १५ भी जे भगवानी घारासामां 'सन्यास-दीक्षा नियमक' अंकृत आवधाने के, जेंनी तो याची घारीज रही छे, एटामां अत्यन्त अवैक्षण असौं अयोग्य दीक्षानी आहतिभा ढोगाता असू कळू उिसा वेष्टामां आगेपाठ्यां अने के.]

### भाषा सांकेतिकृत कळू भूत्यु.

आचे वेष्टामां, घारी अने घारामां खेरे खेरे आ याची अंगराध रही के?

"याचे ऐ घियारी घार वर्धनी भाषा सांकेति रेलना पाया नीवे ते शीरीते आवी गई?"

"शु घियारीने अंतर्गमां कैरहु दुःख ते नहिं लेय?"

विक्रम लक्ष्मी ठेठीने वेष पहेलाची नसाठी मूर्तां आ घियारी झुक्की घेड.

कागरकूने घारीमां घारान नाखी दगडां दमजां एंडी-मेंडे खुडगानु भयीन रहे कैरी के. "हांगी खुमारी जमधु रेमे" जेंना आडे घारासामां अन्हो नदी आरा. हेंग मारे सागरकू अने रागविन्याशांचे घमघाड तो घयीषे कडी, परन्तु ल्यारे एम लाडुं कै-हायित, घारासामां पाय नाही थाप, तो पाय आउकावाच सुरक्षारी घुराचा काही हडवानी के, जेंटीने वहेला भेंडे खेते तो घारीज, त्याचे आधिगांग नाखीने ठेठी तो याची ने ठेठीरो तो ठेठीरो, के दाय आण्या तेना नाही अद्दो देवतानु रहे कैरी दीडूं के, परन्तु असि स्वरू बर्जीयेत, तो वाक्याने सागरकू झुकी नाही तो. के भाग्यसु अति आडो अने जे, ते नीचेन पडे के. सागरकू अति रिक्ष-सोना पायनु लाले प्रायितान न देप, जेंना आडे एंडी घियारी आर वर्धनी भाषा सांकेतिकृत रेलना पाया नीवे आवी ता. १३-३२ नी सुहुवाहे घीकाल अने समायां देशननी वयमां भूत्यु थाय के.

आ दुष्प्रवाप कळू उिसो यांबंगतां अने तेनारे पाय इचारी दूरे के, गरनार आजानी लगकाम एंडी वर्धी पहेलां मूर्ती नाखचामां आवी हुती. ने वणते तेनी कैंपर लगकाम अजिपार वर्धनी हती, अस्तो लगकाम आर वर्धनी हती. आ एंडीतीनां नाम झुक्की हुतु, जेंना घियानु नाम अंडलाल अने ते रहेलासी अडीना.

आर आवेली वात प्रभावे ता. ४ ती रात्रे घारीचाणा विक्रम लक्ष्मी ठेठी वसन्तीने रात्रे उपासामा खाचाठी रावे ने शेवे वाय गृही नाख्या. ने ५ भीनी रेहावारे वेष परेयाचे. अने 'वसन्ती' नी सुखेलाचांशी अनावी ठीपी. लगकाम १२-१३ वर्धनी ५. एंडी, लेहिंगां डोलाकल थें, आ काप्यी सागरकूने शेवक साखांनी अंगठा गेपरा तरट विकार करावी दिलो. (ने ५ आ साखांनी सुरत तरट अचानी हती, अस्तो ५ कागरकूनी सचारी घारासामा घडी सुरत तरट तरट कुकुरकूनी हती, परन्तु सुरत तरटीनी कुकुर अंगठी सो-ना. [वज्रमानानो अन अता गेपरा-घोडोह तरट रवाना करी.) परन्तु इमासीले पेहेला उिसो घीकाल मुक्कम दीरी भील उिसो रहेले विकार करती आग्मां उिसनी

### भार वर्धनी भाषा सांकेतिकृत भूत्यु.

थाप के. आ कळू उिसाची यारे तरट लांडाकार वर्तांड रही के. जेंतु युत्यु अने ते रीते अने ते कारणे युत्यु होप, जेना उपाख्यामां अभने उिसाची लक्ष नदी, परन्तु अतावें आवी नांदी-नांदी आणांनी घुर्णानी, अने होड-होड करावतानी ने खुन सागरकूने लाभी के, ते तरट तमाग वेडा विक्रम वरसावी रवाना के.

### पात्ररनी ऐ आणांनी मूर्ती नाखी.

उिसो झेत्यु उिसो अने के जेना ऐ विक्रम विक्रम-लेवां-लेवां-उिसो उपाख्यामां घारानी ऐ आणांनी मूर्ती नाखचानी पाय उिसो आरु वली. ठेठीरा ऐ फै-फै. २-५-३३ ना उिसो पाठ्याना घेवलवाल विष्ववनवासनी ऐ आडीजो आवेली; जेंना उंगर ११ अने ११ वर्धनी हती. नाम जर्जी अने केन्ता.

आ एंडीजोनी-तपास थांवी भील उिसो रावे आडीना उपाख्यामांची भाषु अंडेली रितिभा गती. घुर्णी प्रमाणाने अते ते जेने ठेठीजोने भध्याचिंगे जेना पिताजे पैताला कूजो दीरी अने ते पाहरे लाव्या.

ने फै-फै उिसो सागरकू अडीना न हुता, परन्तु तेना आवियाच्या तेननी संचाल प्रभावे आ युकुं कालनु रवाना कता: "अने तो कैरहु अजर नदी. हुं तो बडीदरा दो." जेंना कैरहवाई अने, जेंटी भाईरा पहेला घोडा गता दो, तेपछी तेने अजर दो.

उिसो उिसाच्या विपर्या कैने सुमारे सावधान यांनी लक्ष दो.

अमे प्रायसांना उिसो अने सुखारा घेमी सन्मोरे पाय अडीना कैरी अंडी अंडी अस्तारे निवासगाळमा कैवा देवा अत्याचारे येत रवा के ते तरट आप अवश्य घान आपडो. कैवा के आगरक्षाच्या घेमी ठिकारी कैवा के विश्ववनी वावाना? कूलत आपा अत्याचाराने सहन कूलता तेपार नदी हुनिया सांसुं सांपुल भाजे के, हुवे अंद्यापुं घी अने कृष्णलांगां ताम झुकुं पावते तेम नदी, जेंतु अन्युया जाती आगरक्षण अने शामिन्याश्च कूलता जही आवी आधुंगी. कैवा सुधी अत्याचार मृदी रवा के, जो आपाना अन्युयामां आवेला अनेह उिसाच्यामां उिसो अपैक्ष उिसांनीने विवाही आपा के.

अमे सागरकूने भाव एंडीजंग अज्ञावायुं के गहारा! दो याकु युकुं के. कैनेसमालने युत्यु पापना जेन्नगां न नाहो, पापना प्रायितो न भावुग डेंडारे लेगवां पापडो? कैनेसमालनु आटुं तो अपेक्षात येत रुदूं के, कृतु कृतु अपेक्षात रवाना घोडुं के, आसाहेव, अभने आवा पापाच्यापोधी अग्मावो! अने जेने सत्यर सहस्रिं आपो!

સાગરજીની ગંડારાણી

શાંતામૃતી મુનિ ગાહારાજ થા હંસવિજયાળા કિંબ  
મુનિશ્રી દેવતવિજયાળા રિખ મુનિશ્રી ધર્મવિજય તા. ૫-૫-૨૩  
ને મંગળવારના પ્રભાતે વૈઠારથી અધ્યુતી ફેલાક પુરણી  
લેના માટે જોથેબાબા કાઈ રસીકાલ વાચિકાલને સાથે લાઘ  
મયા હતા. પાછળથી અદ્દીની થી હંસવિજય હી માધ્યમી  
બાલ દેણાલાલ માસ્તર પર્યા જયા હતા.

આણી ગાળ પછી ભાઈ રસ્તીકાલ સાગરજી પાસે જાય,  
ત્યાં સાધુઓ તચ્છ્વા ખરીદિનાને—એવું જિહારી, ભટ્ટાચારી  
કોરે અભિમાનજનક શરૂઆદી શરીરદારાં આપત્તા ભાઈ  
રસ્તીકાલ ઉડી જાય હતા; ખુલ્લાંના સાધુઓનાં જાના  
અપ્યમાન જનક શરૂઆદી શરીર કાંદું થાંકડા જરી હતી.

मुनि धर्मविजय पासे ओड लाई आपी तेमने कडेला  
है-अभीस भाटे पुज-परफ करी कती. तेनो ज्याद आपनाथी,  
ते अष्ट एक साधुने सामग्रीहाना सुमाराप्रभाथी लध आन्हा,  
ते साधुओ आपी, हैरण्णीक पुरवार करी आपवा ताराथी  
इव्वा धर्मविजयक्को उक्केता, धर्मविजयक्को रीतसऱ्ह लेखीत  
दीते काळावर्क करवा जाऊँगः योताने शेकडविजयी, अल-

( અનુસંધાન પુ. ૨૨૭ ડિપ્રથી )

ଶ୍ରୀ ପାତ୍ର ବିଜ୍ଞାନ୍ୟ:—

જાર જાર વર્ષથી તેણે સમૃદ્ધ અનાયી મજબૂત ફરવાના પ્રકાળ કરેનાર તેણો આત્મા શાયુત મોતીયં હસાઓ એ વર્ષની લેણે જગતોએ રીતખલાયી આપણું થા મહાવાર વિદ્યાલય આધીક રિથતિ અણે કાણ ટોટોકનિના પખતલાંથી પસુાર અછ રહ્યું છે. આમને નવાં તો મેળ કર્ણે છે કે કાળવાહી કર્મીદીમાં વહાનો, બન્ધાડી અને કાળવન ઘરાંનાં સલજાનો પીચાએ છે, જ્ઞાન ગોક મોતીયં હસાઓની જેન્દ્રાલરીમાં આવી રિથતિ ઉછ્વા ભવા પામે, જ્ઞાન હોઈ નહી આપણું. એ નવાડ જેણી વાત છે, એમે તો માનીએ છીએ કે એ કર્મીદીમાંથી જોક નહિ પણ જોક મોતીયં હસાઓ અછ રહે તેવા છે. જ્ઞાન આ પરિસ્થિતિ જેણી જોગ કરેવાના જાપ કે પૈથાનાથી અરહન હુંણી કરેવાની ફોડને કરેમણ નથી.

ता. ३०-४-११ ती क्लासीजे, आर्थिक रियलि अंगे  
पुण वर्षी कीने विवार्थी लोन अंगे विचारका की विवार्थी  
योगे उपर शेंडीवीजे के सरकारुल भोक्ताजो उ ते समाज  
इसी वापाथे लोप तेम लावे के, तेमाने की मुद्रारू वापाथे  
ऐ, तेवु अभीजे नक्की झुट् नथी, जोड्ये ते वापाथाने  
सुधारावानी गडू छे, नहि तो तेम जोडा अर्थ वाचा संखाल  
छे, भारत के अभुक्त वर्षी खुल लोपी आपेक्षी जोणावरीजां  
जेम हैदराबाद-बडोता नवी, तेवो लोनाने आरसो छे, जोड्ये  
दाव तो ते वापाथां वहु न उत्तरां सैने विनायके डे  
आपाहु विचालनी गवार आर्थिक रियलि भाटे तेनी  
गेनेश्वर अभीजे नामो, धार्यक्तोजे, विचालन प्रेम प्रेम  
घारानार लैन मजलानो, विचालनी आर्थिक रियलि तुम्हा-  
रवा प्रयत्न आहारे अने-पेतानो येत्व इशो विचालने  
गोडीची आपे, तेम विवार्थी अभुक्त वडक्कर कीने येत्वा  
भाटे वाहारी गद्द येत्वाप तेली भेणीने विचालने लेटेली  
गने तेली गद्द झेवे, विचालने गे लैन समाजतु नाह छे,  
तेवो भुक्तेव रियलिथी अचावी लेव ए झेव लैनी इत्तर छे.

આરી બેઠે બાજું કહેવા માટે લેમણે (ખર્માવિલાકૃત્તે) તે સાથેને કેવો આપી જાયાયું કે “હું એકવિલારી નથી, પરત આવી એવી કીતે હેઠાં તે ખાં માટે આપણી નથી”

બ્રહ્મ જાળુણે સાગરનાં દુષ્પ્રેષણ કેટલાક ઢાકશાળો એવા કરી ધર્મવિજયપુર ઉપર પદ્ધતિનો માર્ગ વાચાવાની રાખીની દ્રવ્યમા ! એકાધિકેને સૈનાફેને અને તેના રીતે માર્ગ વાચાયો. પરંતુ મહારાજ ધર્મવિજયને અભિવૃતી વાપસવાચી શુરૂઆત ઘણ ન થતી સામાન્ય ઘણા યાદ, માર્ગથા ડિઝિનેડેલો એને મનુષ્યરાણિની અનુભાવી શેડ  $\times \times \times \times \times$  ધર્મવિજય પર્યા પદ્ધતે આવી જઈ નિરૂપ કરી જવા જાળુણું. અને એ ઉત્તીવાના તાપના હિસ્સ, હિંદુઓના ઉલ્લંઘા આરણું, આવા પરિસ્થિતિ વચ્ચે દેમને રાણીના ધર્મવિજયપુર ઉપર મણે છુભવેલે થવાને બાધ લાગ્યો તેમજ અંદર કોશ થાણ એવો એ પદ્ધત્ય જીતાયો તેવો એકાંક પડેલું ધર્મવિજયે કેલેકના, નિમિત્ત રૂપ નહિ અન્યા સાંચના સાડા છ બાગે નિરાર કરી, નિભામુર્ગા આવી માદાહિના તિવાધ્યમાં રાત આણી જુદ્ધથોરાસને બડાદરા આવ્યા.

पैरमहानवना योडा नीमे अर्था आनारो, आवी दीने मतुभ-  
लना। इदं कुदाचि लाप छे, ज्ञान देने वधिला गेमधारा। योपी  
भातेला चांद बनावे छे, जे समाजे सजावतानी जड़े छे,

## પરીક્ષાનું પરિણામ.

શ્રી બાળિન વિદ્યાર્થિ, ખાટથણા પ્રથમ વર્ષની પરી-  
ધ્યાંભાં રોજ વિદ્યાર્થીઓને કલા, તૈયારી નીવેણા પાસ આવા  
એ. ગુજરાતી, તથા અંગ્રેજ નામું, અંગ્રેજ, હિન્ડી,  
ગુજરાતીના અધ્યાત્મ વિષયે હતી.

४५८

	ફોર્મનામાં નાનાંદ વેરી	૧૭૧૩
૧.	આમૃતલાલ મળ્યુલાલ શાહ	૬૬૭
૨.	અમૃતલાલ મળ્યુલાલ શાહ	૬૬૭
	બીજો વર્ગ	
૩.	માણિલાલ મનસુપલાલ શાહ	૬૩૬
૪.	કુલાલાલ મળ્યુલાલ કલેરી	૬૩૩
૫.	માણિલાલ કલેરીંદ શાહ	૬૦૬
૬.	શાન્દલાલ પેટલાલ ગલરી	૫૮૭
૭.	મેન્ડલાલ નાનાંદ શાહ	૫૮૮
૮.	જીલાલાલ ખુલાંદ શાહ	૫૮૭
૯.	રમેન્ડલાલ મળ્યુલાલ શાહ	૫૮૩
૧૦.	આમૃતલાલ કુલાલાલ શાહ	૫૧૭
૧૧.	શાન્દલાલ જગન્નાથ પર્ટિન	૫૪૨
	સાસ વર્ગ	
૧.	ચાપુલાલ ફેલાલાલ શાહ	૪૪૭
૨.	જીલાલાલ અધ્યાત્માલ શાહ	૪૪૫

ଶ୍ରୀମଦ୍ଭଗବତ

ડોલેરનો રેણ લવાં જાણો પ્રવત્તિ હોય ત્યા રહેણે જાણ,  
અકરીર અને ડોલેરથી રીતે નુકશાની ન કરે જેણી દવા  
લીખુનો રસ છે. આ લીખુનો રસ ખાં તોબા હું પાણી  
જાણે. વિશકાં જાણું વાર લેવો. દોક વંઘત એક લીખુનો  
ઉપયોગ કરવો. આ દવા અનુષ્ઠાન રિષ્ટ છે અને તેથી દર્દની  
અધ્યક્ષ કાઢી થાય છે.

મર્દા અને આતી હવા અમારા તરફથી સેમયલ પોઝિટિવી માટે મોટકલી આપેલાં આવે છે.

મેટુનલાલ મળનભાઈ  
કોર્ટીનાની પોલ, અમદાવાદ.

# સામાજિક વાયરા

ગુરુવાસુ ગુરુવાસુ

વડવાસુ શહેરના, મોખાં હક્કાના ચૌતે મધ્યિલાલ તથા પટ્ટનાની અધ્યોત્ત્તમ દીક્ષાના દિમાપલિઓને તા. १-५-३३ ના રોજ નસાડાના સમાચાર મળે છે.

તાત એમ છે કે જે કાઢી હોડા માસ બાગાલિયી દીક્ષા બેના માટે અધ્યોત્ત્તમ દીક્ષાની લાલોની તરફાની રૂપરૂપ અને મોદ્દ મેળવણના પાડોયી સમાજાનમાં આપતા, અધીયી આપતી કંઈક અસર હોય. તેવામાં અધોગ દીક્ષાના પ્રઘર દિમાપલિ પદ્ધતિ રાગિનાના, વડવાસુમાં, પોતાં પણાં ચાંપાં કે દીક્ષા આપેના પીડ્ઝેસનું ડેનાયોગ હેઠાં ગરૂદી કાદ શ્યામ ને આ આપણે ઉપરદ્વારી નેથીધીની.

આ બાદ દીક્ષા માટે જાપાને કંઈક કરતા લારે વાણીએ અન્નાસ માટે દિમાપલિ આપતા, સારે જે પણ કષેત્રાને તારણમાં પોતા, આપતી અને પોતાની રીતે દીક્ષા આપાલીયું, પણ જે કાઢુને જે દીક્ષા ગળે નહોણી કિંતરતી. એટાં એક દિવસ જેની વિધા માને સમાજની નારી કંઈક પ્રઘરન કરેલ, અને અસર પણાં તિથબાનાંને અનેક વિનાશથી અરીને સમાજાલે, એટાંએ એ વધતે, નાસાદાસનું પર્યાપ્ત હુંબુ. પણ જીલેગ, દિવસે જ્યારે તેની ના અધોગીની કરવા એટે છે, ત્યારે તે અને તેના પુનઃ અધોગીની જાર, આપતીની કુમ બધા છે. તેને નસાડાના, અધોગીની દાખ પોતાની કષેત્રદીન-ક્ષમિત્ર રાખ્યાને દાખ સંબંધાન્ય છે.

અધોગ દીક્ષાના દિગ્યાવતીઓની જેના આસ-અસરને સલામત રાખી, અરે! તેમનાં અસર અસ્તુ મરી નાખે તો, શાસુદેશ કિંતરાની પાણ લઈ આપણાની દિગ્યત દાખાનાર કરેવાના ધર્મજીઓ, પારવા છાટને જતિ કરવાના પારવધા અનેલા આ વિધાન જાંકોને હુંબાળો કુણીની જો કુગલને કાલ તો નસાડાનામાં ફાન્યા છે.

સાગરણ અભિજાને છે.

પોતાના રાતનની જૈન પ્રણાના નામની આપ જોણ અની નેડેં ક્રીતીની પોતાના શાયા તરફથી તા. २-३-४ મે ૧૯૪૩ના દિવસે શાખાધારે દીક્ષાનું પણ સમાજાના રાખવાના આવેલા

(અનુયાયાન પૂ. ૨૨૪ છિપસ્થી)

જૈન પ્રણાને તો સામ્યાદું રોજ છે. કારતવર્ણના ખૂટીખૂટ નૈનોનું પ્રતિનિધિત્વ ધરાતાની આપતી જૈન સભાને તેને ચાંપાંનો છે. રણનાનારી સાધુઓને સદ્ગતીનેચેરીની આપતીની જૈન પરિહેત સંગ્રહ દીક્ષા આપ કરી દીક્ષાની લાયકાત આપે નિયમો અની છે. એટાં જૈન સભાજી નિયમો માંને છે. અથી, જૈન સાધુઓને શાંખ સરાને સિંકારે છે અને આપતી એટાંએ મુશ્કે નેન સાધુઓને અવસ્થે છે. તેથી જૈન હિત-આત્મ શાલ્પને કાલો પદણાની જરૂર છે.

આપ જૈનાના ચૂંટાયેલા પ્રતિનિધિ છે. જૈનાના પ્રણાને નિયમાની જોણે આગામીના હિતનો. વિધાર કરીને, તેનું કુદુંનો અને બહેનો મધુદીયાની અધી પડે છે તેના અસર, આતર, તેનું અમારી જૈનાના ચૂંટુ સરંખાના અથ આતર દીક્ષા નિયમને ટેક આપી જોકારની જાગ્રાની મેળવણો.

આ સાગરણ પ્રણાની મહત્વાની વધારના કરીની તરફથી જોનીની જાનના, કાઈ જોણી બે દાલર આમારણું કાડો કાદાયાની જાવેલા. તેમ લારે બત્તાના પ્રેરણમાં પણ જાહેરતાન કરી આમાર્ગણું યેવેલાં ને હન્દેનો માણસની દાંદરીની આજાન જો જોખાંગેલી. પણ સાગરણ સું દીક્ષા કરેવાના છે? એ પ્રાભ્યાન પીઠ ઉપરથી કલકરે છે તેજ કરેવાના છે. નંતુ શું છે? દુષ્પદો હો છે? તારણ શું છે? આથી પરિચ્છાને નાખું દિવસ આરથી ધાર્ય કરું આપી જીનેનો આ પ્રસાદનો. લૂંબ (૧) જાવેલા. તેમાં પ્રેરણાર હોયી. આહેં અને હેઠે લિલાં વડીંબ શીજું, નહેંદે હુંતા. આ પ્રસાદને જાહેરતામાં લાયકાત મહેનત અને અસર હીં હોયેલો. ત્વાં શ્રીસુર, સાગરણાંદ્ધણો રાખ્યાનું પ્રમાણે હશ્યું છે.

“શેણ, વરસ્યી આપી ડિમાપનાણાં અગીને જાણાપણી રૂણ અને તેની ધર્માની હોય તો દીક્ષા આપી શકાય.”

૨ સેણ વરસ્યી વધારે ડિમાપનાને જામ કે અન્ન આપની જાણાપણે અનુમતિ આપી હોય કે ન જીએ હોય તો તેણું તેણે દીક્ષા આપી શકાય.” ડિપરાંત જુલેલા સવાલીના “સિંધુ-ચીરી સેણ વરસ્યી અદરસણાણ માટે ગંધુંપ અને આવરદ્ધિત વર્તે ૧૧ વર્ષની ડિમારે દીક્ષા આપવાની દિમાપોરી કરી છે.” તેણી સાંજેનીમાં પોતાની પાંચેંની અત જાતાં. ત્યારે આપ ડેંકાંદ્યા કિંતરાં ગાધાં હશ્યું છે, જાણ જેચાંની આપેલી પ્રતાગ્નાં દીક્ષા જૈનેની આર્થિકિતાની પણ વરસ આપાસની શાન્દારાં બધી છે.” સાગરણ હશ્યું છે કે “શાલ્પારાંને સિલાંગોરી નાથ સેણ વરસ્યી સુધીની ડિમાર દરાનેલી છે, જોટિએ જાપિસ્થ વરસ્યી માની શાસ્ત્ર નહિ, આરીસ વરસ્યી માનની સેણ વરસ માનપણ. “અન્ન શાગરણું પહેલા પ્રથમો હોય કે જુદી રીતે દીક્ષા આપવાની દીક્ષાનું કે સેણ વર્પ ડિપરાને જુદી રીતે દીક્ષા આપવાના શાખાધારે હોય નથી.” નિરોપમાં જુદ્ધાનું કે “શેણ વરસ્યી અંતરના દીક્ષા લેવા આપાસનાર આંદ્રા, મૂલ્યાદા, અદાલાનાન, પદ્ધતાપને પરિચાના અધ્યાત્માન હોય છે-તેવા નાલુકારાં દીક્ષા લેવા આપે છે. પણ અસર, આ દીક્ષામાં પણ તમારી અભિવ્યક્તિને જુદ્ધિપારી તરી આપે છે, શી તમારી હિતાં. નાં, સ્વરૂપ છે, તાં જાણેલો સ્વેચ્છે છે.

“સાગરણ! ચોરી તે તો ચોરીન ડહેવાનો! પણી તે અભિજાની હોય, તેમ અપે તે જાગરે જુદી રીતે દીક્ષા આપેલી હોય, પણ તેને ડાંડ સાહુકારી તો નન્દ કરે. એ તો ચોરીન ડહેવાને જો ચોરીના ગણ્યુથી પીંબાનાનાં આ પરિચ્છાય છે!

પૂન, સેણ, પ્રતિનિધિ ને જુદ્ધાંકિતાની બાળકના પણ મહાનતાના પોલનાની જાચાનારાતીની જાન નથી આપતુ. ને આપેલે તેમ કુદુંને તે નરી મુખર્યી છે. પણ મહાનતાના મુખ્ય આપણ પણ બાર સતત અભિનું કરવા છત૊ દીક્ષા આપે પોતાની અધ્યાત્મિક જાતાં છે, ત્યારે તેનું પ્રથુ મહાનીરાની પ્રતિનિધિનો હિતાં કરતા મુનિગાલે અભીરાને દીક્ષા માટે સર્વ રીતે ચોખ્ય માની, મનોરેણ મેળવણે હુદ્દિપારી પરિશ્ચાનું પરિચ્છાનું છે।

(અનુયાયાન પૂ. ૨૨૭ B જુલે.)

## हिन्दी विभाग.

### अपनी समाजका पुनरुत्थान कैसे हो!

—शेठ अचलसिंहजी।

[बाबू अचलसिंहजीने अखोल भारतवर्षीय रूपा जैन नवयुवक परिषदके प्रधम अधिकारीजनके अध्यक्षस्थानहे जो स्पीच दीक्षी उससे उत्पन्न।]

#### संगठन—

अपनी समाजमें संगठन का इतना अभाव है, कि इससे समाज के डुकडे २ हो रहे हैं। यहाँ तक कहाँ दस-पाँच आदमी मील कर नहीं चैठ सकते। अगर चैठते हैं तो बाजाव एक्य पैदा करने के एक दूसरे से लड़ने-झगड़ ने लगते हैं। कोई भी समाज, जाति, सम्प्रदाय अथवा राज्य या ताकत वगैर संगठन के कभी उन्हिं-तरकी-नहीं कर सकती; मृत और वर्तमान समय में जो साधु-साधु और आवक-आवक में फूट-बैनरस्थ और कलह-हेष होता रहा है, उससे हजारों गुहर्थों की जैनधर्म से अद्वा हट गई है और नहीं जाय हुआ कि वे आज आर्यसमाजी आदि होगये हैं। और बहुत से भाई अभी तक धर्म-रहित बने हुये हैं। अगर यही अवस्था कायम रही तो जिस जैन-समाज की आज १२ लास की संस्था शुभार की जाती है वह धर्म-धर्म कम होती जायगी और अन्त में बिलकुल छुप हो जायगी।

समझ में नहीं आता कि जिस जैनधर्म का सिद्धान्त इतना दिव्य और नहान है कि वह स्वप्न में भी किसी से दैष करने को गहरा पाप समझता है, उसके अनुयायी साधु-आशक आपस में इस प्रकार का राग-दैष करते हैं, जिससे कि जैनधर्म और समाज की जड़ पर कुठाराषात होता है। इसे देखकर अनेक पुरुषों के जो दहल जाते हैं और बहुत से विचारशील पुरुष इसे उच और महान धर्म में पैदा होते हुए भी अपने को एक बड़ी बुरी अवस्था में पाते हैं, और इसे वह एक दुर्भाग्य समझ कर इससे पृथक होते जाते हैं।

यह बड़े हर्ष का विषय है कि स्थानकवासी समाज के पूज्य मुनिवरों ने अब आपस में नल-मेद को गिटार अपने साधु-वर्ग को फिर एक स्तर में बोंध दिया है। आज जैन-समाज के लिये यह बड़े गोरव की बात है और मुझे विश्वास है कि जैनधर्म के अन्य सम्प्रदायावलम्बी भी इसका अनुकरण करेंगे और सम्पूर्ण जैन-समाज को एक सुसंगठित समाज करा देंगे।

सब बुराइयों का मुख्य कारण आपस की फूट, बेस-मझी और ना-नवयुवकारी है। अगर जैनधर्मानुयायी उचित करना चाहते हैं तो उन्हें प्रेमपूर्वक संगठन करने की अवश्यकता है।

United we stand, Divided we fall. अर्थात् संगठित रूप में हम उभरते हैं और विभाजित रूप में हम नीचे की ओर गिरते हैं।

जिस तरह एक बूँदों का समूह बड़ी से बड़ी जोखार बौंधी का मुकाबिला आसानी से कर सकता है; जिस तरह थोड़े तन्तु मिलकर एक नज़्बूत रस्सी बन जाते हैं और बड़े से बड़े मरु द्वारी को बौंध लेते हैं; जिस तरह छोटे २ शब्द बनकर बड़े प्रन्थ बन जाते हैं; जिस तरह छोटी २ बूँदें अबाह सागर बन जाता है; ठीक इसी प्रकार अगर आज जैन समाज की तमाम विलारी हुई शक्तियों को एक-त्रित किया जाय और देश, काल निमित्त के अनुसार काम लिया जाय तो समाज का उदार होना कोई बड़ी बात नहीं।

#### हमारी संस्थाएँ

समाजों व जातियों का उदार वर्तमान समय में संस्थाओं व समाजों द्वारा हो सकता है। किन्तु संस्थाओं की सफलता उनके कार्यकर्ताओं पर निर्भर है। अगर एक संस्था के कार्यकर्ता निपुण, विद्वान, अनुमती और परिश्रमी हैं तो उस संस्था का कार्य दिनोंदिन उचित को प्राप्त होता जाता है और अगर संस्थाओं के कार्यकर्ताओं में उक्त मुण्डों का अभाव होता है, तो वह संस्था बवाय उन्नतिके अव-निको प्राप्त होती जाती है।

इस समय हमारे समाज में जैन-संस्थाओं की कभी नहीं, प्रत्येक सम्प्रदाय और फिल्हों में अपनी २. अलग सम्प्रदाय व कोनफोरेंस हैं, परन्तु उनमें से कितनी सफलता-पूर्वक काम कर रही हैं? इसका कारण कुछ तो संस्थाओंका दुष्प्रिय संगठन है और कुछ सञ्चरण कार्यकर्ताओंकी कभी है।

वर्तमान समय में गोंधाली के आदेलन ने हर जाति व समाज में कार्यकर्ताओं (Workers) की काफी तादाद पैदा कर दी है। और अगर एक समाज अपने नवयुवकों की सक्ति से लाभ उठाना चाहती है तो उसके लिये यह एक खूबीय समय है। इसलिये निम्नलिखित बातें संगठन पैदा करने के बारे अवधिक हैं—

(१) आपस में प्रेमपूर्वक रहना अर्थात् एक दूसरे की जहाँ तक मुमलों हो मदद करते रहना चाहिये। अगर कोइ व्यक्ति किसी किस्म की मदद नहीं कर सकता हो तो कह से कम हार्दिक सहानुभूति अवश्य करते रहना चाहिये।

(अपूर्ण)

# પ્રથુદ્ધ જૈન.

અમાજ, ધર્મ અને રાષ્ટ્રીય સેવા ભળવતું નૃતનયુગનું જૈન સાસાહિક.

નામનામાં:	શ્રીમતિશાલ શ્રીમતિશાલ ડેઝારી.	શ્રી ચુપછી લેન કુષક સંઘનું કુષકપદ.	વર્ષ ૨ વર્ષ, અને ૨૮ મેં.
સંદર્ભ:	કેશવલાલ મંગળાંદું શાહુ	વાર્પિક લલાલમ હા. ૨-૮-૦	શાલીનાર, તાં ૨૦-૫-૩૩.

## અંતરની વંદના.

“એ ખારા ! અટકો અથી ઓકાય થમ હું કહું શું,  
તારી સાક્ષીએ મારી એથી કુષકપદો કેઝલ અન્યાયમન હેતુની  
સાધના અર્થે બોલાવ છે. મારી પણે કેઠ નરતુની કાણાન  
નથી, એ જીતા એંધું, તું આટકું બધું સાતું રા માટે રહે  
કે ? મારા જીવનમાં જે જીપ અને શાન્તિ કેમ વસતા નથી ?”

“એ બેલા ! જીપ અને શાન્તિની વાત રાખતે કરે છે ?  
એ તને ખાંથી ચુંચે છે। તારા જીવનમાં અન્યાય અને અનાનિત વધારેને વધારે ઉભરાવા જોઈએ, મેલા કુરુનાં ભાગોની  
કાળી બાંસો દુષ્ટ જેલીએ બેની કાણ વિપ્ર આધ્યા કરે છે,  
નવાંની અને ભૂખમરી બેનાં કામદાર એંધું રૂપોની દાસીની હાર  
દુષ્ટ ડોણા. હાડીને સામે ઉભી છે, અને તને શાન્તિ શી રાને  
મળ્ણ રહેતે દુષ્ટ તારી સન્મુખજી કેટ કેટલા શરીરની ગાંધુસો  
થોડા જન્યુ-થીમિતો માટે રાત વિસ વૈબદ્ધ કરે છે, અને  
અન્યાયમાં તિરસ્કરણાના અને અભિમાનના આખ્યા ભૂજે મહોને  
અન્યાય કરી રહે છે ! આ કાશતમો આધ, તને જીપ અને  
શાન્તિની વાત કેમ સંચે છે ?”

“પણ એ આત્માને દેખે અછી નથી જાતી, જેને ટાળવાનો  
મારો પુરુષાર્થ મને વધારેને વધારેં વ્યક્ત જાનવે છે, એ વ્યક્તા  
દુષ્ટે હેઠળી રિયતિંગે ખોલ્યો છે. એંધારા, મને હું  
સેમાંથી ચુકિત આધ ; હું એનું શું ક્રદ્ધ કેંદ્રી મારો  
આ નાચ હુણ્ણો આપ્યો છો, મને માર્યું જતાવ !”

“જેનો તો કેઝલ માર્યું છે, તારું સર્વિષ તો તે એને  
અર્થી દ્વારું છે. એને જોટલેલ તો તને આદીએ અથી ચંતાય  
થાપ કે ને ? દુષ્ટે તારું કુરુની હેતું હૈ. દુષ્ટે એ જીવે તારા  
દેદની આધ કરી નાંખ, દુષ્ટે જુદ્ધી પૂરી કરી નાંખ. એ  
સર્વિષમર્યાદાને તું મારે છે તે કાઢાય આપી રહેશે. એંધા  
ચુકિતાંગી, દુષ્ટ પણ પુરુષાર્થ કર !”

આ પ્રેરણ આદ્યકુનું છે. આથી સર્વિષમર્યાદાની તરફના  
ડાઇ ધન્ય જીવનમાં પગારે છે. કેનીન અને આથી આથી  
વિચાર-સરથીમાંથી ઉચ્ચા થાગ છે. કીનિન અને વીલિન  
દોડું એરીનીન સભા માનવીની ચુલામી તોડાય કુરુનાં  
નેલાંનો. પણ આથી વિચાર-સરથીમાંથી પડું છે. અન્યાય  
સુમારું તેમને અસર જાને છે. સામાજિક અનન્યાય  
તેમનાથી અન્યાય નથી બધ રાકાદ. લેણો માનવીના માનથી  
ક્ષેપદ કુરુનાં જુદ્ધો નાણું કરવા મારે છે, પ્રયત્નમાં કુરુન  
દોડે છે. એ પુરુષાર્થી માનવજાતને આગળ લાઘ લાય છે.

આ જ્યા ચુકિતાંગી લોકાંદેના માર્યો જુદા જુદા દોય  
કે. ડાઇ કેનીન, નેપોલીનની નેમ, કાફર જમાયી, સંદ્રા  
કાંડ મંગી, મના દાય રી, એ સત્તાને એવી સામાજિક અન્યાયો  
નિવારે છે-પ્રથીના એ હિપરથી શ્રીમત અને મરીજાના,  
અમેરિના અને કંગાલના, સેવાના અને સેવકના કેવ શુદ્ધી નાખે છે.  
એને શાંકાટ જર નહિ જોઈએ, એને હાટચાચિપનિ હેડ  
નહિ જોઈએ, એને અદિયન કરીયા નહિ જોઈએ. એ ખાંથી  
એની આગેથી અદદ્ય કથો જોઈએ. અને એને રથને સમાન  
નથાને છન્નાં જરતાં સમાનન્યાં અનુભાવ હેતુ સુખનું  
સિત રેઝાનાંથી સમાન નહિ નથી નથીની રથાપના થથી  
જોઈએ. એવી માર્યો એ સાધ છે, કરી રીતે એ જને છે, એ  
એને જન ગૌર્ય વરતું છે. એને જારને હારીને લાકડે લાટ-  
કાન્યામાં સંકોચ નથી. એને હેડની લદની અંયકો લેના  
અંયકો નથી. એ ગંધું એ અન્ય જારના પૂર્ણ એક જ જ  
પરમ સાધના અથી હારે છે.

અને ડાઇ ગાંધી આપણ તો એ કેઝલ પરમ સાધના  
દેખ છે; પરંતુ એને મન એ સાધન નો માર્યું, એ સાધનાની  
રીતની એ સર્વોપિર મદરાની વચ્ચું છે. જનોમાં પ્રેરણ-સાધની  
એકજ છે. હિન્દુની ચુગામી માંથીનું અસલ છે, એ આધા-  
વાસને વધાયી રહે છે. દીરજાનોની સામાજિક અનુભાવ એને  
ચુકિતાંગ અસાધ છે. એ એ આદુલાનાના જાસ્તગાંધી ઉપરથા  
ઉપવાસ આરે છે. બનેની ખેદબસ્થાન એકજ લાગે છે.  
માનવી માનવીનો ચુલાગ ન રહે, મદાલાંનો. અને તુપાંનો  
સાથી રહે, પણ પણિંગો. અને અનન્દજાંહારોનો. માનવ જાતને  
પીકાન કેવ ખુલ્લાંધ લાય, એ ખેદને એ વરેણ છે. પ્રેરણ  
મોક્ષ છે, એનું સાધ્ય કથું એક છે.

મદાલાંજ આદે જેલી એ પ્રેરણથી પ્રેરિત અનીને એ  
પરમ સાધનાની આધનામાં એડ છે. એ સાધને અથી જાણે  
જે આદે પોતાના દેદાંથી અજાહિંણા કારી કરીને લોહી  
અથી રાખ છે. સાધની સાધનાનો એ સર્વિષમર્યાદ અરી  
રાખ છે. એના અંતરમાં નાદ જાને છે; ‘હાં તો અદદ્યનતા  
મરાયે, અને એ તો હું મરીયા’ માનવીના અનુભાવ આ  
પરિષ પ્રયત્ન છે. દૂસિયાંનો આ અધૂર્યું પરના છે. એને  
આને ચુદ્ધિથી લાખાંનું ન હોય. એને અંતરમાં વહના જ  
શોકે. અથથી અને મહામાંજના સમજાહીનો બને તેટલી  
માનન્ય-કંગાલની પ્રેરણ મેળના હૃતાંધ ગને.

‘કુલજાયાંથી’

पुरिसा ! सच्चमेव समनिजाणाहि ।  
सच्चस्स आणाए से उवहिण मेहाची मारं तरह ॥  
(आचारांग सूत्र.)

## प्रभुङ्क जैन.

शनीवार, ता० २०-४-३३.

### कुंगाल भनोदशानां आवरण

झेलन जयावनां वितकनी वातो 'असुख ना' धने कुशु  
कुमारं नथी; जोना पौडलना पुरेगामी पडला हजुर ३५३  
कल्याणां आरेयां नीपालने के; जोना बगाने साह, जोना  
सुरक्षित आवश्यने साह ३५४ तो डॉउ सद्ग्रा प्रयत्न ठेठवाना  
आवरण नथा; आवे बाखे लैन अजेवानोनी ३५५ रपाण  
के डॉउ खलं रीते ए झेलने समलवटी नायावीने बालक-  
सहुं आवश्यन रथन आपातुं लोडुंगे, पक्षु एम ३५६ ने  
गहे 'कैन जेतिना अधिपति रा. धीरजबाब टोप्पर्या  
शाह जेवा-केवा खर विशास राजी राज्य तेवा भावसो-  
इसा' 'विशाखी डेक्कन कुलक वातो साथे दगडीं भर्ता  
प्रयंड जैनभत्ते आवे रस्ते होरवाला प्रयत्न ३५७ ए  
करी वात के, जो अंक आपातुं राज्य क्षा छे.

झेलन जयावना आ उद्दिश्यांसी साराव जैन संभावां  
ले वाचायुं गेह थध के ते आवश्यनवाक के, जैन लै-  
निना तंत्री ज्ञाने भिन डेक्कन सलनना। विनीना आर्त नहि  
अरेही जर्ज घेलेहे के, जो डॉउ वरपथ्या वेप्प आमे  
सानंद हर्व अनुभावीं छीजे, डेक्कन सलननों ज्ञेन  
ज्ञावने आवश्यन आपातुं तरपत्रा जातावी ते जेप्प आमे  
र्व अनुभावीं छीजे; पक्षु झेलन जयावना वितक संकाळ-  
वाना गहे हुता ज्ञाना भावसोनी कल्पत गेप्पे उपरथी  
आध धीरजबाब, जैन जेतिना के रीते जे परतु शीतरे के  
अने अभारा क्षर आपेहा गेह ३५८, ते जेता आविक  
मुक्तये गरी ज्ञा पेहेहुं "सैन जेतिन" जोना निर्योना  
आ रीते साधने गेलानीं His master's voice अवध्ये  
के एम ज्ञाना दिना रेहेहुं नथा, जोना आ आपेहोनी गेही  
परवार पर ज्ञानभिन्नातुं छिक्कुं सातावारीहुं पक्षु कुन  
करप लाभी ज्ञाने के, आ ज्ञानेनी नीति विपे आपेहा ३५९  
कडेनामुं रहे के, जेमनी ज्ञे नीरिही प्रल इशारी नदि जेम  
आमे चोक्कुं नानींज छीजे.

डॉउ पक्षु ज्ञ नी तापात विना, निर्योन आवान ज्ञी  
"रीते 'कैन जेतिन' जेना ज्ञानी आवश्य अंकमा ए  
झेलने 'नीति अष्ट' तरीके आवेहे के, संजेवे इगारी,  
रेही कुक्का भाटे टगणांती, निरापाव झेलन जयावरताना।  
बोअ थध पडे जे परतु तिरस्ताने गहे 'डेक्कन उपालवे  
जेवी के, आपातुं गोपात्तुं वातापरथ्य आपेहुं तपासीं,  
नीतिना ३६० कवाने गहे, इंगनी ज्ञानिना गरी वासेवीक  
सुमारुक वातापरथ्य आपेहुं लेह थधमे तो नाकों टेस्तां आदानी  
आ झेलने अनीतिवान छी विजारवी न्याशी नहि आजे.

वणी कैन जेतिन लघे के ते मुख्य, अरेहीना डॉउ  
चुनीधारोंने ३६१ भूपायदीने भाण्डालरी हेखरेख राणीज  
न होती, आठला ज्ञाना जैनोनी वस्ती ज्ञाने एहे  
मुख्यम वीशाद आवश्य आपे, जेने वास्तुप्पा आपे, जेना  
पैसा संचये, जे आवल प्रेमनी दृष्टिं लेटहुं जे मुख्यम  
पीमाने लक्षितानीप दे, तेहुं जैन वाचतो रामावनारे  
छे, ज्ञाना अनुभवी नेहावारी विपे अमने शंका नवीन;  
उपहुं जे निरापाव, तरक्कोजाजी, जासे कमझी रहेही विष-  
वाने पक्षु विशास उत्तम फग्वे तेहुं वर्तने जे बाहुदी वेगता  
पुरवार हरे के, ज्ञाने नेह मुख्यम पराप्रिय डॉउ रहे; अने  
तथा ए झेलन ज्ञानने हापमने भाउ मुख्यम ज्ञानावी आवश्य  
आपे जे आवश्य नवीन, वणी ज्ञानेह वितकाना विटगाप  
रहेही झेलन ज्ञान पक्षु चुरकिन आवश्यने अवावे ते कैन  
समाजनी ज्ञाना प्रतेनी गेहरारीने ज्ञाने धर्म पद्मो  
जेनो अधिक विशास खुमावी हहने मुख्यम धर्म आवश्याप्तजे  
धर्म आवश्यने जे शार्त्वा जापाना समाचार ने वावतो  
होत ते असंज्ञित भानी नदि रहे, जा विवाह-सत्यना  
पाया पर आमे अनुभाव होरेहुं, जेट्वे ए झेलन मुख्यम  
ज्ञाने ए लेहुं राक्ष ते वेगामे दहुं तेहुं तेहुं शहर जा  
बधती वेला पक्षु के.

वणी रा. धीरजबाब "पक्षीह ३६२ पर वेते नवी नक्ता,"  
जेकुं कही तपासनी ज्ञानावारीभावीं मुक्ता ज्ञाना चाहे के,  
पेट अस्ता, धूधावारी साधनो तरीके पत्ते आठनारे प्रल  
पापेथी इंडनी कही दृष्टिं आशा नभी रहे जे समाज्युं  
क्षप्तं के, प्रल ३६३ आपे डेक्कनीभाव डॉउ उ-निर्योन  
सेवा प्रेमीजाने, आकृतिगाना साधन तरीके पत्ते आठनारनी  
साथे प्रलने भाव आवश्य रांभूप दे, जेहोने जमे तो ज्ञानं  
आकृत थाव, जेहो ज्ञानी रीते रणवानी दृष्टिं पत्ते आठनारे  
प्रल पापेथी इंडना स्वप्नां सेवनां ज्ञानी इंडना करी लेहुं  
भूर्जता अरेही के तेहुं नहि ३६४. न भावे ज्ञापी डॉउता  
मुख्यतानी आवश्य नहेही के.

अमने आध धीरजबाब पाचायपुर भल्या लता, अंगत  
वात-ज्ञेतिनी आवश्य लहुं "असुख जैनना तंत्री जे राष्ट्रम  
करी के" अंग अभी ज्ञाननां लेह रस्ते होरवाला भावे  
जे आम जा गाहे डरुं पडे के, जो जेव समरयो मुखेल  
के, जो लगे के तेम रा. कैनीवाब भज्यावाली पालयपुरवाणा  
झेलन ज्ञानाना डेक्कन आजे अरेही ज्ञा नहेहता, जो तो  
ज्ञा दाता ज्ञानावाली तिवेक्यूद्दृष्टना दर्शनावी, "मुख्यमाणांज्ञानों  
जधी वात ज्ञानी नाभी के" जो जाप्ते मुनिभी तिवेक्यूद्दृष्टना  
हेहे रेहेहुं नहि, आम ज्ञानी रा. धीरजबाब विशामक परतु  
उनी हरे के, जेहुं राक्ष नहि पक्षु सात ज्ञुही वातो ज्ञानावी  
झेले के, आभारा शहावातना प्रलयो, मुनिभी ज्ञाने के अने  
संपूर्व राजानुति द्वावी अविभावां आ प्रकृत्य अभी  
मेहेहुं अमने भगवान्नां भवान्नां ज्ञानी वासेवीक  
राजावाने ज्ञाने ज्ञानी विष्वावाने ज्ञानी विष्वावाने ज्ञानी  
ज्ञानी विष्वावाने ज्ञानी विष्वावाने ज्ञानी विष्वावाने ज्ञानी

आ गधी गधी ख्याली एक हुःअसरी विष्वाव ज्ञानी  
ज्ञानी विष्वावाने अनेह गतभेहा ज्ञानी विष्वाव ज्ञानी

## સમાજ-વિશુદ્ધિનો સોનેરી કળાશ

નાથ અણુ વર્ષ બાળો કે પદ્મલી છલપણત રહ્યું રહ્યી હતી,  
સારાપે જૈન ચામાજમાં કે પ્રાણે ઘૂંઠ ઉંડકાણતા<sup>૧</sup> ગવાયાને  
હતો, કે પ્રાણને મુણાઈ જૈન મુખ સથે ચામાજક વિશુદ્ધિની  
સાથેનોંના ખેલ દ્વેષ અથી પ્રબૃદ્ધ અગ્રાર કાદરોં હતો, તે પણ  
દુંગે અપરથીત રઘુષ એકો હે, જો જૈન સુમારું પ્રેર પરમ  
ઉંડકાણક વસ્તુ હે. તે સ્વધારોં જિના ફોઈ જૈન વિચારવાદીને  
ચાલ્યો નહિ.

યાગનો જમાનો છે ધર્મ વિશુદ્ધિનો. કે માત્ર ધર્મની હોથ એ ધર્મની નથી. રથૂલ આઈનોમાં અને માત્ર અધ્યાત્મોની જ્ઞાનસા પર રચાવેલો હોથ એ ધર્મની નથી. મધ્ય મુખમાં બધાય લિન્ડુ ધરોમાં સઢો પેસી ગેંદો. પાણીઓની જો જો મર્ભના રૂપના પર ચીટુકી ફેલા અને એક સેકા પર મદર્વિ હ્યાનાટે હોકે મર્ભના એ પાણીઓની પાપલીકા પરની જરૂરના ખેંચી લીધી, તેમનું ધર્મ વિશુદ્ધિનો જી ભારત વર્ષની સાક કરો. મર્ભનિ હ્યાનાટે એ કેવા નૈન ધર્મની જાહૂને રંગ્યો હતો. તેનું કારણ કે જો કેવા નૈન મર્ભના ઉપરેદ્ધિયાં અપ્તા પેઢી ન હોતી. પણ કેવા ઇન્કાની ‘અદેશ્લો’ના જાપાન કરવાની ડેવના જ્યાયાયોગ્યે મજાગમાં દાનીકરણ પ્રયત્ન આહી, અને રંગમાં સીટ રીજિસ્ટર્ડ કરવાના પ્રયત્ન માસેટુલાર અદોરીઓને મર્ભના ચઢો કરવા માંગ્યો. પરિણામ એ ‘આન્સ્ટ્રુ’ એ પર

બેદો કલે હોલું; આત્મા વરસુના નિકાયને મારે વિચારણા  
કલે લુદી હોલું; જે ઝેણનાં ગતાવદા અપથે કલે લુદી  
લુદી રીતે પ્રયાસ સાર્વિને પણ સ્વાર્થી પ્રેરિત ભન્દવતાના  
હેતુ પણ, કોઈ જા આપી વરસુના ગીયાચું અરી  
દશ્ચિં નિકાય કરવાના પ્રયાસમાં સામે જ્ઞાયનાને અધ્યક્ષ જે  
પ્રયાસનેં તેણી પાડી અધ્યક્ષ જ્ઞાની નાંબે જે અસ્કલ હે. આપણ  
ધીરજાપણે કે રીતે જા પણ વીધી નાંખ્યો છે જે જેમને  
જરૂરનાંનાં હેતું જેઠાં, કોઈ ધીરી કંગાલ મનોરદયાના  
આપરણીથી જે અનુભાવેશા ન હેતું તો જોમણું આપણ નજ  
કરું પોતું જે વિષે અમને રાખું નથી.

આ વિનાય વદોળ પરી પણ બહેન જગતાવી સમરપાન  
નાન શાલેમાં જીમની જોગજ સમાજ પણે પદેવી છે. એ  
ચુમચુયા હિંદેખ ભાગે છે. અનેક જગતાવે ‘અષ્ટાવારીની  
બહીમા’ તાતીઓ અગોયાર પુછું પરી પરી સહાતુભૂતિ  
વહી સામાજિક સહકારથા માર્ગે છે. એક જગતાવી સંગરપાને  
ચિહ્ન કરુંનો અધ્યાલ્યારી જગતાવેનો કિંદાર કરીને એ  
નિર્વિનાન છે.

આને આંકુલાના સ્ટાર્ટગની પાછળે શબ્દાન્ધીપણ કાયારેલા નરાધમો રહ્યા મેં સમાજે ૨૫૪૭ તિરનેકાર દર્શાવેલો જોઈએ છે. આંખ જાલાને લંબે ઝુંબો ને અંગેઝ વર્તેન ચલાવી લેતાનો ખાત્રાંતો તમે હેઠળને નહિ, તો શબ્દાનોની આંધી જમાતને આપણે હુદસેલી શરીરનું એ વધી કર્યાએ જલાની દેશું તો, જેણાની હુંઘું ભોડાની દેશું તો, કૈનુનની મંજુરે હૃદયમ આપણાને મુખ્ય કરું જાને ચિન્હાં અનેથો આંકુસમાજ આપણામાં પૂન્યતાનો ભાવ પ્રદાનાં આપણને ઉદ્ઘારે કરું.

परमां तकरारी देखा थाई, बाईं आई, पिता पुन, मां-हेनना  
सूरजन् लहुना सांखें तूपवा भाइया ने ग्रेवेक धरमा ग्रेवेली  
उत्तरी अधैरी फडेही कैलै सभाजनी ग्रेवतीना नवाप  
किए पर देखाए गाई,

શ્રી. મહામુખાલાઈ સુનીલાંબે આ સમાજ વિનેફર ચાલ-  
ખાળુંનોને ભૂસના પહેલો પ્રયત્ન આપ્યો અને એવી તો  
'આગમુખાલાઈની પ્રવૃત્તિ રહ્યેને પૂર્ણ ધમાસ ચાલી'. મુજબાત  
આ સુનીલાઈ સંઘર્ષને અનુસૂચિત કરેલું હોય આંગ વડો-  
ડારા રાખ્યાને તાણે. તો આ કથના પોકા ખેંચવાની નડોદારાની  
ધારાઓનાં, શ્રી. સલુલુબાઈ ડોકોનેનાંથી આકારે એ વર્ષ  
પર 'ધર્મરૂપ' આ 'દ્વારકા' અનુભાવના નડોદારાની ધારાઓનાં  
એક પ્રસ્તાવ રખ્યું કરે. એવું તે પણ એ થયો નહિ. એ એ  
એની આંતર આગમાં એ 'વિષ લુક' ખૂબ છાલ્યું, જીવિષ  
અમેરીકામાં એ ગુંગામને જાપાર સહીંગે. પહેલાં આચારો  
દોટો, તેની લાલુ કે કુન્યાનું થઈ. ધર્મને નામે, એકોનો,  
દેખાતાંનોને, અંખે અખાળુંનોને, એ ભાખુંનો જ્વાલાંને  
લેખશોલાયી રહે કરે, 'પેસી કોઈના મચા નથે'; એંધે ધાર્પદે  
ખાઈ આછેને વૈચારી જોણા નડોદારાનીઓને એ વ્યાપાર  
પાછાને જીમની તંગાન સૌપ્તિ રોકી દીખી. શૈરીઝોના, હુંટન  
ફાના, અધ્યાત્માના ક્રીન ધર્મે આગાહી કર્યાનિ  
ન જોણ હોય તેથી કરના ડિસ્ટ્રા જેનના માંડા, નિરાધરનાના  
આગડા, લાડાદેલી પ્રિયતમાંનાના પતિઓ, સમંજના, આશા  
આપતા સુનીને, 'એથી' લઈ, કર્વાણાયીથી સુક્તા અની;  
આથી નીચાના નેંદ્રાયા હામ - હામ હોસે રહે બના, અને  
સારોને ધારત વર્ષમાં આ નાનાસાંદોણે ક્રીન ધર્મને દીલીતા આશીં

દર્મ વિશુદ્ધિના પરમ પ્રેરક મહુપિ દ્વારાનેના  
સર્વ સંયાત્રાવ સંક્ષાર પુન છે. એમણે પ્રલાના  
સુખી જીવનના વિનાશનો આ ડેલાલાલ સાંખ્યાઓ  
ને મહુપિ દ્વારાનેના જીવન અનેરા એમને આ  
પાખંડ રેવા પ્રેરી રહ્યો. એમણે જેક અમિતી નીમી  
રાજ જાહ્યારુ જોવિન્દાઠો—અમિતીનેંક નિપોઈ પણો.  
અને દીક્ષા નિપામક કાનું ફરજાની સુધેની કરી. વીઠિંગ  
થર્મની હુકોનેંા હુકાનાદારોના ખાસ બંધી ગયા. પણ તેમણે  
શુદ્ધિ આપતો અસ્પષ્ટ રૂપ “શરીર કરું”, એવુંનીંા પ્રદર્શની  
અંતો અને સુખી સુમારી અવિનય બાર્ચી અસ્થાકારેની દરમાઈ  
પણ દર્દી. પણ જે લોકો સર્વ સંયાત્રાવને સંગતનો  
ન હોતો. સર્વ સંયાત્રાવ એવી નિવિદ્ધ ધર્મકીર્તાને  
સ્વસ્થ હૈથી વોળીની ભી જાય એલાલા કાપેલ પુરુષ છે.  
આ લોકોની સ્વાર્થ કરી રમત સમાંની રોકે એવા એ  
વિચક્ષણ પુરુષ છે. નક્કમ અલો કામ આગળ વધો ગયું,  
અને રાજ તરફથી દીક્ષા નિપામક કાનુંનો અરદી ખાચાસભાગ  
મુક્કાનો આચ્યે અને પ્રસાર થયો.

સરે સયાંદરાવે આ રીતે કેન વર્મની આ સહીમાં અમૃત એવી સેવા ભલવી છે. કેન વર્મનીમાં છેદલી પણ્યાચીનાં પોકા પાપને જેમણે આ રીતે અસ્કાયું હૈ. જેમણે બ્યાંશા શરીરી છે કેન વર્મની વિશુદ્ધ જેવાની! જેમણી એ આશા અમૃત રહેણું સરે સયાંદરાવનું નામ સ્વાપના હેઠામાં અમૃત રહેણું।

પદોદરા રોટેન્યુ આ પગલું 'વીલ' રોટેને અનુસ્તિ ત્રણ અને,

સન્યાસ દીક્ષા નિયામક એકટ.  
વડોદરાની ધારાસભામાં ઉ વિરુદ્ધ ૧૮ મતે પસાર.

( કૃતી હૃદાસ. )

માનુષની જોકો.

સંનામ દીક્ષા નિપાત્કાં નિજગ્રામાં મુશ્કા પર આને  
વાણીનાં ચાલુનાં છે જોણી અખર. આગામાથી હડી મળેલી  
હેઠાથી ચર્ચા સાંભળણા અને પરીબ્રામ જાણુના માટે આને  
જૈનોની હાજરી વિશે જાણુંતી હતી. એ કાલે રાત્રે ચચું  
સંભેદના મત જેંબાન માટે પ્રયત્નો થાણાના સભાચાર મહિના છે.

પ્રભુને કાગળખાડી હીનાન શ્રી રામલાલ દેખાઈને આવી શેડક લેતાં કાગળખાડનો આરંભ થયો હતો.

सन्यास दीक्षा नियामक, नियम.

સન્યાસ દીક્ષા નિગમણ નિષ્પત્તનો મુખ્યદો નવાગમની  
શ્રી. મુખ્યમંત્રી રજુ કરેતાં જલાયુદ્ધ કે આ મુસદ્દાનો પટિકાસ  
તમે અધા સારી દીવે જાણો છો. શ્રી. લલતુભાઈ કોણોરમાઓને  
આ વાગ્યાત રજુ કર્યું હતી. આ જાગતની અધ્યો થાંદે છે.  
આ સન્યાસ અગત્યાનો છે. આ મુસદ્દાનું નાગ સન્યાસ દીક્ષા  
નિગમણ નિષ્પત્ત રાખવામાં આવ્યું છે. ગુણ મુખ્યદો પ્રયત્ન  
થાં પણ આવેલા પ્રયત્નમણ નિપે તપાસ અધ્યાત્મ ચિર્યાઈ  
કરવા રહ. ના. બેનિદામાણના અમૃતધ્યાં નીચે એક સમિતી  
નેમાઈ હતી, સમિતિને આરીકાફથી તપાસ અને વિચાર  
યાણ્યો હતો. તે પણી મુખ્યદો પ્રયત્ન થયો છે. આ મુસદ્દાને  
કૈનોંના બાંને અણાણાંત અધ્યાત્મયો છે. લે કે મુખ્યદો પિંડ  
નેને પણ કાઢું પડે છે. ગુણ વિચારના કૈનોંના લક્ષ્યથી  
કળગમણ ૫૦૦૦ તારે આવ્યા છે, કળારે નચા વિચારણાને  
તરફથી લગેણા ર૩૦૦૦ તારે આવ્યા છે.

નસારી લગાડીને અપારી રીકા

ક્રિ. પુરુષદે આપણા બાળની જાગ્રત્ત કે કૈનોમાં નસારી ભાગનીને દીક્ષા આપવામાં આવે છે. એના ટેકમાં ટેકમાં દીક્ષા આપવામાં આવા હતા, તેમાંના વોઝ જોડા માટું પડતા હે. જ્યાં નાના આપણાને નસારીને દીક્ષા આપવામાં આવે છે તે વાત ખુલ્પાતી શકાઈ નથી.

શ્રી. હુરભાઈ તે પછી કુસુમનિલયણ ગાડે ડોર્માં અથેલી ઇવિયાદ અને તેના આતેલા પરિધ્યામ વાળે કંગાણથી ચિનેખાન કર્યું હતું.

સુરત નિરી.

શી. હુર્દેરે, જાણવું કે સરીરનું હિત જાળવાની રજૂનાની કુરાજ હૈ, તોંક પ્રલાન પાલણ જગ્યા હૈ, અને સરીરના હિતને ગુંડાળ પહોંચાનો આમ હિતો થાપ છે ત્યારે રાખ વાયો પડે છે, સરીરને કરાર કરતાંનો કે ગીરીકંઈની બંધ-અઘૂરી કરવાનો હુક નથી તો તેને તાં મીરીકંઈ ઉડાડી હેવનો કે ગીરીકંઈ છોડી હેવનો હુક હોયો જોઈનો નથી.

આ હાજરો વિશેષ કરતો હૈ. વિશ્વાસ કરે (પાટું) બંનાયું વિશેષન કરું હતું, આ સમયે કો. ત્યારામણી સારેને વિશ્વાસ કરાઈએ હેઠળીં સમાલૂપ આપી હતી.

શ્રી. લલદાનિંદા. કથાવને રેઝિયના

શ્રી લક્ષ્મુખાઈને જાહોયું કે સાધુઓની જમત એકારી-  
કોને હેઠળને માટેનું અનુભૂત મળશે અને બેઠિયાં માન

भगवान् धर्मादि सम्बली अपि लय है, यह जोड़ा यह  
अंकुश मुकुटाली वज्र नहीं है। कापाता सामने लौल रही यह  
बीज छोड़ने वारी वें कठ नहीं।

શ્રીઠાક સાંકુચિનોંજ ખણદળાં.

શું ક્રૈસ્ટને પેતાને આ કાવ્યદમાંથી જાતચ રામયાની મંજુષી છી કે? આ સચાલ તપામણનો છે. આ પાણત સીધી પઢેલા મેં ખાડાસાં સુમજૂ આંશી છી તે વળતે ખાડાસાં એ ભાગમાં વહેંચાઈ ગઈ હોતી સરકારને આ પાણતની જરૂર જણાતો તેથે પેતે હુમ્લાં આ મુખેં આપણે છે. એં વીચાસ કર જણાયે છે કે ક્રૈસ્ટને આ કાવ્યદાની વીજુદ હે, પણ કું જે પ્રેરણમાંથી આનો હું લાંઠા કૈનો અને પીઠાનો તો આ કાવ્યદાની તંદેખુમાં છે. અનીરાં દીક્ષા આપ-નારા સાંસુંનેના જોડાયાએનો એ વિદેશી ઉપાદી લીધી છે. ડેટાબાદ જગતયાંઠી માલુકો સંપને નામે વીરાષ હૈ છે. ડેટાબેં ડેટાણે તો અલ્લાં સમજાની સીધીઓ વેરાપ છે.

ન્યાયમંત્રીના જીવાચ.

—નાયામણી થી, ચુંબકે લે પણી જગતન આપણાં જગતનાં  
ખુલ્લું કે સંભેદીને ૧૪ સંજીવ નાયાકોના જનનાં પર નાયાખર  
રાખ્યો છે. સાધુઓને એવાખાંમાં આનંદ નથી, જેમ થી  
વીધાદાર કહે છે પણ સાધુઓ હુક્ક હતા. અને તેમણે મોદા-  
સામાં આપી રહકરે નહીં જાણ્યો નાર મહીના તપાસ મુલાલી  
રાખનાની નાંગશ્યુ કરી હતી. સંભેદી એટલો વખત બેદીની  
શક નહીં. સાધુઓની જગતની બેદાની સમૃતીની છમણ હતી,  
પણ સાધુઓ આનંદ ન હતા.

તેમણે તે પછી શ્રી. મહાનારે રવાળનો દાખલો આપ્યો  
જાણ્યુ કે તેમણે ગોરી વાયે દીક્ષા લીધી હતી. અને તે પછ્યે  
સર્વાંગાની સુભરીયા દીક્ષા લીધી હતી. સર્વાંગને નસારીન  
દીક્ષા આપવાના જાત્યા જાણ વધી પડવાથી સરકારને આ  
કાંઈકો બાબતો પડતો હો. શ્રી. લલટુલાલાંને તરફેખુંમાં બધું  
કહેલું હો. એટલે અને તે દીક્ષા રજુ કરવા માંગી વખત દેવા  
માંગતો નથી.

સાધો ઘરાણી ૨/૩૨

તે ખણી આવે કાંઈ ઘરનાં જરૂરનાં તરેખાનું ૧૮  
અને વાર્ષિકમાં ઉ ભત પડતાંની કાંઈ ઘરનાં દરખાસ્ત  
પણ ન થાય છી.

અનુભૂતિ કે વીજે જાત હાજર હતી.

ଶ୍ରୀ ପାତ୍ରାନନ୍ଦ ପାତ୍ରାନନ୍ଦ

શ્રી મેમનું અભિજ્ઞાત હૈ

અને પ્રીતિલિંગ મૈયાંસાંગે હતે

આ પત્રી તે હશે ઉપર કલમવાં અથવા અનુચચાગાં આવી હતી, અને તોણ અને ચોથી કલમોની નિયમ સુધીના સાથ બીજી અધ્યી કલમો જોગે જોગ પસાર કરેચાગાં આવી હતી, અને એ રીતે દીક્ષા નિયમક કોઈક ર વિશ્વ અને ૧૮ માત્ર પહેલીઓના વાંચનમાંથી પસાર થયો હોના. આ કાપદોના અનુજુ જરૂરી અગત્યાં આવ્યે, તેમ તથાસ કરતો જાયાપ સે.

**જૈન જ્યોતિની કુટીલ નીતિ.**

जेंड पवार नवाजर भटी ल्यारे पक्षावार अने छे, त्यारे अने तेही असाव खीना रख्यु कर्नी ढोय तोपछ्य ते अस्कोतो नथी; त्यारे येंड पक्षने जे अने ते कासेवी चुनाम जने छे, त्यारे खीन पक्षने डॉक्टर पछ्य दित किलारी खाइताने प्रवालन न करे तो ते ने साध्यापा खेतानी नातिथी छलो. आधे छे, ते साध्य चिक्क अद संकट्यु नथी, आधार्य लैनु क्षेत्रितु पछ्य कोयुक्त अन्यु छे. तेहा अग्रे अपार्क्कि संकटम हारन्युक्त लाल्याप छे. ऐर? जे संबंधी लाल्यापाने अल्यारे अभ्यासी जराये उद्देश नथी, अल्यारे तो ते आपार्क्को तेहे प्रकृह कैन अने तेना प्रतिनिधि उपर डॉल छे के एन तहान अपर्क्क अने संतवी वेगणा छे, ते संबंधी जलतामा गेत्यमन न हिलाप ते मारे खुलासा कर्वो. अपूरी छे. कैन लैयेताना तंबी तरक्की पैसापाना अंडमां आधा जलावनी मुखाहातवाणा लेख्यां सात मुख्यां उपर आर रह्यो लाल्यामां आप्यु छे.

“આ અથ્રી વાગ્યના સતત મુદ્દાને તારણી જે આંધુરીએ  
અમારા ઉપર અનુભૂતિનો કુન્ફો કર્યો છે, જે કંઈક અધ્ય-  
વાળા મુદ્દા તારણ્યા હોતું તો અને તેનો સહર્ષ રાણીનું કર્યો  
હોતું: સતત મુદ્દાઓથી ખોલ્યો મુદ્દો “લીલા એસાચા નહિ  
પણ દ્વારાઓસાચાણ છે,” જે આપણ જે કે “અનુભૂતિનોની  
અભીજો” ને કોઈ સંલગ્ન નથી, અટા અમારી પ્રતિનિધિયો  
નોટેની વાતનીતિમાં જે નાકુંઝે લીલા એસાચાણ  
હોયશું. એની મુદ્દાની કાઢનીની કે લગે અતાંહેલું છે, તે જે આપણે  
કહ્યું નથી, પરતુ દ્વારાના કોઈ નન્દન ગમદારનું પરણ્યાની  
વાત કરી લાલી. નીચ મુદ્દાના જગતની બાધાનાં રાણીની  
હત્તા કે “એ સાસહે જેણું નથી.” મેંથા મુદ્દામાં ઉંમર  
અંગ્રેજી ગજિતાની તરફ અનુમાન નાંદી બાધની ઉંમર  
અન્યથાં વર્ણની છે, તેમ સિક્ક કર્યાનો પ્રત્યાન કર્યો છે. પરતુ  
નાકુંઝે લીલા એસાચાણ વર્ણની ઉંમર અતાંહેલી, તેમ જ્ઞાતાની  
મુલા દેખેમાં જે આંધુરીએ કૈન વાતિના તરીકે ડંબા  
ઉતી તપાસ કરી હોતું તો તથા અસત્ય આશ્રેપ ન કરેત.  
“પ્રશ્નું કૈન” ત૦૦ ૩૨-૪-૫૩ ના અચ્કડા ‘અનુભૂતિની  
અભીજો’ એ હેઠળ નાંદે પૃષ્ઠ ૧૬૬ ઉપર પેણી કોષભગમાં જે  
અંગ્રેજી જન્માયું છે કે ‘દુર્ઘટી પોડાની જીં’ લાઘ વીચ  
વર્ણની હોચ જ્ઞાતી, ત્રીમથી ચાંચિની વાગ્યાતી! આ મુલાના  
સંખ્યે લખતા જ્ઞાતી પણ આ મુદ્દો કેમ તારણી કરાડે તે  
સમજાતું નથી. દસ વર્ષના દીક્ષા પર્યાયની ખીનાં પણ કર્યોણ  
કલિષણ છે, કારણ કે તે પાછાને કહેલું હૈ લખતાન નાંદુ  
પરસ્પર દીક્ષા જ્ઞાતી. જ્ઞાતાની મુદ્દાની ગીયાં હંગામાં જાને ચુની-  
લાંદુનો ઉપકાર જર્ણી દાય હતો તેમ ઉલ્લેખ કરેનાં જાયાં  
કે, પણ પૂર્ણ બાધાનાં મેરીએ જે સંનંદો સંભળેલા કે “મારી  
દેખરેનું પોતાનાના એક મુસ્લિમ રાખે છે.” જ્ઞાતી મુદ્દાનાં  
દેના ઉપર કેદથી હું સુધી મેદાનાર રહે છે, જે અનુભૂતિનોની  
અમારી મુદ્દાની ડિસે હોલે. અને એ ડિસેથી પ્રેરણનોન  
અમે પ્રમાણિકરણે એ કેખેણે સ્થાન આયોજુ હતું.

ઉપરોક્ત મુદ્દાના તારણું ઉપરથી એમ જન્માય કે કે આંધુ  
ધીનાંનાં અરેણી ગ્રામ હતા, પરતુ પાઈ લિંગ વાતાવરિનો  
પ્રસંગ મેળાયો હોય. તેમ જન્માયતું નથી. રથાનિક અંગમાના  
કેદાના સોભાગ્યના અદ્દતો પાસેથી અર્થ સત્ત હુંકરો મેળાયો  
બાખ્યાનું આયું છે, આ સોભાગ્યના અદ્દતોને પણ અમારા  
પ્રતિનિધિયો મણ્ય હતા. તેમાંના એક અંદું તો કુચક સંખાના  
સેટાંથાં હુંમન કે કે. કુર્ચાં સંધ જાણથી ગમે તેનું  
સાર કામ થતું હોય તે ન યાચ દેનું જેવા નિષ્ઠાના  
છે. અગામાં કાને ચૂંધ્યો નોંધારાની એ આંધ જાયાપદાર છે,  
જે આંધ એટેલે સુધી જોખા કે કે “જે આંધ કાલે વટલાની  
સોધ તો આજે અલે વટસાં, અમારે કૈનોની જસ્તાની વાયાની  
નથી, અમારે સો સગિતિખારી કૈનો હુંતે તો જસ્ત છે.”  
આંધી મનોદ્યા સેવનાર એ કાણાનું હાથ નાંદ આપણું કનખ-  
નાંદ છે, અવિષ્યયા એંદ્ર કેનાંને, તે સિવાં સુનીલાદીની તપાસ  
કરેલ ખ્યુ તેણે સિરોદી નયા હતા. ત્યાર અંદી મીયાયને  
મળાની અમારા પ્રતિનિધિ જેવોસા, તે વખતે તે બાછાંને ફેટલોં  
અંદી જારીની વાત કરું પણ મુદ્દાની વાત ઉપર આપતાં  
યેવાં કે “તમે એ જાણની અર્થ માટે એ વર્ણના, મહિને  
દરા લેણે ૨૪૦” ઇથીના જેણે આપીએ તો એક એ મહિના  
પણી એ આપુને સમગ્નાને તગારી તથી મેદાનું” આ  
શબ્દો સંલગ્ની કેંદ્રીક રાંડા થઈ. ઇથીનાની કેમ માંચણું  
કરેનાં આંધી તે તો આંધ ઉકાં કેદાયોં છે.

એ બાઈને સારા સંદેશોમાં મફતી તેના જીવન સુખારની અમારી પવિત્ર મુર્દુષ હતી, અને છે. તેના સંબંધમાં જલનાને

च'पूर्ण विभास छे, ते सिवाय के जेवल निहारी भाषुने थाथ  
तरीक्की चीकरता नथी, अतः तेमाज आधा लेवामां आवे  
छे, गे घटनाची-पाणी कोई लंबड़ा मुराह द्योप तेव लज्जाप  
छे, तिप्पुरुषिलु जेवा जेवल निहारी संखोने के उल्लेख  
हरयोे छे, तेवले लुस्तुमिति जातावे के, के लाई-धौतिं-  
वाधावो नीतिमो परोडा थोड़ा छे, तेवा टुकुमां हुमधार लप्पु  
छे के सोसायाना बाढुनीने लोडे ए-आध पूर्ण-वारभगमाना  
सेवन उपर रथा, डोडेहसना प्रमुख शिरुते हेमर्द रामक्षने  
दीक्षा चांधीने द्वाय न आवे ते भाई ते चमलतवा अपेक्षा,  
आवा अने आंखु दोलकी बांधता उपकार उपकार-डेक्की  
विभास राख्यावे, जे जनता रथां संझावे, आधान जातां  
मेज लेवामां प्रमुखामा आवेली 'कैनू ज्ञोतिनी अमरामा' के  
हेठीज नीतीनी गोडनो ज्ञापाता, जोवा शान्ते वाप्यावामा  
आध्या, छे के जनता अमधारामां पैडे, गे-आध-ज्ञापावे के के  
"अमारा नेवा-हेठ पूर्ण जनता पूळीक्का, हेड उपर नहि  
मजलार सामान्य द्वितिना आधासने गेवी, इक्कमर उक्की  
पडे तो ते द्वितीय लेखाम," उपरना याहामां के आध  
वाप्यावा भाजे के के, लुक्कु लुस्तीक्का, हेड उपर-जानतो नथी,  
जे वात तहत असल छे, अमे आवी-पूर्णक मानीनो  
छाँचे के प्रमुख अने पूर्ण संघ-सेवायिति अर्थ के के, लारे  
जे, आध आकृतिक आर्थिक सेवाना आज्ञा संक्षे के,  
देवे अजे डार ग्रामीनो पैडे, इक्का-सेवेवे पैडे, तेमां नवाह  
नथी, अतोडे चाढुयाता-मराता, लक्ष गो-काढुनु, अत्यार सुधीतु  
क्कन्न-लक्कु, अजे, अजे : डेवलो नीति श्रवणेवाय-तेवे रेवा  
आपे-छे, कुक्क चांध, आसे-प्रस्तीतु क्कें नथी, प्रस्तु  
ज्ञाने ज्ञापावे पैसा लोड्यो, तारे, जिताना, संज्ञोतायी ते  
मेवावे के अने तेमा द्विता, तुक्क संघेवे येवापे-छे के,  
हेठ पूर्ण संघ तेवे, लोड्ये राई के,

आज्ञा जेता तेमाज- स्वभावामां, आध्यु छे के "आ  
पार्को अपेक्षा अमारी याकोवे गेतु-तापां-द्वितीय- लक्ष्य  
विभासिमानी के," आवा आधाय-द्वित उपलनी कोइले छे, अमे  
ज्ञेवे, दावे, कोइल नथी, अमे तो आम-हेवाम-मानावे ज्ञाने के  
"आ आपातमां, अमारा अनितिपि नेहुन-उक्का उत्तीर्णे के, तेवां  
आपेक्षा भीजा ज्ञानी छाँचे" अमावे अमावे आवी ह आवी  
कुठी-विभास अरथी, उत्पन अरी देवाने द्वितीय-पूर्णक अवगे देवे  
होइत्यामां, भीरक्कलावानो, उद्देश-स्पष्ट के, क्लैन-समानावो येवे-  
हेड ज्ञानवानी तक दोइ-से छे, ज्ञे दोइ-हाहु-नथी, ते साधु  
न लेड्यो, अमावे लोड्यो, आज्ञानी-प्रस्तावना-अमावे-न  
न लेड्यो, ते आम-हाई संघे, लाहु-क्कु-नथी, अजा  
ज्ञाना क्कायी उपलनी- ज्ञानावा- आपेक्षा के, ते समानावु  
नथी, अमे तो क्कायी अजे के अमे-संघेवे, ज्ञान- अमावे-  
छाँचे, शुद्ध-पर्म अमे, शास्त्रावे-मानीजे-छाँचे, संहुपात  
ज्ञान-हेवामां आध्यु के के ते आपेक्षा, भुवनावामां, अमावेवा  
क्की हेठी-वर्तुन नथी, अजाना-संघेवो-अमोनेनीवा-  
क्करवो, ज्ञानावे-के लेड्ये अमावा-अतुमानो-पुर्णि आपी,

मुस्तीम थवाना ज्ञानावे-

(१) जे बाहु उपर, जेडे-मुस्तीमानो उपर, अर्थी,  
हाथ छे, अने तेमीज-सीधी हेपेक्षा नीचे रहे, अपेक्षा, अति  
अतुक्कन छे, अतुक्कन-क्करवो, अतुक्कन-क्करवो, अतुक्कन-क्करवो,

(२) जे जाध्ये अत्यार सुधी येताना उपोमयां  
मुस्तीमानो डेट्वांड वास्तु लाखा छे, जे लाना अमी डेप-  
रेण नीचे छत तो-मुस्तीमानो वास्तु जाच न वापरत,

(३) जे बाहुमे गंगुली डीने अचावेव आर इपीना-  
मेक मुस्तीम बाहुमे-त्वा ज्ञाना क्करवे छे, के क्की चीही  
अमावी पासे गंगुली छे, जे तेवे अर्दीना अमी डेप फु  
मुक्की, उक्क-अक्का-हत तो-मुस्तीमानो त्वा, येताना प्र-  
सेवाना चीपाथी ग्राप्त डेव आर इपीना डेप राम्या ?  
डेप अमावेथी तेनी रक्म ज्ञाना इर्दगे गोप्य भावुक न  
मल्पो ? जे गंगुली डेप फु फु

(४) जे बाहु-मुस्तीम बातावरक्कुगी छे, क्करवे के

अध्या-अनितिपि ज्ञाने जे जाछो समानावी, अने रेहु आवाना  
तीवार याधु, त्वारे गंगुली लम्बावोक तेवा-विशेष-डेवी अने  
तेवे रथां जे अडेली हती, अने-पांडी जांतुना मुस्तीमाना  
पूर्ण-जांतुली;

"आ वधी आप्तोनो विशेष-डेवी, हमला-मुस्तीमान

इम जातावाक छे तेवे अम्पास इर्दवामां आवे ते अज

नियम याधु के तेवु-मुस्तीम यतु आवाक्क नथी, अने

तेवीक अनिधमा मुस्तीम यह न लय तेवो उल्लेख

इरोगे छे,

आप्ती वात रूपै भी छे युक्कारीपाना तंदीनी  
नेप उपर आर्दीनो,

### क्कुक्कारीयानी उर्दीली हप्ति—

, आप्प भीरज्जवाक रेहुक्कीपि नेप उपर्थी युक्कारीपाने  
ज्ञाने हेड-प्रस्ताव सामे येटो युहो भाजी येपा हेव तेव  
उपाध पूर्णु, छे, क्लैन-ज्ञोतिने भाज्यु-लगाडी, अर्दीना  
माहारानो डेप्पेरे छे, येहुतु युहुक संघो अनी ज्ञाना पर्वा नथी,  
प्रमुख नेहुत अहि युहुक युहुतु नथी, तेवे युक्कारीयानी ज्ञान  
असल युहुत उपर सल्लो आप्प अदावो नथी,, अप्पायारी  
टेप्पाप्पे अमुखोनो आज्ञा ज्ञानी-याधु यापी अने साक्ष सेवानी  
येवोने गोप्यी-नथी, अने साक्षी, अतगङ्गुना क्केवी नथी.  
मेड्ये तेवे असल युहुत उपर अवेअक्कानी ज्ञाने अवर नथी, ते  
मियापि लेड्ये आपी आप्तोनो ज्ञाने आव न लियो हेव तेवे  
दीप्त-वर्तुनो छक्क छे छेव आवा उस्तावो, अनेक अने छे,  
मुक्कारीपा नेप्पे युक्कारीपी-प्रेपु उपरतां ज्ञाने पर्मनो नाय  
न लय-ज्ञान-हेड-प्रस्ताव तेवे दोइ-हेड-क्की नुहे छे, तेवा गतीय  
प्रत्यक्ष अनी तेवोयाकी ज्ञानोज्ञ आवा उक्कारो भाटे ज्ञान-  
ज्ञान छे, आप्प उक्कारोयो, जे सोसायावी अने तेवा  
मानोया युक्कारीपी-नाया, ज्ञानी-डेवो, आवा येवायुमा  
ने क्लैन-समानावी आक्का-न क्कत तो जे रेविति अने  
समानावी छे ते न हेवत, विश्वा-विचाक-संघीधी उल्लेख  
हेवती-प्रस्ताव आ डेव-राम्या-युहुतु नथी अने अनी उर्दीली  
हप्ति-वाप्ये लेड्ये-लाप्पायी-ज्ञानी-डेव-राम्या-समानावी  
अल्लित भ्राम्ये, छे, लाहुक्की-साक्षात्ती, उक्कारी-ज्ञानी-याधु-  
येवो, नाय-येवो, इर्दगे-येवो, अने जे अर्दीनो, युवायो  
हेड-प्रस्तावे लेड्ये-लाप्पायी-ज्ञानी-डेव-राम्या-समानावी  
अल्लित भ्राम्ये, छे, लाहुक्की-साक्षात्ती, उक्कारी-ज्ञानी-याधु-  
येवो, नाय-येवो, इर्दगे-येवो, अने जे अर्दीनो, युवायो

## સામાજિક વાચર

**મહુવા**—એમ સંભળાય છે કે આચાર્ય ને નેત્રિસિના જન્મ સ્થાન પર તૈયાર થતો શુદ્ધગિરિને શ્રી મહાદીર સનામિના દેખાસર આત્મા તરફથી જોક મોડી રક્ષણ મીઠાવામાં આવી છે, તેના સંબંધમાં આચાર્યાંશી વચન જ્ઞાપા મુજબ દેવકાળની વેણી રક્ષણ લાભી રાક્ષણ નથી, પૂજાયારોની મુર્તીના જોડાની નીચે જોતાની મૂર્તિ જેસાગાળા અને તે રાતે હેઠળ તરફે પૂજાનાના ડેક પૂરા કરવા દેવકાળનો ઉપાય આવી રીતે થઈ રહે અછે અંચે? કોઈ સાધારણ ભાવસનું જે દેવકાળની ગોડાતા અંગત રીતે વાપરે તો તને સાતમી નરક લાભાપાય છે, અંગતે જોક રાસન નાયા અને સુરિસાધાર તે રીતે કરે તો તે માટે ક્ષું સ્થાન નિયત થશે? આ પ્રશ્ન ડિમ સ્વાધ્ય વારણ કરેનો જ છે, અને વાત જોડાને ખૂબી વધી છે કે જોક શુદ્ધગિરિની વાચન માયકારત તે જાણત માટે કાલોકરને નોદીસ આપી છે. ડેવકાલ કરે છે કે કે મહુવા ડિપર નેત્રિસિનો ડિપકાર છે, જોડાની તેમની પ્રતિમા પદ્માવાય તેમાં આપણી હૃત્યાતા છે. પરંતુ એ ઉપકાળનો એ પ્રશ્ન હેઠાં તો જી, નિજપુરનગરસિનિસિનો માંસ ઉપકાર જોડો છે? તેમની પણ મુર્તિ પદ્માવાયની જોડાની, આમ આ માગણી ઢાક તો ઉદ્ઘાટ્યે થયો છે. નોષણો છીએ હું પરિણામ આવે છે?

**નિજપુરનગર કરતાં શુદ્ધગિરિ ઉચ્ચ—દેવકાળની ભલગાન મહાદીર સ્વામીની અચંતુ અચંસમાંની પ્રતિષ્ઠિત ધર્મેક જોડોણીના માદ્દાની મારિર કરતાં પણ શુદ્ધગિરિની હૃત્યાતી વધી નહીં છે. જોડાની નિજપુરનગર કરાય જાય છે, રેખી ડેવકાલ અદ્ભુત કાર્ડોના મનમાં જોડાની ઉપરિકાચ થઈ છે કે આમના બેદિ ડિપર આદ્દત ડિસ્કો, તેના ડેવકાલાં જાત લિલાણીના રિવસે લદ્દીપૂરુણ પણી રહ્યાના. સબયે શ્રી ક્રિષ્ણ સ્વામિના ગરુદિની ધર્મ વારંવાર સોનાવયા છતો જચુ વખત સળગી ઉઠી રહી. આથી બેદિનો જોક મજૂરાણું અન્યો છે, એટિંગ નર્માં પણ ડેવકાલ આસામીનો પણ નન્યાં પણી રહી છે, અને પ્રકૃતી જાન છે. આમ શુદ્ધગિરિ તરફ જોડો જોડાની દુષીઓ જુદ્યો છે. પણ આચાર્ય શ્રીમાં દાખાયી હોઈ બોલતું નથી, આ વાત હોઈ આચાર્યાંશીના કાને નંબણ્યે છે?**

**શાંતિ અથવા**—એમ કહેનાય છે કે પાલીતથ્યામાં જ્ઞાને પોતા જોડો કરો ત્વારે ગજુચાના પ્રતિનિધિ તરફે જોખ રા, કુર્બાંદાસ નાનાયાને શુદ્ધગાત્ર જાણું જોગ જ્ઞાન કરી પોતાની મુર્તીના જાન કરેલ છે. જોતાની જોક મીઠીગામાં આ આપત રસ્તુ ડેવકાળાં આવી હતી રહ્યું હતું તેણું કરી રહ્યું હતું પરિણામ લાભા જીવાય તે પીરીંગ પરિણાત થઈ હતી. તે મીઠીગામાં જોડી વાત અચોઈ હતી કે રા. કુર્બાંદાસે મુર્તીના હિત આપતાન આ પરસું અસું છે. તેમના જગાઈ અને આચારી અપા, ઊંમાનાની એ, બોગમાં જ્ઞાન મદુરીઓ તેમને ન જગત. અને કન્યાનિર્ધિય માટે તો સલ કાતી જ નથી. જોડાને આ જાનાતમાં કર્યું ન થાય તો જોડું નથી.

**નિજપુરનગર પાલીતથ્યામાં મહુવાન નિયાર્થે કે?**—ઉપરોક્ત મહુવા જોતાનો દાખલો કરી જાના પરસ્યા દોગમાં વસતા અને દોગમાં કુદુરી કણીખાવાના અને દોગમાં

દેહા ઉલ્લંઘ સુરતીયાને કન્યા વાપરા ભલ વિતાન અને પાલીતથ્યાના મહુવાને શીયુલ વીરબ્દ પાનાયાને ને સળ હરી એ તે માટે હરી વિચારણ કરીશે છે?

**ભાવનગર**—એકો જાતિની મીરીંગ મળી હતી. રથોણ સુકામે પ્રતિનિધિઓ જેણા મહાન હતા, અને જોડાનું સુધ્યા હૃત્યાનો પદ્માવત આવ્યા છે. અને દેશ અને ડ્રામની જેવા જાળવાનાર શીયુલ વીરબ્દ જાનાયાં રાહ સાથે જમગાના જુન્દા ભલથ વિતાન શીયુલ હૃત્યાનું કે શ્રી વીરબ્દશાહ જમગાને રાઠને જારી રેખે જ્ઞાન સ્થાન હતા, જાગાન્ય રીતે વિનેક થતી તેણો મારી ત્યા જમગાન હતા. તે માટે હું શુદ્ધેગાર હું. ને સળ કરીયે હોય તે કરીએ. આથા જોક જાતિના અનેચાન તેમજ કુદુરી પ્રયુક્તિમાં અનેક, અને જોડાની જોતાના પાચા સભાન ગયુંતા શ્રી દેવકાલાઈની આ રિયતિ ડેમ કરવામાં આવી છે. તે ડેપડો હસ્ત ઉદ્ઘાયોજ નથી. નવાઈની વાત તો એ છે કે શ્રી વીરબ્દશાહને જોક પાલીતથ્યા, આચારનાર, કુદુરી, ગજુચા, તણાન, રિદોર, અમરોલી વગેરે લખા. લાદુઓના આગોનાન શુદ્ધસ્થે જમગા છે, પછું તેમનું તો ડાઇ લાખે પૂજું નથી!

**શાહિલાલ વીણાશ્રીભીમાણી શાંતિ સર્મેલન :**—રથાણ સુકામે જાતિ સર્મેલન મણ્ણું છે. ભાવનગર જાણે માન બારી સુલેલ કથાથી રથોણાને પણ મણ્ણો છે તેમ સંભળાય છે,

### ચાર્ચી પત્ર.

**શીયુલથી જોક લાઈ નીચે સુજાણું ચર્ચી પત્ર રસ્તુ કરે છે.**

હાજરા રથોણ સુકામે વીણાશ્રીભીમાણી ન્યાતનું સર્મેલન બેનું થેબલ એ, જોતાની વાતમાં જોડા ભરણ બઠાડાનાના છે, તેણા વાતમાં સીહોરમાં વીણાશ્રીભીમાણી તખાન્દળાણા કરી વધારાના વિશાર કરે છે. ૧૫ વર્ષ ખેડોં હતો તેનાથી ડેપલે કરી વધારેલ છે. કરી વધારી સુરી જોડી કરી શું કર્યું છે? પેગા લોગ કરી ડેપને રોકાનરથીપ આપી છે? કરી વધે રોજ નાર લાંબોલે છે? કાગડો અરીખ માટે છે. ગરીબને રૂપીયા અગ્ર આલ્યું કંઈ નોફેલો તો “સૌને બેગા કરો” તેમ કરે પૂજ હોયને નોમુંટો ડાઇ પૂજે! તેવા હાયલા જેઠાં હતે હોય પણી મોકલીશા.

### લાભ લેવા ચૂકશો નહીં.

**પંડિત હિરાલાલ હંસરાજ તરફથી પ્રસિદ્ધ યેલા**

તમામ ગ્રંથો દિવાલી સુધી

અર્ધી કિમતે મળશે.

તા. ક.-આચારાંગ સૂજ છાપાય છે તેની અર્ધી કિમત સમજવી નહિં,

લલો:-**પંડિત હિરાલાલ હંસરાજ.**

જામનગર,

## हिन्दी विभाग.

### श्री महाराष्ट्र जैन युवक संघकी नासिकमें स्थापना।

ता. १९४५-३३ रवीबार को मेन रोड पर श्रीमान् शेठ पृथ्वीराजजी निमाणी के हाथोंसे श्री महाराष्ट्र जैन युवक संघ की स्थापना हुई, रवापनेके समय तिनों सम्बद्ध के सम्बन्धित थे।

वहां पर ता. २०-२१-२२ मद, को नासिक जिल्हां ओसवाल सभा होनेवाली है, इस लिये उसके जोड़ें कार्यकारीकों यह भग्न हुआ की इससे ओसवाल सभा के कार्यको भक्ता लगेगा, क्योंकि ओसवाल सभा और युवक संघके बहुतसे कार्यकर्ता एकही हैं, संघके मुख्य कार्यकर्ता श्री मणिकलालजी भटेवरा, और हेमराजजी चंद्रालीया ने ओसवाल सभा के प्रचारका कार्य केर जिल्हेमें किया है, इसलिये कुछ लोग इस संघके स्थापनाको विरोधी थे। इस लिये स्थापना के समय श्रीमान् शेठ चांदमलजी वरेवा, श्रीमान् मनोहरमलजी गोटी और श्रीमान् चुनीलालजी रांका ची. ए. ने विरोध किया, विरोध करनेके लिये श्री. चुनीलालजी रांका ची. ए. ने संघके स्थापनोत्सवमें न जाने के लिये ब्हॉलेंटियर, रोको नोटीस दिया था, और छोटे छोटे (ब्हॉलेंटियर) वेन्को को मारा भी, फिर भी स्थापना के समय सब लोग अर्थे, परंतु स्थापनाका निर्णय होनो पर श्री. चुनीलालजी रांका ची. ए. उठकर चले गये तथा आ जोड़े सम्बन्धोंको लीचनेकी कोशीस को, परंतु असफल रहे।

स्थापना के विरोध के उत्तर में अध्यक्ष महोदय श्री. पृथ्वीराजजी निमाणीने कहा—कोइ विरोधी संघ नहीं है, किंतु संघ के ओसवाल म.ई आपके इस अधिवेशनमें आपको ऐसी मदत देंगे, जिससे वापकी सभा गरीबोंके लिये भी कुछ ठोस कार्य कर सके तथा दोसायटी प्रस्तावोंमें समय पूरी न होवाय।

बाद में सारिखरन दरबारीलालजी न्यायहीर्ष ने कहा के ओसवाल सभा सभाज सुवारक कार्य केर ऐसी इस संघ की आवश्यकता है, क्योंकि ओसवाल सभा उत्तमेही कार्य कर सकती है जितने पर सभा से काम लिया जा सके, जब की संघका कार्यक्रम इससे विश्वाल है, यह संघ तिनों सम्प्रदायोंके लिये तथा समरूप नहाराष्ट्र के लिये है, तिनों सम्प्रदायोंकी हफ्ताको इस समय कितनी आवश्यकता है इसके कहनेकी जरूरत नहीं है, इत्यादि।

श्री. पन मनसुभास लीनालाल. लालने, लैन भास्तरेश ब्रिं-टी-ए प्रेस, धनकृष्ण रुटी, मुंगार नं. ३ गां भासु फै. जने गोपनीय भगवान्नाल थाए 'जैन युवक संघ' माते २५-३०, धनकृष्ण रुटी, मुंगार ३, गांधी प्रगति फै. जे.

### अपनी समाजका पुनरुत्थान कैसे हो?

—शेठ अचलसिंहजी।

( गतोक से चालू। )

(२) अपनी समाजमें एक दो व्यक्तियों को अपना अगुआ अवस्था बनाये रखना चाहिये। जो कोई नई बात की जाय वह आपसमें प्रेमसूक्ष्म मिलकर करती चाहिये। अगर एक दूसरे की शिकायत करता है तो वा वा वह वैठकर वा किसी बोग्य मनुष्य को बिचार में डालकर जामले-को या गहत-फहसी को साफ कर लेनी चाहिये, न कि बगैर सोचे जो चाहे सो कह डाले वा कर डाले।

(३) हर एक स्थान पर एक धर्म स्थान होना चाहिये, जहाँ प्रतिदिन, प्रति साताह अध्यवा प्रति महीने में एक समय तो अध्ययन मिलकर धार्मिक संवेदी बातों पर विचार किया जा सके जिससे धार्मिक उन्नति होती रहे।

(४) व्यक्ति व्यक्ति से गहर बनता है, गहरों से समाज बनता है, समाजों से देश बनता है। यदि हर व्यक्ति अपने को संगठित कर लेता है तो परिणाम यह होता है कि समाज और समाज से देश आसानी से संगठित हो जाता है। स्थानीय समाज को अपना संगठन करना चाहिये और जब तमाम गौव, कल्याण, लहसील और नगर की समाजें संगठित हो जायगी, तब उसका परिणाम यह होगा कि आपका सम्पूर्ण ग्राम अवश्य संगठित हो जायगा।

### कुरीतियाँ

कुरीतियों, जो कि बहुत समय से जैन-समाजमें बही आती हैं, उन्होंने जैन-समाज की जड़ों को सोखला कर दिया है और यदि यही हालत रही तो एक दिन वह आएगा जब जैन-समाज रुपी बुझ बिल्कुल नष्ट हो कर मिर जाएगा। इस-लिए यह अवश्यक है कि देश, काल-समयानुसार-जो कुरीतियों हैं उनको बिल्कुल निर्मूल कर देना चाहिये। तब ही आप अन्य समाजों की तरह उन्नति कर सकेंगे। मैं समाज का व्यान निम्न कुरीतियों की ओर दिलाना चाहता हूँ, जिनको शीघ्र दूर करने की अवश्यकता है:—

[ अपूर्ण। ]

इसके बाद कुछ चर्चा हुवा तब विरोधी माझेयोंका समाधान होने पर सर्वानुमति से संघकी स्थापना हुई, ऐसा निर्णय हुवा।

संघके सेकेटरी श्रीयुत मणिकलालजी भटेवरानें संघका उद्देश पढ़कर सुनाये, और संघ की स्थापना हुई, नासिक जिल्हेकी बहु संख्याकी जैन समाज संघसे परिचित है, और उसमें सहानुभूति रखती है।

# પ્રભુદ્ધ જૈન.

સમાજ, ધર્મ અને શાષ્ટ્રાચ સેવા બળવતું નૂતનશુગતું જૈન સાસાહિક.

તાતી: દાલિખાલ ચીમનખાલ ડેકારી.	શ્રી ગુણક જૈન શુદ્ધ સંબંધું સુખપત્ર.	વર્ષ ૨ જુન, ૨૦૧૫-૧૬.
સદ્ગુરી: કેશવલાલ મંગધિયંક શાહુ.	વાર્ષિક લખાલમ ૩૧. ૨-૮-૦	શાનીનાર, તારી ૨૭-૫-૩૩.

## સામયિક પ્રેરણા.

—

આકુલીમુહમાલોદ્ય, જાણે પાણે પ્રશાંતરસુ ।  
તમુદું તતો નેતું, શ્રેવાસે ચોળ્યલે પથમ् ॥

—જનતામાં ઝોખેલ પાણ નેદ્ધ ન્યાદુગા બજેલા  
અને તેમાંથી તેઓ ડિકાર કરી, કિંગરણ કલ્પા-  
શુક્રાર્દ માર્ગી-પર તેને લઈ જાન આડ—

અતિઘોરે તપસ્યન્ત, વિશવિસ્મયભાગનમ् ।  
મહાકાળણિક વિશ્વ વસ્તલ પુરુષેચમમ् ॥

—સહૃદે વિરમય પમાડે એવેં અભિપીર તપ  
આદી એહેલા મદાકાશચિકું, વિશવિસ્મય પુષ્ટેતમ—  
અનુયાત મહાત્માને ભો ભો ભારતમાનબા: ।  
કુષ્યાંદ્ર ચ તદ્વાર્યે, પ્રપદ્યાંદ્ર ચ મુક્યે ॥

—મહાત્માનુને હે ભારતના માનલીએ! તમે  
અનુસરો! તેઓ આર્થી સમલે અને મુક્તિ ગાડે  
અપનાને! —

દુઃખમાગાનપાકરું, સર્વાનું, વિશ્વસ્ય સામ્રાજ્યમ् ।  
દશ્યતે શુરી શૂપઠિ, સ એવૈકો વ્યવસ્થતામ् ॥

—જનતાના અભાગ દુઃખમાગાને અસેક્ષણ ભાડે  
આ સમયમાં ખૂબી પીડ પર પ્રયત્ન કરનારાણોમાં  
આ મોહર મદા-પુરુષ સુધ્ય દેખાય છે.—

વિજાનીંદ્ર મહાન્ત તં, જગકુશલાલબમમ् ।  
ન સંતમચમન્યાંદ્ર, તમાવેશપ્રવેશત: ॥

—જગતભાગું દુર્લગ જિનાંની રહેલ એ મદાન  
આતમાને જોગણો! આવેશમાં આવી એ ભાગને  
ન અવગણો! —

—ધ્યાય વિજયણ

## પોકાર

—

ચૃપ ન રહેલે—જ્યારે પોકાર પાપદો એ તમારું કર્તાંય છે  
એમ તમને લાગે ત્યારે; મૌન ન સેવલો—જ્યારે વિરોધની પોથ્યા  
કર્તાંય એ તમને ધર્મ છે એમ તમને સમજાય ત્યારે.

એ સુપ્રીતિ, એ મૌન માનવીએને કાયર જનાની નાણ છે.  
માનવલંબિ એ વિરોધના બણે આગે બહારી રહી છે.

દુઃખ કોઈ જ્ઞાને અત્યારે, ન્યુદ્ધ અને લાલસાની સામે આવાન  
ના ડિકાર્યો હોત, તો આને પણ ધર્માંદ્યતાના કર્તુને સ્વાપેદા  
માલ્યાંદોને શુદ્ધતાની મૂક્યાના કાનુનનું રાજ્ય આવી રહ્યું હોત; એ  
અને પણ સાથ માસુદી તકરારેના દાદ તરફિ માનવીએને  
શિરોવધ થતો હોત.

અનેકના ઉપર શુદ્ધરો અન્યાય ટાળવા ડોડા વિરલાંદોએ  
વિરોધ પોકારનાનું સામેચ્ય જતાંદું લેઈએ; અને એ ગેરન્દસાંદ  
નાંદું ધાચ એટલા માંદે હોરી હોરી વિરોધનો અપાજ ગાહાર  
કાઠદોન લેઈએ.

આજનો મૌનની ગત જ્ઞાનના એ સ્વાર્પિંદ્ર-ધર્મના પૂજની  
દીર્ઘ અને વીરાગનાંદોના સ્તુતિગ્રન કરે હે આજે, આ સુગમો  
અને પૂર્વીં ઉપર મૌનનીના પોકારના અવાજને નહી તો ડોઈ સત્તા  
શુંગાંદી શકે, કે નહી તો ઇન્દ્રાંદી શકે.

નયાં સુધી ગેરધનસાહના ધાચ ઉપર સ્વાપેદી જ્ઞાનની રચના  
નહી અંદેં તંયા સુધી, વાહુદ્વાર પુરુષની વાણી અને આચાર તમામ  
અનાંદી સામે નેશની વિરોધનો અચા કાહુસા ઉર્દો, તમામ  
શીતમો સામે અથાકપદ્યો પોકારનો ડાદ પાટ્યે જશો, ગરીબને  
સત્તાની હોલતની રક્ષા હરનારા હોલતના તાજેદાર કાયરાંદોના જેર-  
કાયરેપણું સામે ઉંઘું સુધી રક્ષા હરયા હરદો.

(કુલણાભાંદી)

पुरिसा । सच्चमेव समभिजाणाहि ।  
सच्चस्स आणाए से उवडिण मेहावी मारं तरइ ॥  
(आचारांग सूत्र.)

## प्रभुक जैन.

शनीवार, दिन २७-५-३३.

### उपवासनु रहस्य.

आजबु शाळोमां कडले अने पराले उपवासनु भद्रात्मन् वज्रिवामा आनुँ छे. अनेक भद्रात्मांमो गो तपश्चयांमा प्रकारे साधने सिर झी शक्या. के अवश्यामा भद्रात्मार है शक्षा धर्माकामा प्रथमना बार. वरस दरमान लगवड्या अगीगार वरस सुधी ए कीन तपश्चयांमी आगीकामा करी करने भरम कां अने उपवासना प्राप्त करुँ रहु. तपश्चयांमी भाटे-पटी ते तीर्थंकर होय के जग्यावर होय, वासुदेव होय के वर्कवति होय, प्रति वासुदेव होय के जग्यावे होय, शाल होय के रके होय, खी होय के पुरुष होय, दरेकने करमान छे. दृ. पर्वातीमी एक उपवास तो दरेकने करेकाल जेहांमी. वेदिक इष्टिमे आपेहु तपासीजे तो तेवां जग्यावे के हुरुप्रज्ञातीमी जेक जुलाम लेवार जेहांमी. तोज तपीयत जारी रहुँ-ज्ञानुँ न थाय. उपवास करनारो जुलामांनी ज्ञान रहेती नथी, तेही पेठेना अपेहु जाली ज्ञान छे. आम उपवास गो शारीरिक द्रष्टिमे तेभार आभासिभ इष्टिमे घेवेव इमाराकार के. तेमा ए भत छेन नहि.

ज्ञैन समाजाना उपवास जीज समाजे करतो वाहुर कडक अने शाचा होय छे, धरेकु ते तेमा डेखा. दृम धायी सिराय फैक पकु आजनो. जपेवाच यही शातो नथी. अने ते पकु उपवासना जेहां ज्ञान प्रदर्श सुधी. सुनीतया छेक सुरोद्य सुधी ते पकु अध रहे छे. आचा वाहुर उपवासेनु इण पकु अद्वालान भेट छे. तेमा आत्मकल्पाचु जिवास जेहां अतीनी धूमान न जेहांमी. झेष है क्षमाने रथान न होयुँ जेहांमी. भान के जेकानी तपश्या न जेहांमी. जाचा, मत्सर के राहदे-पथी हूर रहेयु जेहांमी. तोज गो उपवास धारुँ इण अपे हो, औहुँ नहि पकु अद्वालपालाचु वाहुर नक्क भसडी ज्ञान छे.

मुनि भरतविकायकाना उपवासने गो इष्टिमे कडी जेहांमी तो आपेहु जग्यावा सिवाय नहि रहे के आपां आत्मकल्पाचु ज्ञानी वाहुरुव आपाना नथी. अगर लो आत्मकल्पाचु आपाना इत ले तेमनु आत्म निवेदन आहार पक्तार नहि. आपावामां सेकडो मुनिवेदन अने गुरुत्वाचे सेकडो उपवासो करेक छे. परंतु केहांमो आत्म निर्विकृती हांडी खाडी नथी, छाता सोजा उपवासमांव भरतविकायकाना उपवासनी दांडीगो पीटाय छे. औहुँ नहि पकु त्यारपटी पर्गसागरक अने अन्तिविकायकाना नमेह पकु ए उपवासने भाने गहार पाढ वापां आवे छे. त्यारे ए अपेहु शक्षा वेला गानवांगोनी

वीका पामतां मुरीडीलोगो नडती नथी. सामुद्दिके इर्वनी शातिने नामे मुनि भरतविकायक अने तेमी पाढण आक्षमां धर्मसागरक अने अन्तिविकायकुलो ले आत्मनभुवी. गहार पाढण छे, तेम तेजामे पेताना आरिनां रथालन अने तेना प्राप्यवित भाटे कहि आत्मनिर्विती आहेयान झी के ? कुण तो गाड काळानीर गो वात छे. चातुर्बांसो उभय के, नदी, नाणी अने रस्तांगो. पाश्चायी आहणी रखां छे, त्यारे एक माझ पेतानी शास्त्रांक अवश्याना पुनरे भेजवलोगो हावो अवश्यानी डॉर्टमां, सांख्यी रानिना वजते भेदवरमां डॉरी आपां भाउ छे. तेमां वर्षाक्षेत्र वर्षालानामुँ करी आपे छे अंटहुँ नहि पकु एपेहु शीर्षां पकु चेते छे. ए अपामां शुभ सांख्यालान छाती ? एक धूत वर्णनीय भाष्यारदेवना मुख्यी उपरोक्त संघु उपर कडक रीका थाप छे, ज्ञैन शामन निंदाप ए. अनेक लोहा अधर्म पामे के. आ अचा भाई ए पीत वल्लारीमो कहि प्राप्यवितीली नहीर द्विभान झी के ? शामारे आ आपातने शाणी जुलांग काशेहु जाताथाप छे ! अद्विक्षक अने अन्तिविकायक भाटे तो अभारे नसुँ कर्वालानुव नथी. कारणेक आ अचां तो पुतांगो छे. भवारी जेम नव्याने तेम नाज्ञानारा ए महातुमावो छे. आपारे होरी संचार करनार तो जुलांग के.

आम आ रमत वडेदारा ज्ञेनी धारामलागां ले अपेहु शक्षाने रेहेने काहोपो पक्तार थेपो छे, तेवी सामे जलताने उपवासना गारे रमाऊ रही छे. महात्माण एम आम्हांनिर्विती झी उपवासनी आहेनां करी, ए रीते जग्यावर डेकावे छे, ते रीतां शक्ष्य देही संचार करनारो-जेवां भरत निवेदनाना उपवास पाढणे रापेना सेवा द्वौ पकु तेमां ए रमाऊमो सरी ज्ञान-संकल्पां छे, ए उपवास राह थेपे अवलायीतु पक्तार नसुँ छे, उतां समाज ज्ञान पकु संसारांमी अनुकांगा सिवाय राहेय छे. करिवडे समाजाने स्वार्थ गिराय आपां इशी रमत हेणाती नथी उपवासाने शुभ हेतु लत तो तेमजू तेमना आपान निवेदनामां के असत आलत आवेषी के ते न हेत. तेमां तेजाशीमे लाख्युँ छे के “त्याच धर्म स्वीकारदारानी स्वतंत्रतानो निवेदन करनारो. सं-पास शक्षा निवेदन निर्वित ता. १३-५-३३ नी वडेदारा जालानी धारामलागां राहु थापा, ज्ञैन धर्मी अवलायु समाजांहो ले रीते जेना उपर अतिशेषोक्त अलां निवेदने कर्वा ने आभासिभ शायसामेना आपार काळ तेमी पुष्ट झी आ निवेदने पक्तार कर्वा, जेहु भारा जहावे सापां आपात घेवेवायेहो ले. आ मुमदाने कापवातु हृष आपाचा भाटे अत्यार शुभीनी ले रीतो आपातार क्षमामां आवी छे, ते अन्नावानी जेक परेपरा छे, जेम भाई भानाऊँ छे.” भरत निवेदनाना आ उपवासे ताळे असत ए, काम्हेक वडेदारा रेटेनी धारामलागो ले शक्षा ऐकट पक्तार कर्वी छे ते त्याच धर्म स्वीकारदारानी स्वतंत्रतानो निवेदन करते नथी, परंतु शुद्ध त्याच धर्मी वेलांके ले. तेही त्याचामां उपवास जानी शक्षी. ते सिवाय मुनिवेदने धारामलागां समाजांहो लैन धर्मी अवलायु, अतिशेषोक्त अलां निवेदने करनार अने आभासिभ शायसामेना राहु करनार तरीके चीतांगो छे, ए धारामलागां समाजांहो भाटे भानाऊ अनुवाय कर्वी छे. आ अर्जनो वक्षु वक्षु वर्षी

ધારાસભાના સંબંધિતોને અજ્ઞાસુ કરો છે, ધર્મ અને શાલોના પુરાવાણી રહ્યું હોય, ત્યાં પેર્સનો જાર્યે નિઃદંડ અનાન્દો છે, અને તેથી હરી સંસ્કિન અને સમાજની ને ખૂલી રહ્યા તેવી સેવા જાળવી છે, તેવા સામા સેવકો માટે અસ્ત કિંદ્યજી હિપોક્રાત અસ્ત રહ્યો વાપરી માનવતાની હદ, હુદાની યાદ છે, તેવા મુદ્દાનીઓ અને આત્મ કલાકૃતું હિંદુણું છે, એ ચૂંચ સમજનું જોઈએ, આગળ જત્તાને આત્મ નિર્ધિયમાં લઈ છે કે “આ વર્ણતુંથિતિનો ગભીરાષ્ટ્રો વિશ્વાર કરતાં મને ધારે છે કે સામુદ્દરિક હર્યનો ઉદ્ઘાટ આતું” મુખ્ય કારણ છે. નિઃદંડ લાગ પર્યાને સ્વીકારનાના ડેવલાડ કૈન સાંચું આતુંજ લાગ વિશ્વ મંત્રન રહ્યું, અન્ય સાંચારના “ખુલ્લો જૈન સમાજનાથી તેને ટોડો આધારના, “લાગવંશ” વિશ્વ બાન્દર જાળો ગિલાંદ્યો, વિદ્ધાન જાર્યો નાનાનો લાગના અચારયને રોકવાનો વિશ્વાર થયો, એ શાસ્ત્ર નથી.” આ આપણ પણ તદ્દ હિપોક્રાત અને જુદી છે. કારણ કે લાગ પર્યાને સ્વીકારનેથી ડોઈ પણ કૈન સાહુનું લાગ વિશ્વ મંત્રન ચુંચું નથી. પરંતુ લાગના “નામે ગમે તેવા અચોય કરો થાય, ચોય ન હોય જત્તા લાગ ધર્મનું રાન કરી લાગ પર્યાનું” લીધામાં રહ્યું હાનું કરી રહી રહો છે.

લાગવંશ વિશ્વ કૈન સમાજના ડોઈનો ટોડો આપો નથી, પણ લાગવંશના સ્થારા નીચે કે પ્રપંચી, તરફથી, અને માનવને ન છાલે તેવા રહ્યો જેસાઈ રહ્યું છે, તે શરેને કૈન સમાજને જરૂર વિરોધ કરીયો છે, એટલું જ નિઃદંડ લાગવંશનિ વાગ્યાનાના પાછ હુદી એને તે ઉન્નતયાને તે માટે તેવા હરાને કૈન સમાજને સંપૂર્ણપણે ટોડો આપો છે. લાગવંશની વિશ્વ ડોઈને લાગી ગિલાંદ્યો નથી. તેમજ વિદ્ધાન જાર્યો રહો કે ધૂસારો કરવાની આપો છે કે તે પણ નકન અસ્ત છે, કારણ કે તું સામાજની તો છુંછે છે કે કૈન સમાજના સામા સાંચું પાડે, લાગવંશ કલવાન બને, “દ્વા” તેજાથી લાગ ધર્મના જાહીના નીચે કે પાણંડ-પોણાઈ રહ્યું છે તેને પોતાની મંગતા નથી, એ આપણની સહજ નથી.

આમ એ ઉપરાસની પાઠળ ડાઇ ચુંચેના નથી, પરંતુ ડોઈ અદ્દસ્ય લાગસભાના પાયા ઉપર એ ઉપરાસનું અભ્યાસ કરવાની આપું છે. એટથે સુગારને મન એ આ ઉપરાસની ડાંસને અસર નથી. એ ઉપરાસ સામુદ્દરિક કરોના ઉદ્ઘ માટેની થાય હતું તે તેમાં કૈન સમાજની વાલી રહેલી બંદર અધોરતિ, કુઝાંપ, હેઠાં અને કંકાસ તરફ જરૂર હિપોક્રાત કરવાના આપો હતું, પણ તેમ જન્મનું નથી એ આપો હોય અને રહેલી આપો હોય, તેવા કે કરેનું એ કે સામુદ્દરિક કરોના ઉદ્ઘ માટેની થાય હતું કરેનું એ કે એ નાથુંને તો આપુંની અન્યાંની અન્યાંજ થાય છે. યાશન હેઠ સર્વેની સંગતિ આપો.

## સ્વીકાર અને સમાદોચના.

નીચેનો પુરતાડો સગાદોચનાર્થી કૈન સરતી રંગનાબાંધાણા કાઢી અદ્યતાલાં જગતુંના “તરફથી અગ્રેને મળ્યો છે. એ પુરતાડો કૈન સરતી વાંગનાણા સું “પાલીતાણા” (કાંદાણા) એ શીરનામેથી મળ્યો હક્કો.

કૈન રાત સંઘર્ષ—સંગ્રહાંક શીરતી પાનખાઈ, કિંમત રૂ. ૨-૮-૦

ઉપરેણ પુરતાડો પેઢેલો પાંચાં વિશ્વિષ છે, “રતુલિયો, દોદા, ચૈયપરનો, સંચનો, થાયો, અને કોરાટી. મણગાંધીને વગરે છે. એટા અદ્યમાં નારસગરણું અને લાપ આપોને નીચેના વિષય પૂલ મંદ્રાંક છે. મોંદામાં હેરંન, માણાવીનીસું “ચેતાળણું”, નાયદ રેવિષ રચન, મોણ કરશુણિષ, આશચર્ય નિષિ, કુદા, પચાંખાણો, ચોરાણો, કાંગ, સંશોદન નિષાણસી કાળ, ચોરીસ વિષિકેલતા માત્રપિનાદિનો. ડોડો, પાર્થનાય પ્રસ્તુતા ૧૦૦ નામો આપવામાં આવ્યા છે. પાંચમાંચ જુદી જુદી સંજાણો, ચુંદીયો, આખાતિયક પોદો, અમતામલાં, અનુષ્ણાયાં અને જન્મ મારણ સુલાં સંઘર્ષ વિશ્વારદિ સંઘર્ષ છે. એંધારું સંઘર્ષ હી છે.

શી શાનુંભ્રય મહાતીથી થાય વિશ્વાર,—કિંમત ૦-૧૦-૦ સો નકનાની રૂ. ૫૦ નામો કૈનખર્ણ, સંચન, રતુલ તેમજ પાનખાણ પચાંખાણ, મહાદેવ સ્વોદ, શી શાનુંભ્રય મદાતીથીનિના ફોનો વગરેણો ઉપરોગી સંઘર્ષ છે.

શી શાનુંભ્રય મહાતીથી સ્તરનાચલી—શામા કાનુંભણો વિશ્વારના કોલાં, સંચન, જુદીયો, આપણામાં આવ્યા નથી.

શી કૈન સંજાયામાણી—શા. ૩-૩. કિંમત ૦-૧૦-૦ આમો જુદી જુદી સંજાણો આપવામાં આવી છે.

શી પ્રગત પ્રકાશી પાચનીયાં અને કૈન તીથિમાણા—લેણા મલ્લાયાંથ ન્યાસનાં કિંમત ૧-૮-૦ આમો પાર્થનાય અગ્રાનાના અમતારણું વર્ણન છે. તે મિચાપ જુદા જુદા વિષિનું વર્ણન છે.

સંજાયામાણા—સંઘર્ષ મોહનથાલ ઇન્દ્રાય કિંમત ૦-૬-૦ એ પુરતાડો જુદી જુદી સંજાણો આપવામાં આવી છે.

શી જિરનાર તીથિનો કાંદાણ—(શચિન), કિંમત ૧-૮-૦ આમા જિરનાર સંજાધી નિસ્તુલ વિષેશન કરવાના આપું છે. એટા જાતની નાંધાંડ, કાંદાણ, કાંમ પણ જાપ સારે એતું, એ પુરતાડો છે.

ઉપરેણ પુરતાડોની કે કિંમત છે. તેમાંથી પણ હેટ્ટોડ થદ્દો કરવાનાં આપોની છે. તે સંજાધી પત્ર જવાંહાર કૈન સરતી વાંગનાણા સું “પાલીતાણા” (કાંદાણ) એ શીરને કરવોં.

કાંદાણ પ્રકાશ—તંત્રી જોલ, જોલ, માસન ડો ગૌમુખ જુવન, મસણ જાંદ રેખ, કિંમત એક પેસો દર રખિયારે પ્રગત ચાન છે. આપને તેના જાપ આપો અન્યાંનાંની મળ્યા છે. નિપાતિલ, ચિષ્ઠાભાનાં તેના હુદાયોળી દેખેણો આપો અન્યાંનાં આપવામાં આવ્યા છે. મુનિશાળ એ ન્યાસનિષ્ઠ મહારાજાની કૃતિ માટે ચુંચું કોણ.

દીક્ષાપિંડ દ્વાચિંસકા—લેણા મુનીધી ન્યાસનિષ્ઠ મહારાજાને દીક્ષાપિંડ સંજોયાં અર્થીસ, શેડો અનાનાં છે. એ આપણાં આપવામાં આવ્યા છે. મુનિશાળ એ ન્યાસનિષ્ઠ મહારાજાની કૃતિ માટે ચુંચું કોણ.

— કુરિવાન્નેની કારમી કહાણી —

અને

પણ દેખને શુષ્ક બનાવતા જગંથી રિતદિવાળે.  
શુષ્ક—નાનાથાર દેશી.

मुंबई के निवासी प्रवर्तनी प्रश्नान्वयन समिति में रहेनारः मतुपापने आपसी सामाजिक इटिमों अने ते हडिमों पालणा थता आपसी अधिकारी नुँके हडिमों युवाओं थाए पडेस प्रश्नाना मानने संतुः कठिन ग्रातिशिल न थये। आदा ग्रातिशिल अने बेहालीना वज्ञातम्। उधेपालू रहेनापिधानु राजस्व अधिकृप दुखभेदा हुग्यना हुग्यरी शर्मावतो होव ना ते आ हडि ग्राक्षस छे। आ प्रथा इता कैमोने लागू पडे छे तेवलंग नदि, अंत हडिमोना अदारे चल्यने ते सरपेमा लागू पडे छे, राज्यपुत गेकुन डे वज्ञिक वा तो आलिङ्ग उधेपालू तेज आ हडिमोना भुक्त नव्यी, उधेपालू कैवनाती होमिमां आ सेतो पद्धारे ते वधारे पेसेवो छे। अने तेने लाड भानव ज्ञात अंकारै, पीछे हुक्क करायनारां लाल्हाकीं अपूर्वोग्यो ज्ञेह, संक्षिप्ती हाल थरवये छे। हडिमी ग्रामदामां वसाती-समव-प्रश्नाने अद्यै रथ-राज्य आ युवाभीमोरी मुक्ति भवासी, लालेच भवासी, शीर्षिकुनां लक्ष्यनु येक अंग ग्रामदामक सुधारणा छे; तेने लाल्हनाम अपके योद्धाश्वरु नाम हिन्देने खुले फूले आपाण रुक थी उच्चारो छे।

‘हेसनी अर्दी होल्ड आर्का आर्का प्रसंगियों वेपहाई मर्टी हॉलोगो लहू, प्रेल चैतानी जव्हरियातो खाली पुँतु धन नयी अमाली शक्ती-के धन भवधू-लभ-श्रीमंत-वि. वि. प्रशंगिने वज्रता जव्हरियारी अने करौ धारण ‘अमाल के, तेहसुन-धन लाले छिला बाणियाना शारिरिक-के भागमिक विकासार्थी अमातु’ होप तो फिल्मी सर्व झोगे-जोटसे के समझ छिप-इकें पैसे ठह नहीं, पुँतु सर्वजी समृद्धिशन गन्हु डोए.

આજની સાલ કંઈકાએ કે કોઈ હો?

આને શાતિ સંચાળો સ્વાર્થી, પીછેદા મતિનાણ અને કુન્ઠા વિમાનના, લેટેની જેણી હોય છે. આ શાતિ સંસ્થા ભર્તિગામાં કલારે સર્જન પામી લ્યારે નાચી, દ્વિતારી અને નવ્યી હોય તેમાં સાડા બાવાનું કરે કાશણ નથી; પરંતુ આને શાતિઓ અને શાતિ સંચાલકોના નાનસ જોનાં આપોચીએ જેવાં સંચિલન થઈ જાય છે હે કાઢનો સમજું વર્ગ શાતિ ધારે મધ્યાહિત સમજાપ અનુકરણ ફેટલાડ કાણો કેદી છુટ્ટુ હુંછેલું ગંગે હે અને જે હુંછેલું કાજની આપણુંદી શાતિ સંસાને આખારી હે. આને પ્રેરેણ શાતિમાં ‘સેનેરી ટોળી’ હોય છે, અને જે ટોળા તેના અનુકરણના રાખ્યા નાના પોતા માખસેની પાંચમાલી મારી મીટ ગંગી રીતી હોય છે.

સાતી સંશોધણે જે આવા અનિષ્ટ કર્યે મારે હેઠળ હોય તો તેનું અરિતલન કુચક વર્ગ નજ સ્પિકરે, છંતો એ અચાદની સાતીઓ, તેમના ખરિનોસના હેઠળ પ્રકાશ્યોમાં કંઈક જિલ્લાના કારકીર્દી અયોગ્યાત્માના મંયાણી હોય તો આવે તેમની હૃદય પ્રણ ઉપરે ચોડા અને હેઠ કાગળે અભ્યર્થ પ્રતિકુળ એવા મર્યાદાના અસલ અંદો લેને વિષેના રૂપો કુટુંબના રિવાણો, જાનના ચોડા અને ખીન જરૂરી, આડંબરો અને શીમંત અને તેવા કીયા કીયા અનેક પ્રકારે ગરીબોને પર

ખેડા અચ્છેથી તેમને આવારા પ્રથળ કરે, તેથું નહિં  
પરંતુ હિતકર નિયમોનું દરેકથાત ખાસન કરાવે, જેને એ  
ખાસન કેરેસ ખનનો ડેગવાયું-બાધામ-કણા કે ઉલ્લોગ શેના  
સહજથના સાથનો ખાલી ઉપરોગ કરાવે, આ વિષ-  
વામી ખર્દ રાગીન કાર્ય કરું શક રહ્યો છે- જેને નાનકદે પ્રત્યેક  
પ્રલાઘ માર્ગિલિત દુલારી જેણે દીપણો-અમરણો.

શ્રીમતી સુપ્રેરુદ્ધ કૃત્તિવિદ્ય

બુન્ડાને નવ સુધીનું સહેલું કરેતાં હજુ ખણું સહેલું કરેશરૂનું છે. ગમાયાનોમાં હજુ જુની સહેલાની થદ આગું-કુંપોદેલ પણ્યા છે. આને બોટા અચો પાણા નિધૂર જાઈ સમાજની શરૂરે ગલ ઉપરંત અર્થ હરાયે. ડાયી તેના સંતોનોની ડેણાઘૂસું-અને ઉંઠેર પાણા તેને લાગ્યું લાગ્યું પડ્યે. સમાજ અને સમાજની ફેદેવતી વિકિનો આ માર્ગ જવાબદી છે. આને હુંક અચો દીક્ષા કેવો મનુષ પણ કે ઉંપોદેલ કરે છે તેટાંની જાહેર તેથી વધારે ઉંપોદેલ ઉપરેકાં ફુલોના નિકંઠ પાણા કરવાની જરૂર છે. દીક્ષાથી માંચ પણ્યોસ મુંડારી, પરંતુ આ કુરિયાની સમાજના ફેદેસાં સરી જરો તે વાત નિર્ધિનાર છે. નેમ “શારા મોટર” અગ્રભાગ આખ્યે તેમ હું પ્રથમું તે આવા રિત રિચાને મારે અનેક હુંગો અંગમાં આવે. આ નારે હુંક અચો કરાયે કરી લેસી રહે તેમ હું નથી કઢેતો. પરંતુ હુંક સુધેના પ્રથેક સંબંધને સંબંધન અનાતો પહેલાં આવી ફેસોલિનાની અભિયંત્ર રફેચાવી અતિવા લેસી જેષ્ઠો. આને આપણું કાર્ય કેન્દ્રથી સેળીન પદ્ધતિસર શરૂ કેનેઓ તેંતું નથી રહ્યું-આને આપણું આદોગનોથી, માંચ વર્ગો આપરિયન છે—યાણા હરાયે પાણા ને કાર્યાનું લોઝુંને તે નથી. માલમ પરંતુ આપણું મનજ આપણેને જો હે છે. આ પરિદિશિયાની જેરેચું હોય તો હુંક વર્ગો સહેલું કંઈ સિવાય હુંકાનીની, આપણે કેન્દ્રથી કરીએ તેંતું સેળીન થશે તો તે ઉંઘી નીણારો. આપણું પ્રતોક રૂતિ પેદા રાતિસોના સંબંધકાને, આંતર્ની સમાજની આ અર્થો કરી કરાયા જાન્તું કર્યું લેખેલો. આને વાત વાતમાં આપણું પ્રાચીન સંસ્કૃતિનું કિન્ન તિમ વાણીઓ છીનો. કાંપણું પુસ્તક અંગરો અને અને આપણા પદ્ધતિની બ્લોગ. આપણું પ્રતિસંબોધિ લોઝ શરીરની છીનો. પરંતુ તેમાં નથી આપણું ખર્દ ગૌરેન કંઈ રહેયાનું. આપણું મદ્દ ગૌરેન આપણું વર્તમાન નીતિરીતિમાં-રોધીઘૂસું રહેયું અને આપણારે નિયમરસા-તેમજ આપણું વર્તમાન નીતિક અને આર્થિક જગતમાં છે અને તે લારેન આવી રહે છે. ત્યારેને હરેક જાનનીને તેના વિભિન્નત વાતાવરણમાં ફોર અખેલ ન હો. આજ તો માયુસ જન્મે વારથી તે તેના અંત સુધી તેને ગાતરીની જાહેરીથી બીજારું રહ્યું.

ଦେବ ତେ କାରକ ପଥରୀ ଯତୀ କରନେ ନେ ଅନ୍ଧ ଅଧିଶୋନା  
ଜ୍ଞାନ ଦ୍ୱାରା ଜ୍ଞାନେ ନେ ତିଳାମର୍ତ୍ତୀ ଆଖି ଗରିବେ ତେବନୀ ପତିତ  
ଦୟାଗାଥୀ ଉତ୍ସର୍ବା ପ୍ରୟେକ୍ତ ହିତମିଳିତଙ୍କ ଅନ୍ତରେ କୋଣ ଆଖି  
ଆପକୁ ନିର୍ଭରିନ ଆଚର ଫୁଲେ ନେ ମୁଣ୍ଡ ତରିକିତୁ ଅନ୍ତରେ ଅନ୍ତରେ  
ଯାନ୍ତୁ ସୂର୍ଯ୍ୟ କେଶୁ କରିବା ପଦତ୍ତିଶିଥିବ ମହା ଆପନ୍ତାନ୍ତୁ କାମ  
ପରମ ଅନୁଷ୍ଠାନ ଛେ ।

--Fedist.

“जले जवाहामुखी उरना हुमधुमां”

“**बेक स्थले नेहामु**” के “**हैया समाज डिक्कनी**” विगड़ा लाल इन्द्रनारायण चोदी तो सुन्नांचा लकु लाकी छ-कैन मज़हबां अने लेखनी हल्पना सुन्निमा।”

आजे मुखान मानस पर के जेक प्रलग गेहुँ दरी चल्हुँ छे, तेहुँ मुखान हल्पना धक्कास देला हरी छे, एने निर्वाह के पश्च एने धारारी पर हेखाती धंसनी पालन कुरनो बाली आह दरी नांदनार जवाहामुखी न गली राहो देय तो एने धक्कास हरी परी जला वार नज़ लागे, एने धक्का जेटहुँच रफ्क छे, लग्नानो आराव एने छे के दरे आन गोड़ान सुधारानी वानो हुमी गुड़ी फानिना भार्हे कुरु करवानी घटी आना चुकी छे, एने आपावे चुकानो जलही रहमत लधें तोज अमाननु एव धारी लकाती।

अन्नास दीक्षा नियामक निष्ठ आहारु” दृष्ट पांसा वडोदरानी धारासामांथी पसार थें छे, आपोइ दीक्षानी जस्ती भट्टीभ थीक एने निष्ठापने जन्म थें छे, ते अहीमां जेक पाठी जेक दुमाण अस्तु व्याग्निनो लोग आपावेज जब छे, “आता गेल धर्म” ना बोक्कारें हवे दुमाण आपावेजे नहें निष्ठ दुमारिक्कोने चेतानी प्रेप्यकल्पनो लोग अनावा गांडी छे, दम्हाँ दम्हाँ अस्ति अस्ति अमेला समाचारौ जेटका चेतानारा छे के जे लैन समाज केही “मुक्ति समाज” ने जाहे डेढ़ चेतानाती समाज होत तो डेढ़ताप धाराप्रिंगा थवा होत ! परंतु पीणा वर्षे देही चेताना गाहक नाचनारा होत, अने एने चेतानामेनी प्रेप्यकल्पने पर वारी जनारा होए ला “स्वराजन शान्ति” सिचाप आजुँ सुं संबंधे ?

दीक्षा अन्नास चल्हुँ लगामुँ छे, अहेर समझ लगावे अने आपावेदारा राखना आपारी अने रहीया आपाती हुक्केतो रकु थर चुकी छे, हवे एने प्रश्नो अजे, डागण अने शाही आगाडानी वर्हे लागे छे, परंतु वीक्ष दीते नियामतां एने पश्च स्थष्ट अमलाप के आजांचेकोना गोपारे रहमे तोपला चेताना मांडामां नहिं आजे, अने एने चेतानीतु नहिं रवड्हप तेम्हुँ “सुमुँ” मानस समाज पासे नहिं धरवावा आवे त्पासुधी समाजनी आंख उधारानी नयी, हलु समाजने एने वातनु भान नयी, के आ पीणा वर्षने प्रतापे चेपाही रहवा धार्हांगींगा भान धार्हांगींगा नयी, परंतु आंकर निष्ठप्रिंगे छे, तेम्ही विषयवादांगो समाजनी सुदूर वादीने आणी आप हरी नांगे ते परेकांग जेम्हे ‘नायी’ लेवानी परम आपरेकता छे, अयोग्य दीक्षानी प्रवृत्ति पालन भान “धर्म-प्रेलळा” नयी, पश्च निष्ठत मानसमांथी देव थतां “प्रज्ञा असेहोनो” काम दरी रेहां छे, आपावे आजे एने ते नहिं रहम-नहुँ होए तो “आपाती कादी” आ लवुने ते ज्वर रहमलवरो,

श्री जेतारीचंद्रभाऊने लेख न अर्हे होत तो तेम्ही दिनेत समाजने आत्मी व्हेली न आत, श्री जेतारीचंद्रभाऊ लेख गपा

तेला आहारे आ नयी लगामुँ, पश्च जेटका भाटे लगाप एके भाटारी नियामपनो फांडेरे फांडेरे उराती भुजवानी भावीन भगवान्दाये एने ग्रामा वटोल धारेवेहे तेनी भाने ग्रामवपये उला रही चेतानी अपूर्व कार्य इक्काताथी नियामपने ग्रामावी लेनार अने नेने व्हु व्हन रिथत, तेनी आपिंक रिथति व्हु रहदर अनामनार जेतारीचंद्रभाऊ जाता आजे नियामपनो आपिंक प्रक्ष विकट अन्यो छे, एने अमाचारो उपस्थित छे तेथी रुद्धम-लाप छे के फिरी आ लगामुँ नियामप फारी राहे तेम छे, पश्च धेपी आडे आवे छे, जमे ते देवा, हळू निरीक्षण इन्द्रनारे रज लुदू रहमलवानो अभाव छे, श्री जेतारीचंद्रभाऊ इक्कीर न छाता, तेजो चोलीसीदरो धोतो धेपी इन्द्रनार जेक गेठीना वागीदार रहता, पश्च तेजोने नियामप भाटे “धर्म” हुती, तेमना हल्पनां धर्मामां डेण्याथी भाटे उठे उठे उठे जेतानी इक्कामां सदा जात रहेता, आजे पश्च डेढ़वल्लिनो प्रक्ष जवाहामुखी गाहक जेना अन्तर्मां धीको दहे तेने भाटे क्षुद्र असाक्ष नयी, जेतारीना सुन्नोनी चेतानी नीतप लेवा आजे जेटका चीमधी लगावानी अनावस्पक छे के नियामपने देही न गव्हतां, एने तो अविभवी “भाटारी नियामपांची नानडवी आवृत्ति छे, तेने अमे ते जेगे रक्कने, चेपावे अने नियामपने के कथी नियामप अर्हे आवनारो पाल इत्तु न पडे.

सधागति शेतानां धुम्भार्द धर्मप छे एने आपावे ध्यारे रहमलवरु ? ए जाम धारेपकरतु पालप अत्येक भलन इत्तु नयी ?

**लाम लेवा चूकशो नहीं.**

पंडित हीरालाल हंसराज तरफथी प्रसिद्ध थवेलां.

तमाम ग्रंथो दिवाळी मुधी

अर्धी किंमते मळशे.

ता. क.-आचारांग सूत छपाव छे तेनी अर्धी किंमत समजवी नहि.

लसो:—पंडित हीरालाल हंसराज.

जामनगर.

## ભરતવિજ્યજી કોણું? અને તેમણે આદરેલા ઉપવાસ શા માટે?

### માણસ્કો કરેલી સખત રીતા માટે તો આ તપથ્યાં નહીં હોય?

( વેદા :—મહાસુખભાગ શુનીલાલ—વિસનગર.)

**વ્યાદા** રાલયની તા. ૧૬-૫-૨૩ ની ખારા. સાલાની જેક્ષનમાં સન્યાસ દીક્ષા નિબામક નિગરનો સુસ્કો પસાર થવાથી અને સંગીરની ડિગરતી ગતા. ૧૬ ને જાહેર પદ્ધતિ ૧૮ ની કરતાથી એટલે કે “લેને ગપ્પૂત એંડ સોઝાઈ અસગ” જેવો ક્રિસ્ટોનની જનવાચી અયોગે દીક્ષાના અને ભાસ કરી આણ દીક્ષાના સુસ્કો કીમાણી કી રામનિલાલજીના રિપ કી ભરતવિજ્યજીના હડયને સખત આપાત પહોંચનાથી તેમણે તા. ૧૮-૫-૨૩ થી સેણ ઉપવાસની તપથ્યાં આહી છે. તેનો હેતુ સાંસુધારિક કર્મની નિજરી—નિવારણ અથે અને પોતાના આભારી શાતિ ગાઈ કે જોગ તે પોતાની સહી સાથેની દેખી આભારનિંબિંબ પરિવારની જાણું હે. આ નિર્ણય જાણુંવનામાં તેમણે ખારા સાલાના સખતસહેને કૈન ખર્મથી અન્યાં અતિશાયેકીન કરનાર અને અગ્રમાંબિક દાખલા આપાર માન્યા છે. અને સુસ્કોને કાશનું રૂપ આપા માટે વડેદા સરકારે જાણતાર કરેલો રાજનીતિને તેમણે અન્યાંપણી એક ખરાપાર માની છે. સુધી ગાઈ આદરેલી તપથ્યાં પણ આપાં અસુદ્ધિના નિંદા અને દેખનાં બરેલાં પરમાંબંગે મેળવનામાં આવે છે, તે તપથ્યાંની અભિહારી છે!!

આ મહાન તપથ્યી કોણું અને તેમની તપસ્યા કા માટે? તેનો કોણ જાણુંના વાયોકે કાન્દેશાર હોય તે નાટે તે વાયો આગળ રૂળું કે ‘‘ખુ—હુ’’ કુંદાંગ પટલાંથા.

પાઠજ્ઞાન વાતની કાંતિલાલ એગને ખાત પંડ વરસની કાંપી વિશે કન. ૧૬૩૦ માં દીક્ષા આપાઈ કુસુમનિંબ નામ આપાનેથું તે ગથા ચેચાસામાં વંદનાથું કી રામનિલાલ પાસે ચેચાસંસું રહેલા, તે તેમની પ્રાર્થિયી કંદળા અને પોતાની ઘરી સિંહતિરુ જાન થવાથી તા. ૮-૧૧-૩૨ ના રોજ સાંકુચેણ હોઢી ચેતાના માની પાસે પાઠજ્ઞ જગ્યા નીકલયા. પણ દીક્ષા ગાર્દાં તેમને આપસાના લઈ જાવાથી અટસે ડેરે અટેલે અને તે કાંતિલાલ પોતાની કા જળ પાસે જાવાની પ્રાણ જાતેલી હોલાથી હોરદ તથાથી અને સોપચામાં આવેદ્યે તે બખતે ચેચાસું પૂર્વી નહીં અથેણું હોલા જતો આચાર વિશ્વ સાનદથી કેંકન દોડી આંતી આગસાનાંડી ડેરટગાં પોતાના પુત્ર કાંતિલાલને પ્રાણે મેળવાના એમણે અરજ આપી હતી તે ભરતવિજ્યજી, અને કાંતિલાલના સંસારી જિતાંશી બોગીલાલ. તમા આપ મણું કશ્યાંત કરીની રોતી કશ્યાંતી સુધી દીક્ષા બેનાર તેના સંસારી પતિ. હું ખાંડે ખું કે આટલી જોગાંદું ખસ છે.

આ ભરતવિજ્યજીની તપથ્યાંના હેતુ સામુદ્ધિક કર્મની નિજરી અને પોતાના જાતનાની શાતિ છે. જોગ જાણ્યા છે. આ ઉપરોક્ત ભરતવિજ્યજી જાણ્યા હોય કે ડેમ તે તો જાનિ મહારાજ જાહેર પરંતુ તા. ૧૬-૫-૨૩ ના વીર શાસનમાં “સામુદ્ધિક પાફના પ્રાણન ગાઈ” એ મચાળાના કેખમાં. તરીકી મહારાજ પોતાની કશ્યાંતામાં બીજું ટારણ શૈખી-કાંદી જાણ્યાને છે કે—

“મુનિરાજ કી ભરતવિજ્યજીને આંતી આત્મવેના બનાતું બીજું પણ કારણ હોય રહે. તેંબેઓના સંસારી પુત્ર કાંતિલાલ કે સાંદુ અગ્રસ્થામાં કુસુમવિજ્યજી. હતા તેમણે સાહુદેશ ડેખાયે કાંતિલાલ પણ જીવાલાંગ કરેલા સ્ટેમેન્ટ વિન્ડુ અને તથા ચેદું સ્ટેમેન્ટ વડોદાર રાલયના ન્યાયરની સહેગ સમજ દીક્ષા નિશેધીઓની શી અનુભૂતિ કર્યું હતું. એક સુપ્રથી પિતા કે એમણે પોતાના સંતાતના બાંબેબાના અતિનિક કાંપાણાજ શુભાસથી તેના સરકાર-લોઇ દીક્ષા. આપણી હતી અને પોતે પણ લાધી હતી. તેવા પિતાનો પુત્ર ક્રેમેન્ચે પતિત થાં એથી કુંખ તો થાં, પરંતુ એ ઘરદોડીઓની અનુભૂતિનું દર્શીઓ અનીને પરવિત ધર્મના પ્રતિજ્ઞા મારે દાખલાદ્ય અને તેમણે પોતાના પુત્ર પિતાની શુભેચ્છાને પણ ક્ષાંકિત કરતાં ન રહ્યાના લ્યારે તેના પુષ્ટયાના જિતાને હતું કુંખ અનિર્ણયાં બને છે.”

આ પ્રમાણે કાંતણે હુનિવાને અન્યાં રસ્તે હોરચ માટે જાણુંવામાં આવે છે, પરંતુ ભરતવિજ્યજીનો અને તેમના કંડતોનો અગમાચાલાના સીરી માણસ્કોટની કોઈમાં ડેખો અન્યો છે તે જાણ્યાના જેણ હોલાથી અને આ તપથ્યાં આવદાનો અંતરનો કુંખ દેતું હોય તે લોનો અચાનુ આપણ માટે સીરી માણસ્કોટ ને પીરલંકાથ આપડે તા. ૧૨-૧૧-૩૨ ના રોજ જુબાંથી આપાંના કે સુસાની ક્રીંકાત તેમાં અણ્યાંની કે તે વાયોની આગલ રૂળું હું હું.

“તે હોકાની ચાંગે ( ગળ ) અને પૂર્ણામના જાપે ( ભરતવિજ્ય ) ડારાને ( કાંતિલાલ ) પોતપોતાને તાપે કેવા કેખી અણુંનો આંતી છે, ગણે આંતી કાંતે કે પૂર્ણામના જાપે કેવા સંસારના સંગાંથીના તમામે હુનિવાચારીના વનંદાર હોઢી દીક્ષા છે, જતાં પણ તે ડોંગને લેના પુત્ર તરીકી માની હીન સંખ્યાં પરાપરા. પ્રથળ કરે છે. છોકરાના પૂર્ણામના બાધને આચા જેઠાનક બનાતાનો પદાર્થ અનુભૂતાં હાંડરા અને આ ડારટમાં હાંડર કાંદી વાણીતાનાંદું દાખલ કરતાં અને રૂટ-વાળાં બાંજ આરજ આપણા દીક્ષા પરીં કેવા વેલાંભરેશા પ્રથળો કરે છે, તે એંધી મણે કશ્યુંન અનુભૂતાં જીવન કા જાપ કે, જિવાય સાંદુને પોતાનું પહેલું અને ચોંબું મધાતીત કરીને પોતાનું પહેલું અને ચોંબું મધાતીત કરીને તે જેણે દીક્ષા બેની વંતે લીધિયું તેનો અનુભૂત કરતાં હોય એંધી જેણી જીવા દીક્ષા પરીં કેવા વેલાંભરેશા પ્રથળો કરે છે, તે એંધી મણે કશ્યુંન અનુભૂતાં જીવન કા જાપ કે, જિવાય સાંદુને પોતાનું પહેલું અને ચોંબું મધાતીત કરીને તે જેણે દીક્ષા બેની વંતે લીધિયું તેનો અનુભૂત કરતાં હોય એંધી જેણી જીવા દીક્ષાનીં ક્રીંકાત સ્વરમાં જાણ્યાના પ્રમાણે ધશીજ કાંતે કે એટલે કે તે આ અનુભૂતાં નાન છે. આ લીધીકિત અણ્યાંતાં મને બધીજ જાનિ વિષનું કાંપ છે, પરંતુ દીક્ષા પાર્ટીના આપેનોને કોઠરાને પોતાના પદ્ધતાં કેવા કેવા કરે છે તે માત્ર જાતાનાને અને એને પદ્ધતાં સુધીએનો કાંતે મને ગંભીર સંભાવ છે તે દીક્ષાનાને આ લીધીકિત જાણ્યાની પડે છે.”

આ પ્રમાણે માણસ્કોટે સુશાંકારી કરેલી દીક્ષા ઉપર્થી વાંદુંનો અન્યાં સામુદ્ધિક પાફના પ્રાણન ગાઈ” એ મચાળાના કેખમાં. તરીકી મહારાજ પોતાની કશ્યાંતી કર્મનું કારણ કે નથી કુસુમવિજ્યના સ્ટેમેન્ટનું કારણ, પણ બાંદીની અન્યાં

## ૪ સામાજિક વાયરા

‘શ્રી કેસરીયાણ—સંજદી જાપાયોમાં અવાર નવાર જાયા કરે છે, પરંતુ એ જાણું સંગતું લક્ષે હેઠળ તેમ જાણતું નથી. શાસન સેવાની મૌદી મૌદી બતો કરનારા, શાસન માટે મરીપીઠચાનાં તમચા સેવાના શ્રી કેસરીયાણ માટે ડેન ગોંન છે? શું તેમને કેસરીયાણ બેઠે. રણું લગતું જાગતું નથી? સામુદ્દરિક કર્મના નિવાસનું મારે સોણ સેણ ઉપયાસની જાંચ પુરાણા છે. સોણાયી સમાજારોના વિશ્વાસ અડે જો તે માટે તૈખાર રહે છે. આત્મ નિષ્પિતીની જાહેરત યાં હે. ડેન દીક્ષાના મેંકેટ માટે એ ગણું બની રહે છે. પરંતુ કેસરીયાણ મારે કોઈને આત્મ નિર્ણય કરવાની પૂર્ણ નથી ‘દીક્ષા’—પણ તે જાયે હો યા જોડી, યોગ હો યા અનોય—નિઃની ઘુણમાં સંગત જોખ રામસાગર પાર્ટી જ્યારે કેસરીયાણ પાછા મૈન સેણ છે, ત્યારે શાસન જોને સમાજ માટે તેમને કર્યું જાગતું નથી, એમ જ્યાથ્યા ચિનાન રહેતું નથી અને દીક્ષાના સંખેદ્ધમાં એમનો ઝોંગ અબ્દીર રૂપાંશ સંક્રાંતો હોય તેમ જાનનાને મજજુની કારણે ઉપયિત્તા યાં છે, સેણ ઉપયાસ યાં કે લીલ જાપાણું જાગાની ખરું મહિનાના ઉપયાસ કરેનાર પછ્યા છે. એટલે સેણ ઉપયાસમાં કંઈ આથી જનક જાતનિર્ણય નથી, તેમ તેનાથી કંઈ સોણાયીની મુશ્ણ વાર જાનનાની નથી. સમાજ પાખડીઓથી તદ્દા સાંખ્યાન છે. આજી, હા આજે જે કેસરીયાણ માટે જે આત્મ નિર્ણય જાહીર જાયો હોય, તો તે માટે જાગાની અખૂદી જાગતિના પૂર્ણ આવત કર્યું જાયી નથી કોઈ નીકળે છે।

\* \* \* \*

‘સામુદ્દરિક કર્મની ઉદ્દેશ—કહેવાચ છે કે ત્યારે સામુદ્દરિક કર્મની ઉદ્દેશ યાં છે, ત્યારે સંબંધ, અને શાસન ઉપર જાહેરો આવે છે અને તે અબ્દીર વિદ્યતિ અરી કરે છે, તે અર્થાના નિવાસથી માટે સમસ્ત સંખેદ્ધી જાગાજારી છે. તેથી જાહેરો હું કરવા માટે જાયનીલિક એ જાગાયા છલાંગ છે. રિલાયનો જોખ અનેક જાગાયા જન્યાના પૂરાનાનો મળ્યો રહે છે કે ઉપરોક્ત કર્મના ઉદ્દેશ વાંચે આત્મનીજા ઉપરોક્ત કરવાની આયો છે, પ્રત્યેક જાગતિને ગારી પ્રમાણે

પાંચ મહાનાં પેઢી પહેલા અને પાંચમાં જાતનો અંગ હું વિશેષજ્ઞિક જુગાતુસાર આ જાંમાં નિંદાને પત્ર થયેલા હોવાથી અને જાગતા જાગમાં નરકમાં જવાની શિક્ષાનો વિષ ઉપયાસનાનો હુંનાથી તે પાણોના નિર્ણય કે પ્રકારન કે આત્મકુલ તરીકી આ સેણ ઉપયાસ જોખી કાઢવાનો નિર્ણય કર્યો હેઠળ એમ ચોખ્યે જોખ્યું હોય એનું જાગાય અને છે, કેલાં પાણોના પણાતાપ જાગતી તેમનું હુંય એખું હેઠળ અને કેશાં જાગતિ રહેતી હેઠળ તેથી જાગતાંતિ માટે જાયી તાખાંથી આવદે તો તે માટે ડાનાથી ના જાડી રાખાશ? અધિભાતા હેઠને મારી નાન પ્રાર્થના છે કે ઉપયાસમાં અરતલિજાન. જુને મદ્દ કરે અને દરી પણ જાહીર જોડી કેંક પણ જાતનો જંગ કરવાનો પ્રસંગ ન જોને તેણે તેમને અને તેમની હીકું જાટને સંભતિ જાપે.

એ તપસ્યાની આરાધના કરવી પડી છે. પરંતુ એ અબ્દીર જાકીત રખતે હોંઠ એક વ્યક્તિને ડેન કોષેલ કલિપત જાતન નિર્ણય કરી સેણ ઉપયાસની જાંચ પુરાણાનો કશી લક્ષ નથી. પહેલાં પોતાના ક્રેમેનો ક્ષેત્ર કરવાની પેરવી રૂપી પણીજ સામુદ્દરિક કર્મની જાતિ માટે ને આવ પ્રયત્નો કરવાનો આંગા હોત તો ક્રેમેન કર્મનું ન હતું. આ વાત તો પીજીજ છે. આ ઉપયાસમાં હોંઠ સામુદ્દરિક કર્મના ઉદ્દાની જાતિ ન જાયને પરંતુ ઉપયાસ પાછળ અબ્દીર કરું છે. દીક્ષાના મેંકેટ માટે હોંઠ અનેરો દાચ જેખાય છે. અરી રીતે આવ ઉપયાસો રામપિલજ, સાગરજ કે હાન ચનિને કરવા જોકૃતા હતા. પણ તેમ બન્સું નથી. કરત વિલજ જોને ફિલ્ચાર જાનાવી કેંક જુદીજ રમત રગાઈ છે. સગાજ સાંખ્યાન!

**મુંગાંડ—**પંનાસ મુનિઓ કહિત રિલયનું આગમન મુંગાં તરફ અધ્ય રણું છે. મુંગાં જેણી અધિબેદી નાગરીઓ પંનાસજુનું આગમન જરૂર આચકારદારી નીકળતા, જે તેણે શુદ્ધ બેદા નિવાસ ન હોત તો. પરંતુ વિના ધર્મ સુર્ખિ રૂપિને બેદા અને બેદા અધ્યક્ષ જાગતા અને પદ્ધતા મેદ્દાદી તાલુકા એ માદાના રામસાગરનું લિથિયાર જોનેન છે. તેણે ચારિનીલા છે, આખ્યાતા છે, જિંદા બારી છે, પરંતુ વાચ વાગ્મણી આપી છે. અભિમાન ઇંધી ગજ અને પણ્યીની આગ તેમને સત્તાને છે. શુદ્ધસુદ્ધતા જેમને ગણું પ્રિય છે. આમ એ પોતાની જધીયે કહિતનો વિષ સેવાને બાંધે રામસાગરની સેવા માટે કર્યે જાય છે. એક વખતે મુંગાંને નકની આજું ચીતનારાં પં. કહિત વિલજનું એજ નકની આજુંમાં આવતાને તાપમાં તૈખારીઓ કરી રહ્યા છે. ત્યારે આ સાંકુઝોના વચનની હિસ્ત ડેંલી છે।

**વડોદરા—**જાનેશી રામવિલજ તેમના શિખ સાથે પાદા તરફ લિલાર કરી ગયા છે. અંગાયા છે કે રેનેમી માનસીંદ શિખતિ સારી નથી. વડોદરા રેટ પાનાસલાંના હીકું મેંકું પદ્ધત વચનાં વચનાં તેમની પ્રયત્નિને સખત કર્યો છે. અન્યાય, કુતુસિત આખચન્દ્ય અને સામુદ્દરાના દંનના આખતા કશાંસુધી નમેદ હું જેમના જીદુના આખત આખી દમ્હી જાહેર કર્યું હું કે ચાચના હેઠળને સંભતિ જાપે.

**પાલનપુર—**આચાર્યાની વલભસરુનું આતુર્યાંખ બચે નકી સયાતું જાગુનાં ભાવનાં અન્વિત કે. જાંસ મદ્રિષ પ્રત્યેક કર્મનું આ કાતીવિલજાણ મધુરાને મગગા માટે પાટાચ પ્રમારસે વચનાં જોકાં મહિનો ત્વાં શિખદતા કરી હુંન: પાલનપુર આપણો, જે કે સુનિશ્ચ પદ્ધતા પદ્ધતા પાટાચ આતુર્યાંખ કરવાના હતા, પરંતુ એમ સંખ્યાના છે કે ક્રેમ માજુસે એવો નિશ્ચાલ કર્યો છે કે દશાની દશાનો અર્થ ચાર તો બલે ચાચ એવું સુર્ખિનો ચાચુમાંસ હેઠાનો નથી. એવી ચાચાની નાનાં પદ્ધતિની જાતાં આખતાં આખીતિ ન આપ તે માટે તેમોની પાટાચમાં ચાચુમાંસ કરવાનું ગારી ચાચું છે.

## हिन्दी विभाग.

### अपनी समाजका पुनरुत्थान केसे हो?

—शेष अचलसिंहजी।

[ गतांक से चालू ]

( १ ) बाल-विवाह, बुद्ध-विवाह और अनमेल-विवाह को रोकना चाहिये ।

( २ ) पर्दा जो स्वास्थ्य, पुरुषार्थी, और गृहस्थ जीवन के बाल्य महा-हानिकारक है उसका सर्वथा बहिष्कार होना चाहिये ।

( ३ ) नुकता को कर्तव्य बन्द करना और विवाह की वेश्वराम फिजूल सर्वियों को दूर करना चाहिये ।

( ४ ) जेवर, रेशमी बज़ार और हाथदौत आदी की बनी हुई अपवित्र चीजों में जो फिजूल सचं होता है उसे रोकना चाहिये ।

( ५ ) कुछ सोभी और अज्ञानी पुरुष लड़कियों पर रुपया लेते हैं और कुछ घनी पुरुष लड़कों पर रुपया माँगते हैं, उसे रोकना चाहिये ।

( ६ ) वैश्यानुत्थ आदि बुरी रिकाऊं बन्द करना चाहिये ।

#### स्वदेशी

देश और समाज के सामने बेकारी की समस्या दिन पर दिन बढ़ती जा रही है। हजारों युवक कोलेजों और स्कूलों से हिन्दियों लेकर बेकार फिर रहे हैं, पर उनके लिये कोई काम नहीं है। अधिकांश व्यवसायों के लोगों की आज सबसे बड़ी शिकायत है कि उनके व्यवसायमें अब शिखिलता बढ़ती जा रही है, देश की सम्पत्ति का बदि छास हो तो वहाँ का कोई भी अज्ञ पल्लूल नहीं सकता। शरीर का बदि कोई भी अज्ञ सबल बनना चाहिये है तो उसके लिये यह आवश्यक है कि शरीर की केन्द्रीय शक्तियों बढ़ती जायें। यदि शरीर में फैफड़ा कमजोर है तो खोर खीर शरीर के सभी अज्ञ रक्तहीन होकर निर्जीव हो जायेंगे। सोर देश इस बात का अनुभव करते हैं और वे अपने देश की सम्पत्ति बढ़ाने में लगे हुये हैं। आज इंग्लैण्ड, अमेरिका, रूस सभी देशों में स्वदेशी का युग है। रूस जैसा अन्तर्राष्ट्रीय-बाद को मानने वाला देश भी पश्चवर्षीय योजना द्वारा देश की उत्पादक शक्ति को बढ़ाने में लगा हुआ है। अमेरिका का प्रेसिडेंट रूबरेल और इंग्लैण्ड का मुख्यमन्त्री ओफ वेल्स भी अपनी अपनी जातियों को स्वदेशी का सन्देश दे रहे हैं। इस स्वदेशी के युग में प्रत्येक भारतवासी का भी कर्तव्य है कि यह सोचे कि उसे क्या करना चाहिये? जिस देश में चार करोड़ से भी अधिक लोगों को एक ही बार

भोजन मिलता हो वह देश किस तरह प्रति वर्ष करोड़ों रुपया बिदेशी चीजें खरीद कर बाहर फेंक सकता है? इस कारण प्रत्येक भारतवासी का कर्तव्य है कि उनको अपने दीन और हीन भाइयों की अवस्था पर ध्यान रखते हुये स्वदेशी वल्लुओं का ही इस्तेमाल करना चाहिये और मुख्यता जैनियों का धारण उनका धर्म एकेन्द्री से लेकर पंचेन्द्री जीव तक दिया पालने का है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि मेरे नवयुवक स्वयम् स्वदेशी वस्तु का प्रयोग करेंगे और अन्य जनता को करावेंगे।

#### शारीरिक शक्ति

जब जब मैं जैन जाति के युवकों की शारीरिक शिथिति को देखता हूँ तो मेरे दिल को बड़ा घका लगता है। जबकी उनके मस्तिष्क में विचार होने चाहिये, जबकी उनके रगों में सून का जोश होना चाहिये, जब की उनके चहरे पर चमक और हाथों में कार्य शक्ति होनी चाहिये तब हम उन्हें क्या पाते हैं? उनके शरीर का पूर्ण-विकाश होने भी नहीं पाता कि उनका शरीर शिथिल होने लगता है, चहरे पर हवाइ उड़ने लगती है और शीघ्रही वे केवल ढाक्टरों और वैद्यों के मतलब के हो जाते हैं। इसका कारण क्या है? समाज में फैली हुई सामाजिक कुरीतियों हमारा रहन-सहन का गलत तरीका और व्यायाम की कमी। मैं नवयुवकों से जोर से अपील करता हूँ कि वे शारीरिक आदायकता की अव अवहेलना न करें और शक्ति की उपासना प्रारम्भ करें। नियमित व्यायाम करना हर सफलता की कुलजो है। इस युग में निर्बल होना सब पापों की जड़ है। निर्बल मनुष्य किसी धर्म का सचा पालन नहीं कर सकता।

#### साम्प्रदायिक बन्धनों दो छोड़ो?

यह युग संगठन का युग है। सब धर्म और जातियों साम्प्रदायिक मत-मेद को छोड़कर विस्तीर्ण क्षेत्र में जा रही हैं। उस समय भी जैन-जाति क्या पारत्परिक मत-मेद और मनोमालिन्य में ही लगी रहेगी? क्या यह सम्भव नहीं है कि हम सम्प्रदाय के तंग दायरों को छोड़ कर महावीर भगवान् के एक झंडे के नीचे आकर स्वेही जायें। अब तो जैन-जाति एक भाव, एक इक्कि, एक प्रवाह में संयुक्त करते की आवश्यकता है। यह अडे हर्ष की बात है कि जैन-जाति के युवकों में यह सद-भावना उत्पन्न हो गई है और मुझे विश्वास है कि अब वह समय शीघ्र ही आने वाला है जब हम जैन-धर्म के अनुशासियों को एक संगठन में जैन सिद्धान्तों का प्रचार करते हुये देखेंगे।